CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ २२/५१

अनूपरागविलासः 1

आम्नाय-ग्रन्थालय,
रत्ननिधि, करौली
वाराणसी-5

थालय
वाराणसी-५
२/५१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अ:2/51
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रिय सौ. रजनी ताई व शिरीष भाई यांस,
प्रेमपूर्वक भेट,

वसुंधरा कोमकाळी
२४-१०-९३

अनूपरागविलास : १

अ : 2151
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

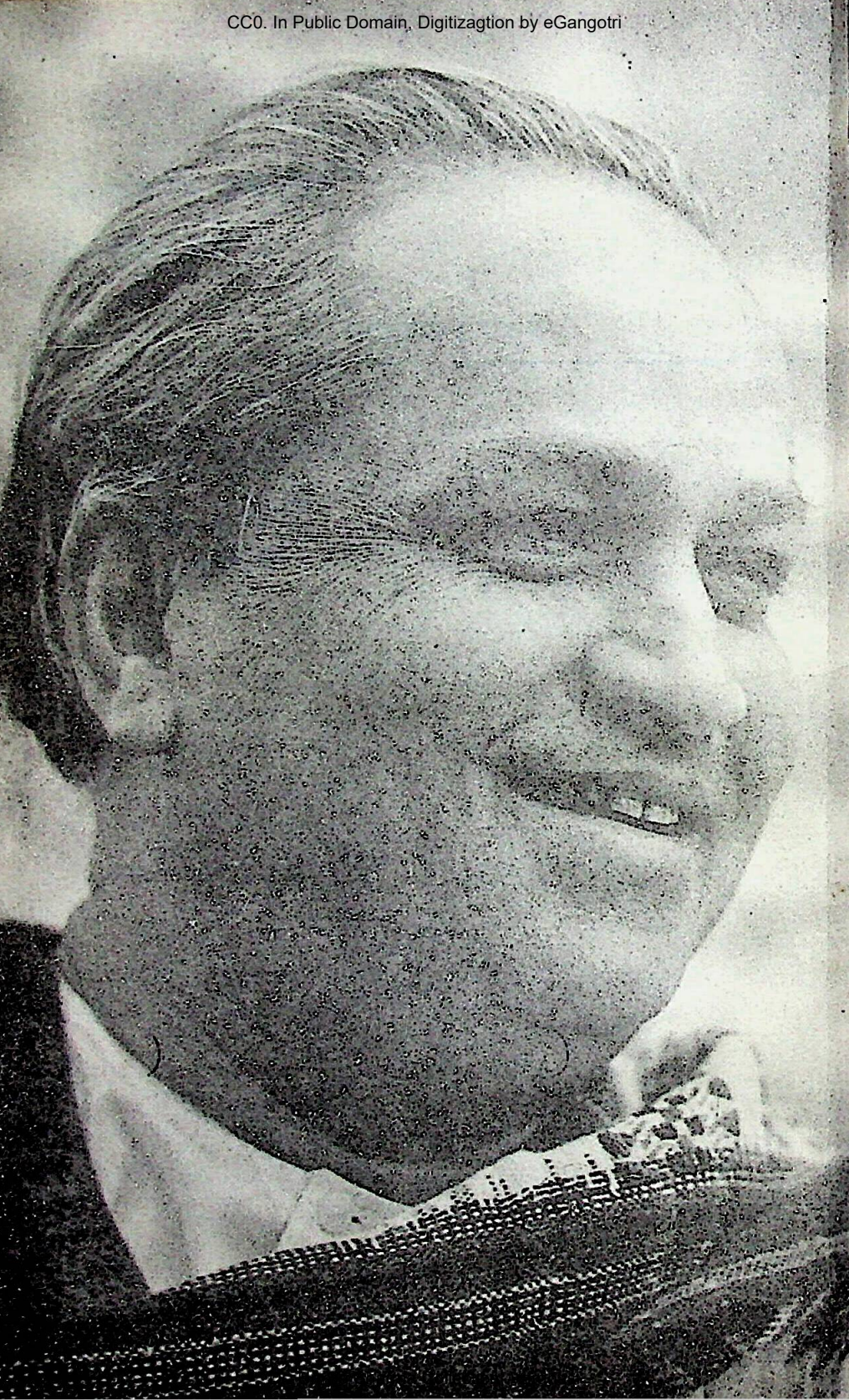

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अनूपरागविलास : १

कुमार गंधर्व

कुमार गंधर्व संगीत अकादमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौली
वाराणसी-5

पहला संस्करण : मई १९६५
दूसरा संस्करण : ३ जुलाई १९९३, गुरुपौर्णिमा १९१५

© १९९३, वसुंधरा कोमकाळी

आवरण : विनय जैन
आवरण चित्र : आम्र वस्त्र कोष
छायाचित्र : भालू मोंढे

कीमत सौ रुपये

प्रकाशक
वसुंधरा कोमकाळी
प्रबन्धन्यासी
कुमार गंधर्व संगीत अकादमी
'भानुकुल', माताजी का रस्ता
देवास, मध्य प्रदेश

मुद्रक
प्र० पु० भागवत
मौज प्रिंटिंग ब्यूरो
खटाववाडी, गिरगाम
बम्बई ४०० ००४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

भानुमती को....

जिसने मेरे हर विचार, प्रत्येक कृति को परखा और
अन्य किसी के पास जाकर परख करवाने की
आवश्यकता मुझे कभी भी प्रतीत नहीं होने दी...
जिसने मेरे विचारों को अपना बना लिया तथा स्वयं के
विचारों से मुझमें साहस निर्माण कर मेरे विचारों को
आकारबद्ध किया...जिसका स्मरण किये बिना मैं
कभी भी कुछ नहीं कर सकता...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी बात

इस पुस्तक के सम्बन्ध में प्रारम्भ से लेकर अब तक मुझे कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई। राग बनाये नहीं जाते, राग बन जाते हैं। बंदिशें अनायास खिलती जाती हैं। लेकिन अब, जब मैं अपनी बात कहने की कोशिश कर रहा हूँ, तो समझ नहीं पडता कि क्या कहूँ, कैसे कहूँ?

'अनूपरागविलास' को प्रस्तुत रूप प्रदान करने में जिन लोगों ने सहयोग प्रदान किया है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना उचित ही है। काश! वे इतने निकट के न होते; क्योंकि स्थापित शिष्टाचार का पालन पारस्परिक आत्मीयता की मधुरता के सन्दर्भ में कुछ कृत्रिम प्रतीत होता है, और कृत्रिमता का मेल आत्मीयता के साथ नहीं बैठता।

मेरे बुजुर्ग आदरणीय श्री वामनरावजी देशपांडे ने मेरा निवेदन स्वीकारकर अत्यंत परिश्रमपूर्वक जो प्रदीर्घ भूमिका लिखी है उसके लिये उन्हें कैसे धन्यवाद दूँ, जब कि मैं स्वयं को उनके आशीर्वाद का अधिकारी मानता हूँ।

श्री श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भागवत तथा उनकी संस्था 'मौज प्रकाशन गृह' मराठी प्रकाशन व्यवसाय में पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुकी है। 'अनूपरागविलास' लेकर वे हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में पदार्पण कर रहे हैं। साथ ही यह उनका प्रथम 'संगीत' प्रकाशन है। इस प्रकार उन्होंने मुझे दुहरा सम्मान प्रदान किया है। मैं कृतज्ञ हूँ।

इन दो के अलावा मेरे प्रिय मित्र श्री राहुल बारपुते जिन्होंने मराठी का हिन्दी में अनुवाद कर कर्तव्य निभाया है, उसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद तो नहीं देता, क्योंकि वे मेरे बहुत निजी हैं मगर वे ऐसे ही कर्तव्य निभाते रहें यही इच्छा।

दिसम्बर १९६४
भानुकुल
माताजी का रास्ता
देवास (म. प्र.)

कुमार गंधर्व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अनुक्रम

	पृष्ठ
मेरी बात	७
भूमिका	९
स्वरांकन संकेतों का परिचय	३७
तालों का परिचय	३९
राग और बंदिशे	
पारम्परिक राग	
तोडी	
देवो मोहे	१
पूछो काय मोसे	२
बिलासखानी	
नयन में जल	३
अहीरभैरव	
कैसे मनालूँ रे	४
ललित	
ये मेरो मन	६
गुणकरी	
आव म्हारा मनबसियारे	७
अल्हैयाबिलावल	
लैला जाज्यो	८
जीवनपुरी	
श्याम बजा	९
अरि येरी जागरी	११
तदानि तारे, तारे	१२
राग और बंदिशे	पृष्ठ
देशकार	
आयो मिल्वे	१३
जा जारे भौंरा	१४
देशी	
आपके बुलावा	१५
येरी आली मोहे	१६
भैरवी	
नाद धुन गान	१७
गौडसारंग	
पिया बसेरा	१८
शुद्धसारंग	
नैना न माने	१९
मधमाधसारंग	
रुखवा तले आया	२०
भीमपलासी	
नाद सो जानुरे	२१
इस जगमें तुम	२३
सब सुर साधे	२४
आयो रंग फाग	२५
जावां हूं देसा	२६
दीं तन देरेना	२७
धानी	
प्यारो लागो म्हने	२९
आई रुत आई	३०
धनाश्री	
आरिया बीरा म्हारा	३१
कल्याण	
देवो दान मोहे	३२
शिव शिव कल्याण करी	३३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग और बंदिशे	पृष्ठ
पीयरवा आवो तुम	३५
यार वे ना	३६
मुख तेरो कारो	३७
मधुवंती	
मैं आऊं तोरे	३८
मारवा	
धाम परे रे	३९
पूरियाधनाश्री	
वलगई जोत	४१
कहाँ चला हो रे	४३
श्री	
संजा कहे जाय	४४
करन दे रे	४५
गौरी	
काहे तोरा मुख	४६
घूंघट खोलो ना	४७
चित चंचल मोरा	४८
भूप	
ध्यान अब दीज्यो	४९
नींद न आये	५०
चैतीभूप	
निमोरी का मौरा	५१
बिहाग	
करत लाडी लाडी	५२
ना छेडो ना छेडो	५३
सावनी	
दरस बिन निरस	५४
कामोद	
ऐसन कैसन	५५
बिन जाना सो	५६

राग और बंदिशे	पृष्ठ
हमीर	
अजब दुनिया जारिया	५८
जारे जारे रंगरेज्या	५९
नंद	
राजन अब तो	६०
नाट	
सपत सुर गावे	६१
पिहर न मन	६२
छायानट	
नहीं आना तुम्हें	६३
बागेश्री	
टेसुल बन फुले	६४
पार नहीं हो	६५
फेर आई मौरा	६६
तान् देरेना तदारे	६७
बहार	
रस वरसायो रे	६९
ऐसो कैसो आयो	७१
भंवर मन गेल्यो	७२
दरबारी कानडा	
सुंदर मुख तेरो	७३
गोरी तोरे नैना	७५
अडाणा	
सुन जियरा तरसे	७६
कंचन पिचकारी	७७
कानडा	
मेहल मंदरमांही रे	७९
तान कपतान	८०
नायकीकानडा	
आये मंदरवा	८२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग और बंदिशे	पृष्ठ
जैजैवंती	
सुनलै मना मान	८३
बात तू न करो	८४
बहोत ना बोलो	८५
आव बनजारा रे	८६
ये लायी सेरा	८७
शंकरा	
अनत जानू न जानू	८८
सुंदर नयन तोरे	९०
सिर पै धरी गंग	९१
आवो रिझावो रिझावो	९२
शुद्धकल्याण	
ये मोरा रे मोरा	९३
केदार	
बैठी हूँ अकेली	९४
छैला तू अइं	९५
मुख दिखादे मोहेरी	९६
गौडमल्हार	
न बताती तू	९७
घन गरजे बरखा	९८
मियामल्हार	
कारे मेघा बरसत	९९
जाज्योरे बदरवा	१०१
मालकौंस	
काहे री धन	१०२
माई री मैं	१०३
आनंद मना	१०४
छब तेरी छब तेरी	१०५
फूल बेदाग ये बन	१०७
कौशी	
सीसेरी सेरा बंधले	१०८

राग और बंदिशे	पृष्ठ
चंद्रकौंस	
वेणुनाद दसोदिस गयी	१०९
बसंत	
सपने में मिलती तोहे	११०
रंग केसरिया सिर पागा	१११
परज	
ना करोजी मोसंग रार	११२
सोहनी	
रंग ना डारो श्यामजी	११३
श्रीकल्याण	
देखो रे उत	११४
गौरीबसंत	
आज पेरीले गोरी	११५
धनबसंती	
दीपकी ज्योत जरे	११६
कामोदवंती	
ये तो मानलेरी	११७
दुगकिदार	
लादले लदाले	११८
केदारनंदा	
ला दे बीरा म्हाने	११९
कौशीकानडा	
मुख आ दरदारे	१२०
कोमल बागेश्री	
आज दिया बरे	१२१
सोहनीभटियार	
मारूजी भूलो ना	१२२
पटमंजरी	
सूझत नाहिं गान	१२४
सजल नैना काहे	१२६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग और बंदिशे	पृष्ठ
पटमंजरी (भटियार अंग)	
सब रस एक भयो	१२७
याद आयी री जागी	१२९
देस	
आ राजाजी घरे	१३०
यला यला याल यला	१३१
झिंझोटी	
थाकी रे मैं पिया	१३३
दानी तदानी दानी	१३५
मिश्रगारा	
देरेना दारे, तदारे	१३७
मिश्रकाफी	
तना दीम् तना देरेना	१३९
मिश्रबिहाग	
यला याल यला	१४१
झिंझोटीमिश्रवंती	
तना तना दीम् तना	१४२
दुर्गा	
तान्ना देरेना दानी	१४३
धुन उगम राग	
सहेलीतोडी	
काहे रे जगावां	१४९
चंदासा मुख बनडारा	१५०
भवमतभैरव	
कंथारे, जानो जानो	१५४

राग और बंदिशे	पृष्ठ
बीहड़भैरव	
येहोरे श्याम	१५७
बना बनि आयो मेलो	१५८
मधसुरजा	
बचाले मोरी मां	१६२
निंदियारी	
आजारे आजा, पिया	१६७
संजारी	
संजा सुन लेहोरी	१७०
रतियाँ डरावन	१७२
मालवती	
चलारे चला जारे	१७५
मंगल दिन आज	१७६
मघवा	
मोर लाई रे लाई	१७९
सावन झर आयो	१८०
लगनगंधार	
सुध ना रही मोहे	१८३
बाजे ले मोरा	१८४
राही	
आजारे कंथा	१८७
अहिमोहिनी	
अंखिया नी फेरो	१९०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

भूमिका

मेरे तरुण गायक मित्र श्री शिवपुत्र कोमकाली ऊर्फ श्री कुमार गंधर्व ने स्वयं की बंदिशों के प्रस्तुत संग्रह की भूमिका लिखने का कार्य मुझे सौंपकर मेरा सम्मान किया है। 'संगीतसृष्टि के प्रश्नचिन्ह' कहकर उनका सार्थ वर्णन गोविन्दराव टेम्बे पच्चीस वर्ष पूर्व ही कर चुके हैं। अन्य लोगों ने उनका उल्लेख संगीतसृष्टि के उद्गारचिन्ह कहकर भी किया है। एवंगुणविशिष्ट कुमारजी ने क्या सोचकर यह काम मुझे सौंपा है यह भी एक प्रश्न ही है। शायद अपनी पीढ़ी से पहले की पीढ़ी का एक अभ्यासक अपनी कृति के बारे में क्या सोचता है इसे वे जानना चाहते हों। बहरहाल सम्मान बहुत बड़ा है। लेकिन साथ ही जो उत्तरदायित्व आ पड़ा है वह भी उतना ही बड़ा है। क्योंकि इस संग्रह को लेकर संगीत-सम्बन्धी बहुतेरे भारी प्रश्न उठते हैं। उन सबकी चर्चा करना आसान नहीं है। फिर भी यथाशक्ति कोशिश तो करनी ही होगी।

आजतक बंदिशों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। बल्कि, संगीतविषयक वाङ्मय में इस प्रकार के गीत-संग्रहों की ही बहुतायत दिखाई पड़ती है। (मराठी के ही बारे में कहा जाय तो) स्वर्गीय पंडित भातखंडे एवं स्वर्गीय पंडित विष्णु दिगम्बर से लेकर विद्यमान पं० मिराशीबुआ, पं० विनायकराव पटवर्धन, श्री मास्टर कृष्णराव, प्रा० बा० र० देवधर, पं० रातंजनकर आदि अनेक मान्यवर कलाकारों ने अपने अपने संग्रह प्रकाशित कर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। और संगीतक्षेत्र में स्वर्गीय पं० भातखंडे क पश्चात् विवेचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक वाङ्मय का कितना ही अभाव क्यों न रहा हो पर बंदिशों के संग्रह की कोई कमी नज़र नहीं आती। प्रश्न पैदा हो सकता है कि ऐसे संग्रहों की इतनी विपुलता होते हुए यह एक और संग्रह क्यों?

प्रश्न स्वाभाविक है और उसका उत्तर भी उतना ही आसान है। वह यह है कि अब तक के संग्रह मुख्यतया 'संकलनात्मक' थे, जब कि प्रस्तुत संग्रह 'सृजनात्मक' है, आमूलाग्र 'नव-निर्मित' है। इसमें कुल मिलाकर १३६ बंदिशें हैं। जो सभी 'बंदिश' की संज्ञा की अधिकारिणी हैं। इनमें से १०७ बंदिशें ५७ पुराने रागों में हैं और १७ बंदिशें कुमारजी द्वारा स्वयं बनाये गये ११ बिलकुल नये रागों में हैं। इसके अलावा पुराने ही दो या अधिक रागों को मिलाकर बनाये गये १२ मिश्र राग हैं, जिनकी बंदिशें भी उन्हीं की बनाई हुई हैं। इस प्रकार इस संग्रह का सामान्य रूप है— कुछ पुराने राग पर बंदिशें नई और कुछ राग नये एवं बंदिशें भी नई। कम-से-कम मेरी जानकारी में तो इतने व्यापक पैमाने पर किया गया प्रयास दूसरा नहीं है।

इस प्रकार का प्रयास एकदम नया हो ऐसी बात नहीं। लेकिन ऐसे प्रयासों का इतिहास निश्चय ही दुखभरा है। कुछ लोग नये राग बनाने पर तुल गये और नये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागों को 'महामाया', 'माँ भवानी' जैसे नाम भी रख देखे। यों इन्हें अल्पजीवी सराहना भी मिली पर बात कुछ बनी नहीं। कुछ लोगों ने पुराने रागों में नई 'बंदिशें' बांधने की कोशिशें कीं। लेकिन खुद बांधनेवालों ने ही इन्हें महफ़िलों में गाना छोड़ दिया। कुछ लोगों ने पुरानी बंदिशों के संग्रहों में अपनी नई बंदिशों को बीच बीच में रोपने का प्रयास किया पर वे जड़ न पकड़ सकीं। कुछ चीजों को कलाकारों ने गाकर आ जमाया भी। लेकिन उनके सर्वश्रेष्ठ शागिर्दों के द्वारा भी ऐसी चीजें कभी गाकर पेश नहीं की गईं। कुछ लोगों की बंदिशें तो काफ़ी थीं, पर उन्हें महफ़िल में प्रस्तुत करनेवाले शिष्य ही नहीं मिले। संक्षेप में, किसी में क्षमता नहीं थी, किसी में आत्मविश्वास का अभाव था तो किसी को शिष्य ही प्राप्त न हो सके—नव निर्माण की बस यही कहानी है। निश्चय ही उक्त सामान्य स्थिति के कुछ सम्माननीय अपवाद हैं। मरहूम अल्लादिया खाँ, फैयाज़ खाँ, विलायत खाँ आग्रेवाले आदि की कई खूबसूरत बंदिशें आज भी गाई जाती हैं। इसी प्रकार विद्यमान कलाकारों में मास्टर कृष्णराव, श्री जगन्नाथबुआ पुरोहित तथा पं० रातंजनकर की बंदिशें बहुत ही लोकप्रिय सिद्ध हो चुकी हैं। ये बंदिशें इन कलाकारों के द्वारा अपने अपने शिष्यों को सिखलाई भी गई हैं और ये शिष्य अपने शिष्यों को यही बंदिशें आज भी सिखा रहे हैं। सब की रचनायें मन को छू लेनेवाली बन पड़ी हैं और उनका प्रभाव निश्चय ही उल्लेखनीय है। ये कलाकार प्रस्तुत विषय नहीं हैं फिर भी यहाँ उनका सादर उल्लेख न्यायोचित ही होगा।

इस सारी आलोचना का मतलब यह नहीं कि प्रत्येक कलाकार के लिये नई बंदिशें बांधना या नये राग बनाना जरूरी है। एक कलाकार के नाते, एक सफल महफ़िल गायक के नाते यह अनावश्यक ही है। हर महान् कलाकार के द्वारा नये राग अथवा नई बंदिशें बांधी गई थीं इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है! यही नहीं बल्कि उनके पास पुरानी खानदानी बंदिशों का इतना विशाल संग्रह था कि नई चीजें अथवा राग बनाने की आवश्यकता उन्हें प्रतीत ही नहीं हुई।

पुरानी खानदानी बंदिशें एकत्रित करने, उनके आकार-उकार निर्धारित करने, उनकी सरगम निश्चित करने में जिन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी खपा दी तथा रागों का भी कुछ वर्गीकरण किया उन पंडित भातखंडे का स्मरण यहाँ अवश्य ही करना होगा। उसी प्रकार सौ दो सौ वर्ष पूर्व बांधी गई बंदिशों के, जो कि आज भी गाई जाती हैं, रचयिता सदारंग, अदारंग, मनरंग, हररंग आदि श्रेष्ठ स्वरकारों का भी पुण्य स्मरण बनाये रखना आवश्यक है। और यह भी नहीं भूला जा सकता कि जिन बंदिशों को आज हम 'पुरानी', 'परंपरागत' कहते हैं वे अपने अपने समय में नवनिर्मित ही थीं।

पंडित भातखंडे आदि संग्राहकों ने इतना प्रचंड कार्य किया है फिर भी उनके ग्रन्थों में पहले के संगीतज्ञों द्वारा बांधी गई असली बंदिशें कितनी हैं, स्वरकारों द्वारा रची गई स्वरावलियों की सच्चाई पं० भातखंडे तक पहुँचते पहुँचते किस मात्रा में बची रही, बंदिशों के पाठ में कितने अपभ्रंश घुस आये हैं, आदि महत्त्वपूर्ण प्रश्न अनिर्णीत ही रह जाते हैं। मतलब यह कि सौ दो सौ वर्षों की अवधि में उस जमाने की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवनिर्मित बंदिशों के स्वरूप में आमूलाग्र परिवर्तन हो गया हो ऐसी भी संभावनायें हैं। कुमारजी के प्रस्तुत संग्रह के बारे में इस प्रकार के किसी भी संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। उनका सारा सृजन उनका है, उसे लिपिबद्ध भी स्वयं उन्होंने ही किया है और स्वरावलियाँ भी उन्हीं की उपज हैं, इसलिये उसमें भ्रष्टाचार की संभावनायें हैं ही नहीं। वह बिलकुल तरोताज़ा है।

किन्तु अधिकांश नवनिर्माण के साथ उसके बचपन की व्यथायें भी होती हैं। उनमें से एक महत्त्वपूर्ण व्यथा है—सब नये राग व नई बंदिशें महफ़िल के मैदान में टिकी न रहें। कई कृतियाँ शैशव में ही मिट जाती हैं, क्योंकि वे महफ़िल के धर्मकाँटे पर खरी साबित नहीं होती। और इस बारे में कुमारजी की सफलता सचमुच ही प्रभावशाली है। इस संग्रह की हर बंदिश तथा प्रत्येक राग को वे अपनी अनेकानेक महफ़िलों में कई बार गाकर परख चुके हैं। यही नहीं, अपनी महफ़िल में पुरानी बंदिशों के बजाय खुद के द्वारा बांधी गई बंदिशें गाकर प्रस्तुत करने का उन्हें शौक है। और प्रस्तुत संग्रह की प्रत्येक रचना यशस्विता की उक्त कसौटी पर खरी उतरने के पश्चात् ही इस संग्रह में स्थान पा सकी है।

यहाँ एक बुनियादी प्रश्न उपस्थित होता है—संगीत में नवनिर्माण किसे कहेंगे? कुमारजी के सृजन के सन्दर्भ में इसका विचार जरूरी है। कहा जाता है कि जब कोई गायक महफ़िल में गाता है तो वह नवनिर्माण ही होता है। यही नहीं, पश्चिमी संगीत और भारतीय संगीत का भेद दर्शाते हुए हमारा संगीत उत्स्फूर्त होता है जब पश्चिमी संगीत वैसा नहीं होता, मतलब किसी रचयिता द्वारा वह पहले से ही निर्धारित होता है, इस विशिष्टता पर उँगली रक्खी जाती है। अभी पिछले अगस्त (१९६४) में एडिंबरो में सम्पन्न संगीत परिषद् में भी पश्चिमी संगीतकारों ने भारतीय संगीत की जो सराहना की सो विशेषतया उसकी उत्स्फूर्तता की ही। और आज भी हमारे संगीत में 'हार्मनी' को अपनाने से कहीं हमारी यह महत्त्वपूर्ण विशिष्टता खो तो नहीं जाएगी यही आशंका सब को है।

यह सब सही हो तो भी यह निर्माण का एक प्रकार है। नई बंदिशें तथा नये रागों का निर्माण यह एक अन्य प्रकार है। लेकिन जिन्होंने गायकी की पुरानी पगडंडियों या राजमार्गों से ही इन्कार कर नई राह बनाई और उसे राजमार्ग की प्रतिष्ठा प्राप्त करवा दी उन्होंने भी नवनिर्माण ही किया यह स्वीकार किया जाना चाहिये। खाँसाहब अब्दुल करीम खाँ या खाँसाहब अल्लादिया खाँ ने स्वयं की स्वतंत्र गायकी का निर्माण किया। उस गायकी को उन्होंने अपने शिष्यों में संक्रमित किया और इन शिष्यों ने फिर अपने शिष्यों को इसी की शिक्षा दी। ऐसे इन खाँसाहब-द्वय की यह अपूर्व सफलता नवनिर्माण के खाते में मांड कर उन्हें बहुत बडे सम्मान का स्थान प्रदान करना होगा।

व्यासपीठ पर बैठकर गानेवाला हर गायक, कहा जाता है कि, नवनिर्माण ही करता है। लेकिन ऐसा गायक नवनिर्माण करता है माने क्या करता है? वह अपने गुरुजनों अथवा अन्य गायकों के कण्ठ से निकली हुई और 'ईंटों' अर्थात् 'स्वरावलियों'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को स्मृतिबद्ध कर लेता है और स्वयं के गले में उतार लेता है। इस प्रकार अनेक स्वर-समूहों को वह निरंतर एकत्रित करता चलता है जिनमें छोटे-बड़े आकार एवं उच्चारण की ईंटें अपने पास तैयार रखता है। फिर जब वह व्यासपीठ पर बैठता है तो पहले से ही तैयार ईंटों को आवश्यकतानुसार छाँट-तराश कर किसी योजना के अनुसार रखता जाता है। यह सारी ईंटें अधिकांशतया उसकी बनाई हुई नहीं होतीं। उसका काम तो सिर्फ यही होता है कि विभिन्न आकार-प्रकार के इन टुकड़ों को लेकर, जहाँ उचित लगे कुछ काट-छाँटकर, उन्हें जोडते चलना। मतलब ईंटें तो पुरानी ही होती हैं, परंपरागत या दूसरों से ली गई। गायक तो सिर्फ यही देखता है कि उन्हें किस प्रकार रचा जाय, बशर्ते कि उसमें स्वयं का कुछ योजना-कौशल हो। ऐसी कृति को 'नवनिर्मित' की अपेक्षा केवल 'निर्मित' कहने की इच्छा होती है। लेकिन नई गायकी निर्माण करने-वाला कलाकार ये ईंटें तक खुद ही बनाता है। अब तक इस्तेमाल की जानेवाली अधिकांश ईंटों को वह त्याग देता है। और नये आकार, नई घड़ाई, नई सामग्री की अलग-अलग घनत्ववाली, भिन्न भिन्न नादों एवं ध्वनियों से युक्त तथा अलग रंग की, स्वयं के लक्ष्य के अनुरूप ईंटें वह स्वयं बना लेता है। ऐसी कृतियों को 'नवनिर्मित' कहना सार्थ होगा। कुमारजी के बारे में उल्लेखनीय बात है कि यह ईंटें उन्होंने स्वयं बनाईं, अपने मन के मुताबिक स्वयं घडवा लीं और उनका उपयोग भी खुले हाथों किया। मतलब यही कि कुमारजी के नवनिर्माण का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उन्होंने नये राग बनाये, नई बंदिशें बांधीं, यही नहीं, नवीन गायकी निर्माण कर दी। दर असल यह क्रम यदि उलट दिया जाये तो अधिक सुसूत्रताबद्ध होगा। क्योंकि उनके नये रागों तथा नई बंदिशों का जन्म, मेरी राय में, उनकी नई गायकी से हुआ है। (नये रागों अथवा नई बंदिशों का जन्म इसी प्रकार होता है सो नहीं कहा जा सकता क्योंकि कुछ ख्यातनाम गायकों के द्वारा बनाये गये नये राग या नई बंदिशों का जन्म उनकी पुरानी गायकी से हुआ है।) इसके अलावा पुराने रागों में भी उन्होंने कुछ रद्दोबदल किये हैं, जिनका विचार आगे चलकर करेंगे। पर इस सबका कुल मिलाकर एक ही अर्थ है। और वह यह है कि कुमारजी की कलात्मक दृष्टि ही अलग है, मान्यता ही नई है।

एक अन्य दृष्टिकोण से भी कुमारजी के कृतित्व का परिशीलन जरूरी है। अब तक के कलाकारों द्वारा बंदिशों के लिये अधिकांश में परंपरागत कविताओं का उपयोग किया गया। अल्लादिया खाँ साहब, फैय्याज़ खाँ साहब, विलायत खाँ साहब आदि ने भी नई कवितायें रचीं पर वे पुस्तक-रूप में उपलब्ध नहीं हैं। पर कुमारजी की बंदिशों की काव्यरचना भी उन्हीं की है।

कुमारजी के द्वारा जो कविता रची गई है वह निश्चय ही काव्य के रूप में नहीं है। यही नहीं, उसे काव्य के रूप में पढ़ा जाये, ऐसी अपेक्षा भी वे नहीं रखते। संगीत के हेतु रची गई कविता का काव्यांश या उसका शब्दार्थ एक आनुषंगिक, बिलकुल गौण हिस्सा होता है। महत्त्व की बात होती है उसकी स्वर-रचना। बंदिश की तारीफ उसकी काव्यात्मकता के लिये, सामान्यतया, नहीं होती, उसकी स्वर-रचना के लिये ही होती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। और स्वरों की यह रचना सुन्दर दिखाई दे, आकर्षक हो, इसलिये आवश्यक होता है कि उसके शब्दों के स्वर-व्यंजनों की उच्चारणक्षमता भी उसी प्रकार सक्षम तथा प्रभावशाली हो। किस स्वर पर मुकाम है, किस स्वर को कितना खींचना है, किस पर लय के आन्दोलन हैं, किस स्वर पर कितना ज़ोरदार या नाज़ुक आघात करना है इस दृष्टिकोण से उस कविता के शब्दों की अर्थात् स्वर-व्यंजनों की तथा उनके 'अ'कार-'ऊ'कार की रचना बंदिश के लिये जरूरी है। क्योंकि उसका काम मुख्यतया स्वरविलास को गुंजाईश देना है। इसलिये कवि का कवित्व और गायक का कवित्व ये दोनों बिलकुल भिन्न हैं। उसका पारिभाषिक शब्द 'वाग्गेयकार' है। जरा गहराई से देखें या सोचें तो नज़र आ जायेगा कि गायक की कविता का निर्माण काव्यानन्द के लिये नहीं होता। वह सिर्फ संगीत के आनन्द के लिये, संगीत के एक अविभाज्य इकाई के रूप में होता है। हर कला के माध्यम अलग होते हैं और उनके आनन्द-हेतु साध्य करने के मार्ग भी भिन्न होते हैं। इसी दृष्टि से संगीत की कविता 'कविता' नहीं 'बंदिश' कहलाती है।

पर बंदिश के शब्दों को भी अर्थ होता ही है और वह प्रारम्भ में बंदिश पेश करते समय तथा बाद में भी गाते समय भी झाँकता ही है। स्वाभाविक ही प्रश्न उपस्थित होता है कि उसका काम क्या है? इसका उत्तर यह है कि इस शब्दार्थ से एक संगीतोपयोगी भावस्थिति (mood) बने और उसमें से काव्य साकार होने की बजाय गायन की प्रेरणा प्राप्त हो, ऐसी योजना होती है। यह भावस्थिति बीजरूप ही होती है, इसलिये उसे संगीत की भाषा में रक्तिबीज कहें। इस रक्तिबीज से ही पूरी तरह पुष्पित-पल्लवित, सुफलित, संगीत-वृक्ष का विकास होता है। इसी का दूसरा अर्थ है कि एक बार शब्दार्थ इस रक्तिबीज को स्थापित कर दे और अलग हट जाये। संगीत के उभरने के साथ शब्दार्थ पीछे छोड़ दिया जाता है, छोड़ दिया जाना चाहिये। संगीत को चाहिये कि उसे खा जाये और शब्दार्थ को भी चाहिये कि वह खाया जाये। तभी वह संगीत 'संगीत' के रूप में विकसित-विलसित होगा। लिहाजा संगीत के लिये 'बंदिश' बनाना कवि का क्षेत्र है ही नहीं। वह काम गायक का है, मुरब्बी गायक का। उसके शब्दों का अर्थ गौण होता है, जो संगीत के प्रवाह में आसानी से पीछे छूट जाये। उसमें काव्य की दृष्टि से सक्षम तथा प्रभावशाली शब्द काम नहीं देते। अन्यथा वह शब्दार्थ पीछे नहीं रहेगा और गायक का ध्यान अपनी ओर खींचकर उसके संगीत विलास एवं विस्तार में रोड़ा बन जायेगा। संगीत के हेतु शब्दरचना कैसी होनी चाहिये इस सन्दर्भ में पश्चिमी संगीतज्ञ रॉबर्ट शूमन द्वारा किया गया विवेचन बहुत मार्मिक है और हमें भी मार्गदर्शक होगा इसलिये उसमें से एक छोटा सा उद्धरण दे रहा हूँ। गटे के काव्य को रचनाकार जोसेफ क्लीन द्वारा दिये गये संगीत की आलोचना करते हुए शूमन कहता है।—

To speak frankly, it seems to me that the composer has too much respect for his (Goethe's) poem as though he were afraid to hurt it, seizing it, too ardently. So at every time we find rests, hesitations and embarrassments. But the poem should lie like a bride in the minstrel's arms, free happy and entire. Then it sounds like something from heaven, heaven afar.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[स्पष्ट कहूँ तो मुझे लगता है कि रचयिता को उनकी (गटे की) कविता के लिये अत्यधिक आदर है गोया उसे डर लगता है कि कविता को आवेगपूर्वक जकड़ लेने से वह कहीं आहत तो नहीं हो जायेगी। अतः हर बार हम विश्राम, झिझक तथा संकोच पाते हैं। लेकिन कविता गायक के बाहुपाश में प्रेयसी के भाँति होनी चाहिये—मुक्त, प्रसन्न, तन मन से! तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वर्ग से कुछ सुनाई दे रहा है, सुदूर स्वर्ग से!]

इसका मतलब यह कि यह गटे की कविता ही इतनी प्रभावी थी कि उसके कारण संगीतकार बिलकुल दब गया और वहाँ संगीत का विकास हो ही नहीं पाया। खैर!

बिलकुल इसी तरह की भावस्थिति बंदिश के राग से, स्वररचना से अथवा बंदिश से भी निर्माण होती है यह बात गायकों को बताने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ मुख्य मुद्दा यह है कि शब्दार्थ से जो भी भावस्थिति व्यक्त होगी वह उसकी स्वररचना से होनेवाली भावस्थिति से एकरूप होनी चाहिये। लेकिन प्रत्यक्ष में ऐसा अनुभव शायद ही होता है। बल्कि इसके ठीक विपरीत स्वररचना की भावस्थिति अलग और शब्दार्थ से व्यक्त होनेवाली भावस्थिति अलग यही अनुभव सामान्यतया होता है। इसका कारण यह है कि सौ दो सौ वर्षों की अवधि में इन पुरानी बंदिशों पर विभिन्न घरानों के, अलग-अलग गायकों के भिन्न-भिन्न प्रकार के संस्कार हुए हैं। फिर बंदिशें इस घराने से उस घराने में जाती आती रहीं। मतलब जब यह प्रवास जारी था तब हर घराने द्वारा मूल बंदिश को परिवर्तित कर उसे अपने घराने के लायक बना ली गईं। प्रत्येक घराने की आलापचारी अलग, लयकारी भिन्न, तथा आघात की जाति और वज़न भी अलग। लिहाजा नये घराने का रंग अपनाते समय बंदिश का कुल स्वरूप भी बदल गया और यदा कदा उसकी स्वररचना भी बदल गई। फिर, कई गायकों ने नई नई स्वररचना की, मोह लेनेवाली धुनें बनाईं। लेकिन उन्हें गूँथने के लिये स्वतंत्र शब्द-रचना के प्रयास करने के बजाय प्रचलित बंदिश के ही शब्द लेकर उन्हें नई स्वररचना में पिरोकर छुट्टी पा लेने का आसान तरीका अधिकांश लोगों ने अपनाया। लिहाजा एक ही बंदिश कभी-कभी अलग रागों में पाई जाती है। फलस्वरूप बंदिश के अर्थ की भावस्थिति तथा स्वररचना की भावस्थिति इन में कोई सामंजस्य नहीं बचा। और शब्दार्थ गायन के स्वर-विलास तथा विस्तार से पीछे छूट जाने के कारण किसी ने महत्त्वपूर्ण नहीं माना।

लेकिन नई नई बंदिशें बनानेवाले को, उनकी स्वररचना शब्दों सहित करनेवाले को, सामान्यतया उपेक्षित इन छोटी-मोटी बातों की ओर भी ध्यान देना पड़ता है। और ऐसा रचनाकार नफासत पसंद हो तो बंदिश की कविता रचते समय उसके शब्दार्थ का भाव उसकी स्वररचना के भाव से एकरूप हो यह सावधानी भी रखता है। प्रस्तुत संग्रह की हर एक बंदिश कुमारजी ने बेहद बारीकी के साथ जाँच-पड़ताल करने के पश्चात् ही इसमें सम्मिलित की है। इनमें से कई बंदिशें लेखक स्वयं सुन चुका है और कुछ तो बार बार सुनी हैं। अतएव यह कहने में कि कुमारजी की बंदिशों की शब्दरचना एवं स्वररचना के रक्तिबीज एकरूप हैं, उसे ऐसा नहीं लगता कि कोई बड़ी साहस की बात है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह किमयागिरी कुमार कैसे कर पाये यह प्रश्न किसी को सूझ सकता है। लेकिन बंदिश बनाने की प्रक्रिया क्या होती है, कम-से-कम कुमारजी के बारे में वह क्या रही है, उसकी कुछ रूपरेखा जान लेना जरूरी है। इस बारे में उनके स्वयं के कथन को मैं महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। उनका कहना है कि उन्हें यात्रा करते समय या अन्यत्र कोई दृश्य दिखाई दे जाता है अथवा कोई घटना घट जाती है। वह दृश्य किसी पहाड़ी के निकट दो नदियों का संगम हो, या सड़क के दोनों ओर लगी वसंतऋतु में लाल-लाल फूलों से संपूर्णतया आवृत्त पलाश वृक्षों की कतार हो, या फिर वह घटना किसी काली-मंदिर में चढ़ाई जानेवाली बकरे की बलि हो, या कोई परिचित स्त्री पहचान होते हुए भी उसे नहीं दिखाती, तो वे एकाएक कुछ गुनगुनाने लगते हैं। और इस प्रकार गुन-गुनाते गुनगुनाते उन्हें बंदिश के स्वर एवं शब्द दोनों एक साथ सूझने लगते हैं। स्वर्गीय गोविन्दराव टेंबे जब नाटक के गीतों की धुनें बनाते थे तब उनका अनुभव भी इसीसे मिलता-जुलता रहा है। फर्क महज़ यही है कि वह दृश्य या घटना प्रत्यक्ष नहीं, नाटक की हुआ करती थी। कुल मिलाकर ग्रहण करने लायक मुद्दे की बात यह है कि बंदिश की स्वररचना और शब्दरचना एक साथ ही सूझनी चाहिये, कम-से-कम कुमारजी को सूझी है। इसलिये उनकी स्वररचना के मूड़ तथा शब्दार्थ के मूड़ का मेल ऐसा है कि जान नहीं पड़ता है। संगीत के विशाल कारोबार में जिसका अस्तित्व मिनट डेढ़ मिनट का होता है और जिसे महत्त्वहीन माना गया है उस इकाई की ओर भी कुमारजी कितनी बारीकी से देखते हैं उसी का निर्देशक है यह।

कुमारजी के प्रस्तुत संग्रह के संदर्भ में यही कहना है कि गाने के लिये बंदिश जैसी होनी चाहिये बिलकुल वैसी ही है। और उसमें स्वररचना तथा शब्दार्थ का पूरा सामंजस्य है और संग्रह की बंदिशों की ओर इस दृष्टि से भी देखा जाना चाहिये।

बंदिश के शब्दार्थ का काम किसी एक भावस्थिति अथवा संगीतानुकूल भूमि का निर्माण करना होता है यह कह चुकने पर कुमारजी की बंदिशों के विषय क्या हैं इसका उल्लेख भी आवश्यक है। उनके मुख्य विषय हैं ईश प्रार्थना, भगवान् शंकर की स्तुति (कुमारजी शंकर भगवान् के भक्त हैं) सरस्वतीवन्दना, गुरुमहिमा, संगीत का विवरण, ऋतुवर्णन—विशेषतया वसंतऋतु वर्णन, श्रृंगार, विरहिणी की व्यथा, श्यामसुंदर की बंसी आदि। हर स्थान पर स्वररचना और शब्दार्थ का सामंजस्य स्थापित हो पाया है या नहीं यह हर एक स्वयं ही नोटेशन के सहारे बंदिश गुनगुनाकर तय करे। बानगी की खातिर कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना उचित होगा—

स्थाई

देवो दान मोहे
माँगत सुर भीक, दास तेहारो ॥

अंतरा

तोरे बिन ग्यान दे कौन मो सो
नेक नज़र मो पर, आस तिहारो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यान में रखने लायक एक और बात है कि नई रचनायें करने की बात कुमारजी को सूझी सो सैकड़ों पुरानी परंपरागत बंदिशों के अध्ययन से ही। खानदानी बंदिशों का उनका संग्रह विशाल है, याददाश्त बेहद तथा परिशीलन गहरा। अन्यथा ऐसी रचनायें वे कर ही नहीं सकते थे। शिवस्तुति की उनकी यह रचना देखिये—

स्थाई

शिव शिव कल्याण करी, जप जप जिय नाम शिव
हर हरत दुख सबै, रट रट पुरहर नाम ॥

अंतरा

जप करत सुरगन, महादेव महादेव
शिव करत कल्याण, रट धरो नाम शिव ॥

इसकी शब्दरचना पर गौर कीजिये। एक शब्द के बार बार उपयोग के कारण उच्चारण तो एक समान किन्तु स्वरावली भिन्न होने की वजह से उसकी नाद-मधुरिमा का रंग कुछ अलग ही खिलता है।

पृष्ठ तीन पर बिलासखानी की यह बंदिश है—

स्थाई

नयन में जल भर आये, देखन तोहे
काहे पिया नहीं देत दरस मोहे

अंतरा

शोक[1] मन छाये, याद तरसाये
कैसे धरूँ धीर, देवो दरस मोहे।

विरहिणी को यह आर्त पुकार सुन किसी को भी सहज ही बिलासखानी की याद हो आये तो इसमें आश्चर्य कैसा ?

संगीत की आस तथा सरस्वती की वंदना दोनों का यह सुन्दर मिलन भीमपलासी की इस बंदिश में देखिये, ध्यान में रखने लायक है—

सब सुर साधे जब भयो पार
मिल नरनारी तब कर गान ॥
सुरलय साथ करो दोऊ एक
तरो सुर-सिंधु जब भयो पार ॥
शोक तज आज सुरसती नाम
करो रट नाम करे तन पार ॥

---

१. शोक कुमारजी का तखल्लुस है, केवल बंदिशों में।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुर एवं लय दोनों को एकरूप कर सुरसिन्धु तर जाने की आकांक्षा रखनेवाला यह गायक 'सुरसती'–अर्थात् सरस्वती–का नाम सुमिरने को कहता है। स्वर तथा लय को एकात्म करने की कल्पना तथा सरस्वती का 'सुरसती' जैसा संगीतमय एवं संगीतक्षम रूपान्तर मुरब्बी गायक के अलावा क्या अन्य किसी को सूझ सकता है ?

प्रस्तुत बंदिशों को एक अन्य नज़रिये से देखा जा सकता है। बंदिशें इस घराने से उस घराने का चक्कर निरन्तर लगाया करती हैं। फिर भी कुछ बंदिशों पर किसी खास घराने की ही छाप बहुत स्पष्ट होती है। यही नहीं, कभी कभी तो यहाँ तक लगता है कि कुछ बंदिशें तो, बस, एक खास घराने के लोगों द्वारा ही गाई जानी चाहिये। इस दृष्टि से, अलग-अलग घराने के गायकों को इस संग्रह में ऐसी बंदिशें मिलेंगी कि उन्हें लगेगा कि गोया ये बंदिशें खास 'हमारे लिये ही बनाई गई हैं'। मिसाल के लिये राग कामोद में की गई 'ऐसन कैसन' बंदिश ग्वालियर घराने वालों को अपने घराने की प्रतीत होगी तो किराना गायकों को लगेगा कि बसन्त में निबद्ध 'सपने में मिलती' उन्हीं के लिये है। इसी प्रकार जयपूर गायकों को जँचेगा कि गौरी बसन्त की बंदिश 'आज पेरिले' खास तौर से उनके लिये ही है। मतलब यह कि इस संग्रह में, विभिन्न घराने के गायक 'विशेषकर हमारे लिये ही' की गई अनेक बंदिशें पायेंगे।

पुराने रागों में कुमारजी द्वारा बांधी गई बंदिशों को लेकर मतभेद की संभावना है। और उल्लेख करना होगा कि इनमें मिलनेवाले कतिपय स्वर-प्रयोग विवाद के विषय बनेंगे। उनमें से कुछ मोटी बातों का निर्देश करना उचित होगा।

राग	पृष्ठ		प्रकार	
भीमपलासी	२४	सब सुर साधे	चीज	ध नि॒ ध प
,,	२६	जावा हूं देसा	,,	सा री म ग॒ री सा
,,	२७	दीं तन देरेना	तराणा	ग म प ध नि॒ सा
पूरियाधनाश्री	४३	कहाँ चला हो रे	चीज	मंध मं ग री सा सा
,,		,, ,,	चीज	सा ग री॒ सा
श्री	४४	म्हा संग	चीज	री सा प ग ग रें॒
छायानट	६३	नहीं आना तुम्हें	,,	कोमल नी आवश्यक
बागेश्री	६४	टेसुल बन फुले	,,	म म ग॒ प
,,	,,	,,	,,	ग रे नि॒ सा
,,	६५	पार नहीं हो	,,	ग॒ रे प म
दरबारी कानडा	७३	सुंदर मुख तेरो	,,	ध॒ ध॒ सा

उक्त सारी बातें कुमारजी की प्रयोगशीलता से ही उत्पन्न हुई हैं सो तो सही है ही, पर यह कहना कि उनके पार्श्व में कुछ सैद्धान्तिक भूमिका है, अधिक तर्क-संगत होगा। यह भूमिका इस प्रकार है।

पुराने राग आज सैकड़ों वर्षों से सैकड़ों गायकों द्वारा गाये जा रहे हैं। अतः जिस किसी महाभाग को कोई राग पहले पहल सूझा होगा उसी रूप में वह आज भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाया जाता है यह दावा करना बड़े साहस का काम है। उस में कुछ स्वर बिना बुलाये ही प्रविष्ट हो गये होंगे और कुछ चूकर निकल गये होंगे। मुमकिन है कि उन रागों की पूरी शकल ही बदल गई हो। स्पष्ट ही जिन का सारा स्वरूप ही बदल चुका है उनके बारे में कुछ भी करना संभव नहीं होता। पर जिनमें परिवर्तन के बावजूद भी मूल नक्शा कायम है उनके बारे में उस राग की अनेक बंदिशों के सहारे मनन किया जाये तो मूल रचनाकार के मन में क्या था कैसी रचना रही होगी इसका अंदाज़ा किया जा सकता है। मतलब, वह राग आज जैसा है उसके बजाय उस समय जैसा रहा होगा वैसा मन में जमने लगता है। निश्चय ही उन रागों का यह नया स्वरूप उनके वर्तमान प्रचलित स्वरूप से मिलता-जुलता नहीं होगा। यह उस राग की, पुनर्विचार के फलस्वरूप की गई अथवा हो गई पुनर्रचना ही मानी जानी चाहिये।

कुमारजी स्वयं नहीं मानते कि उनके द्वारा किये गये ऐसे परिवर्तन अथवा परिवर्तनों की सैद्धान्तिक भूमिका सभी को मान्य होगी। बल्कि वे तो मानकर चलते हैं कि अधिकांश लोगों को मान्य नहीं होगी। किसी को भूमिका मान्य हो तो भी उसके कारण कुमारजी द्वारा जो परिवर्तन किये गये हैं वे किये जा सकते हैं यह उसे मंजूर नहीं होगा, यह भी कुमारजी जानते हैं। अतएव जो गायक इन रागरूपों को कुमारजी के पाठ के अनुसार गायें वे ध्यान में रक्खें कि वे पाठ कुमारप्रणीत हैं और यदि वैसा अवसर आए तो यह पाठ कुमारप्रणीत है यह निर्देश करें ऐसा सुझाव देना चाहता हूँ। मतलब की बात यह कि पुराने रागों मे किये गये ये रद्दोबदल अविवेकपूर्ण नहीं है, उनके पार्श्व में सैद्धान्तिक भूमिका है यह स्मरण रखना आवश्यक है।

जिस नव निर्माण को लेकर इतना विवेचन किया गया है अब उसकी पृष्ठभूमि को जानने की कोशिश करें। इस हेतु कुमारजी के संगीत की शुरुआत कैसे हुई, उनका प्रवास कैसा रहा, उन्होंने कौन-कौन-सी मंज़िलें पार कीं और वे आज की परिणत अवस्था तक कैसे पहुँचे यह समझने के लिये उनके सांगीतिक जीवन का अवलोकन किया जाये तो वह लाभदायक होगा ऐसी आशा है।

सन् १९३५ से मैं कुमारजी को देखता सुनता चला आ रहा हूँ और आज उन्तीस वर्ष बाद भी उनके प्रथम दर्शन की छाप मेरे मन पर उतनी ही ताज़ी बनी हुई है। उस वर्ष बम्बई के जिन्ना हॉल में सम्पन्न संगीत परिषद् के सूत्रधार थे मेरे मित्र श्री बी० आर० देवधर, स्वर्गीय मोतीराम पै और मैं स्वयं। अध्यक्ष थे संगीत को सर्वस्व समझनेवाले धरमपूर रियासत के तत्कालीन महाराज। स्वागताध्यक्ष थे स्वर्गीय माननीय बैरिस्टर जयकर। परिषद् में अनेक माने हुए गायक-गायिकाओं की महफ़िलें हुईं और मुरब्बी कलाकारों ने अपने-अपने जौहर की हद कर दी। संगीत का इतिहास बनानेवाले महान् गायक, ऐसे कि जिनका पुण्यस्मरण आज भक्तिभाव से किया जाता है, उस परिषद् में मौजूद थे। सारा हॉल खचाखच भरा हुआ था, कहीं खड़े रहने तक की जगह नहीं थी। वह आज का बाज़ार नहीं था, महफ़िल थी। रसिकों की भारी भीड़। गुणों को हाथोहाथ झेल लेनेवालों की सभा थी वह। असीम उत्साह। महाराज साहब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा श्री जयकर की उपस्थिति से उसे एक विशिष्ट प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो गयी थी। ऐसी स्थिति में उम्र से बारह किन्तु दीखने में नौ वर्ष का बाल-कुमार स्टेज पर आ बैठा और उसने सभा पर अपनी आवाज़ का सम्मोहन अस्त्र चला दिया। एक क्षण में वह सारी सभा जैसे उसकी पकड़ में आ गई। हर जगह और प्रत्येक हरकत पर दाद दी जा रही थी। सभा का उत्साह जैसे उबला जा रहा था और रसिकता उफन रही थी। गाना थोड़ी ही देर तक चला, लेकिन हर चेहरे पर विस्मय अंकित था। हर उपस्थित रसिक एवं कलाकार में इस लड़के की सराहना करने की लहरें उठ रही थीं, लिहाजा वहाँ पुरस्कारों और सराहना की जैसे झड़ी लग गई। किसीने नकद पैसे दिये, किसीने तमगे तो किसीने और कुछ। कोने कोने से उत्स्फूर्त भेटें चली आ रहीं थीं। देनेवालों में खाँसाहेबान थे, पंडितजी थे, गायिकाएँ थीं। हर एक को यही फिक्र थी कि इस लड़के के असामान्य गुणों की देखभाल और विकास कौन करेगा? लेकिन अबोध कुमार को इस सब का कोई एहसास नहीं था।

मुझे कुमारजी के प्रथम दर्शन जो हुए सो ऐसे। स्पष्ट ही उस समय उनसे मेरी जान-पहचान नहीं थी। पर वे उसके कुछ ही दिनों बाद प्रा० देवधर के पास सीखने के लिये आये। इसके बहुत पहले से श्री देवधर से मेरे मित्रता के सम्बन्ध थे ही। देवधरजी की शागिर्दी तथा कुमारजी के प्रति स्नेह के कारण मैं बराबर उनकी पूछताछ करता रहता था। देवधरजी का कुमार पर प्रेम और कुमारजी के मन में भी देवधरजी के प्रति असीम आदर!

नव निर्माण के लिए व्यक्ति में कुछ विशेष गुण अनिवार्य रूप से आवश्यक होते हैं। स्वतन्त्र तबियत लगती है, स्वतन्त्र प्रज्ञा तथा प्रतिभा आवश्यक होती है और स्वभाव प्रयोगशील। मुख्यतया विद्रोहीपन आवश्यक होता है। कई बार यह सारी बातें होते हुए भी वे अधिक प्रखर न हों तो किसी एक घराने की तालीम का कठोर अनुशासन अंग में समा जाने पर उस घराने के दबाव से वे सब कुचल दी जाती हैं। कलाकार में वैसी शक्ति हो तो ही उसकी स्वतन्त्र प्रवृत्ति इस सब से सही सलामत बची रह पाती है। उदाहरणार्थ, एक अब्दुल करीम खाँ या अल्लादिया खाँ जैसा दुर्दम्य स्वतन्त्र-प्रवृत्ति कलाकार नई गायकी या नई बंदिशें निर्माण कर सकता है। लेकिन कभी कभी ही ऐसा होता है। जहाँ तक घरानों का सम्बन्ध है, उनका अनुशासन, रीतिरिवाज, बर्ताव, स्वतन्त्र सौन्दर्यप्रणाली आदि काफ़ी कुछ बखानने लायक हो फिर भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि घराने के कारण कलाकार कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर काफ़ी पाबंदियाँ लग जाती हैं। और कई ख्यातनाम कलाकारों को तब तक अपनी आत्मा एवं सच्ची कला के दर्शन नहीं हुए कि जब तक उन्होंने घराने के परकोटे पार नहीं कर लिये। अंततः कला आत्मा की ही खोज होती है। लेकिन अब तक उसकी प्राप्ति घराने के राजमार्ग पार करने के बाद ही होती थी।

लेकिन कुमारजी का सारा प्रवास इस राजमार्ग से न होकर अलग राहों से ही हुआ। मूलतः स्वतंत्र एवं विद्रोही प्रवृत्ति; प्रज्ञा एवं प्रतिभा भी महान् और स्वभाव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निडर। इसके अलावा प्रा० देवधर की तालीम के कारण वे किसी घराने के अनुशासन में फँसे ही नहीं। क्योंकि स्वयं देवधरजी का स्वभाव किसी के अनुशासन में फँसे रहने का नहीं था। इसलिये, विद्रोही प्रवृत्ति के कुमार और स्वतन्त्र प्रवृत्ति के देवधरजी गुरु-शिष्य की यह जोड़ी 'सम समा संयोग' ही था। देवधरजी के पास कुमार उम्र के बारहवें वर्ष से लेकर तेवीसवें वर्ष तक माने कोई ग्यारह वर्ष रहे। लेकिन यह जोड़ी, पुराणपन्थी गुरुजी तथा अंधश्रद्धा रखनेवाला शिष्य—इस प्रकार की नहीं थी।

कुमारजी की छोटी तथा संस्कारक्षम उम्र का तथा देवधरजी के लीक से हटकर विचार तथा व्यासंग का संयोग विशेष फलदायी रहा। यह वह समय था जब देवधरजी के अनेक उद्यम तथा प्रयोग, उनकी संगीतशाला, उनके छात्रों की तालीम, उनकी विदेश-यात्राएँ तथा उनसे उत्पन्न विशाल दृष्टिकोण, प्रो० स्किझी से पाश्चात्य संगीत का अध्ययन, संगीत में सर्वसंग्राहक प्रवृत्ति, विभिन्न घरानों के खानदानी गायकों से अलग-अलग रागों की अलग-अलग बनावट की बंदिशें सीखकर नोटेशनबद्ध कर किया गया संग्रह, हर राग का व्यवस्थित रूप से विवेचन तथा उसकी चर्चा, उनकी सभाएँ एवं भाषण आदि तमाम प्रवृत्तियाँ बड़े जोरों पर थी। देवधरजी का घर या उनकी शाला गायक-वादकों का एक मुकाम ही था। एक भी गायक नहीं था कि जो वहाँ आया-जाया न करता था। और न एक भी गायक गायकी अथवा संगीत का तत्त्व ऐसा था कि जिसकी चर्चा एवं विश्लेषण वहाँ हुआ न हो। अनेक ख्यातनाम गायक चाहे शाला की सहायता की खातिर कहिये, चाहे पं० विष्णु दिगंबरजी की पुण्यतिथि के निमित्त कहिये या किसी बड़े आदमी से मिलने के हेतु से कह लीजिये, वहाँ आये बगैर अथवा गये बगैर शायद ही कभी रहे हो। संगीतविषयक इतनी उठापटक वहाँ चला करती थी। महफ़िल जीतनेवाले कलाकार के रूप में यश प्राप्त करने की कोशिश में देवधरजी कभी नहीं रहे। लेकिन अध्ययनशील तथा संग्रहात्मक प्रवृत्ति और तफ़सीलवार चर्चा-विश्लेषण का अपार धन देवधरजी के पास था। विभिन्न घराने, उनके ख्यातनाम गायक, उनकी अलग-अलग गायकी, देवधरजी की सूक्ष्म दृष्टि से बची नहीं थीं। उनके सब गुणों की तथा सब दोषों की चर्चा वहाँ खूब होती थी। देवधरजी के जीवन में जो कुछ भी होता था कुमारजी भी वही होते ही थे। महत्त्वाकांक्षी स्वभाव, संवेदनशील मन, किसी भी आड़ी-टेढ़ी राह पर चल पड़ने का साहस तथा संगीत के सम्बन्ध में अलग-अलग चर्चाएँ तथा विश्लेषणों का नित्य श्रवण आदि के संयोग का कुमारजी के मन पर उनकी किशोर तथा तरुण अवस्था में, कितना गहरा असर हुआ होगा इसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। फलाँ गायक में फलाँ दोष है यह जान पड़ने पर कुमारजी मन-ही-मन निश्चय करते कि मेरे गायन में यह दोष नहीं आ पायेगा। फलाँ फलाँ बात बहुत ही अच्छी है किन्तु उतनी ही कठिन भी, यह तय पाये जाने पर कुमार जी मन-ही-मन प्रतिज्ञा करते कि मैं उसे कर दिखाऊँगा। गाना इस ढंग का होना चाहिये इस आशय की चर्चा हुई नहीं कि कुमार-जी ठान लेते थे, चाहे कुछ भी हो मैं उसी प्रकार गाऊँगा ही। हर किसी के गायन में देवधरजी कुछ-न-कुछ खामी बतलाते और परिणाम-स्वरूप कुमारजी ने प्रतिज्ञा की कि मैं इनमें से किसी की भी तरह नहीं गाऊँगा और न किसी की नक़ल करूँगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेकिन जिस मंज़िल का वर्णन अभी किया गया है-वह कुमारजी के प्रवास की दूसरी मंज़िल थी। उसके पहले की मंज़िल अर्थात् प्रवास की शुरुआत की मंज़िल कौन सी थी यह देख लेना भी जरूरी है। कुमारजी के पिताश्री स्वर्गीय सिद्रामप्पा, खाँसाहब अब्दुल करीम खाँ को बहुत चाहते थे। उसी प्रकार वे सुप्रसिद्ध पंचाक्षरी बुआ के मित्र थे और खुद भी गाते थे, तथा किसी किसी को सिखाते भी थे। मतलब कुमारजी के घर में उनके जन्म से ही संगीत का वातावरण था और इसलिये तभी से उन पर संगीत के संस्कार होने लगे। अनजाने ही सुनने की उनकी प्रक्रिया निरंतर जारी थी। लेकिन उन्होंने कभी मुँह नहीं खोला था। घरभर में किसी को जरा भी सन्देह तक नहीं था कि इस लड़के के मन पर कुछ संस्कार हो रहे हैं या जम रहे हैं। और ऐसी स्थिति में एक दिन उम्र के छठवें वर्ष में जैसे गीली ज़मीन को फाड़कर अंकुर बाहर आ जावे, कुमारजी एकदम गाने लगे। उस गायन से सबको इतना अधिक अचरज हुआ कि कहा नहीं जा सकता। और बाद में कुमारजी जैसे जैसे गाने लगे, वैसे वैसे उनके पिताजी ने गाना छोड़ दिया। कुमारजी के गाने की पहली मंज़िल या वास्तविक आरंभ कुछ इस प्रकार का था।

स्पष्ट ही यह सारा गायन अनुकरणात्मक स्वरूप का था। और देवधरजी के यहाँ आने के पूर्व तथा बाद में भी कुछ वर्षों तक वैसा ही रहा। अनुकरण की उनकी शुरुआत हुई बझेबुआ की एक ग्रामोफोन रेकार्ड से। पिताजी तथा परिवार के अन्य सदस्यों को कुमारजी के छठवें वर्ष में अचरज का जो एक धक्का-सा लगा था सो इसी रेकार्ड की उनके द्वारा हूबहू नक़ल उतारे जाने से। बाद में उन्होंने अन्य नामवर गायकों की नक़ल भी की। और हरएक की नक़ल वे इतनी हूबहू उतारते थे कि लगता था कि वह नक़ल 'नक़ल' नहीं 'असल' ही है। खाँसाहब फैयाज़ खाँ, बझे बुआ, पंडित ओंकारनाथ, सवाई गंधर्व, आदि ने स्वयं के गाने की नक़ल सुनकर कुमार को आशीर्वाद दिये हैं। खाँसाहब अब्दुल करीम खाँ तथा रामभाऊ सवाई गंधर्व इन दोनों की नक़ल एक के बाद एक उतार कर इन गुरु-शिष्य का भेद वे स्पष्ट कर दिखाते थे। एक बार देवधरजी ने केसरबाई के समक्ष कुमारजी की तारीफ़ की। उस समय केसरबाई को लगा कि वे कुछ यूँ ही कह रहे हैं। कुमारजी को गुस्सा आ गया और उन्होंने केसरबाई की 'सुख कर आये' की नक़ल उतारकर उन्हें स्तिमित कर दिया। इसी प्रकार इलाहाबाद में फैयाज़ खाँ स्वयं की नक़ल कुमारजी द्वारा सुनकर स्तिमित हो गये थे। एक बार सावंतवाडीकर महाराज ने कुमारजी की क्षमता के प्रति अविश्वास प्रकट किया और कहा—मैं एक रेकार्ड सुनवाता हूँ वैसा गाकर दिखाओ। उन्होंने जो रेकार्ड चुनी थी वह थी रहिमत खाँसाहब की। उसे सुनते ही कुमारजी ने तत्काल वैसा ही गा सुनाया। और मैंने जिन्ना हाल के जिस कार्यक्रम में कुमारजी को पहली बार सुना उसमें खाँसाहब अब्दुल करीम खाँ की 'जमुना के तीर' रेकार्ड की सही सही नक़ल उन्होंने पेश की थी।

कुमारजी जो नक़लें उतारते थे उसके बारे में उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे जिस गायक की नक़ल उतारते थे उसकी गायकी ही वे गाया करते थे। सुर लगाने का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरीका, आलाप का ढंग, तान-पलटों की जाति, लय के न्यास, बोलतानों का तरीका सब कुछ उसीका होता था, मानों उस कलाकार की ही कला वे पेश करते थे। उस में नक़ल में निहित उपहास अथवा शरारत लेशमात्र भी नहीं होती थी। उन गायकों के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी और श्रद्धा से ही यह अनुकरण उपजा करता था। वह उस प्रत्येक कलाकार की तीन मिनट की रेकार्ड नहीं होती थी, दर असल वह उस कलाकार की सम्पूर्ण गायकी ही हुआ करती थी।

लेकिन इस सब के बावजूद उस समय उन्हें गायन की 'समझ' नहीं थी। कोई भी कह देता कि फलाँ फलाँ की नक़ल उतारो और कुमारजी शुरुआत कर देते। सुननेवालों को यह सब एक चमत्कार ही लगता था। पर वैसा क्यों लगता है यह अचरज कुमारजी को होता था। यद्यपि उनका गाना ढंग से तथा राग नियमों के अनुसार ही होता था फिर भी अबोध कुमार को इस बात की जरा भी जानकारी नहीं थी कि राग नाम की कोई चीज होती है जिसके कुछ वादी-संवादी होते हैं तो कुछ स्वर वर्ज्यावर्ज्य। कुछ नियम कुछ कायदे भी होते हैं इसकी उन्हें खबर तक नहीं थी।

बाद में देवधरजीकी तालीम तथा सहवास के कारण यह सब बदलता चला गया और ज्यों ज्यों समझ आने लगी त्यों त्यों कुछ संदेह सताने लगे। अब गाते समय भय एवं संकोच का कुछ दबाव महसूस होने लगा। स्वर ठीक लग रहा है या नहीं, राग ठीक से पेश कर रहा हूँ या नहीं, आदि की फिक्र सताने लगी। देवधरजी की चर्चाएँ सुनकर मन-ही-मन प्रतिज्ञा तो कर बैठे थे कि न तो किसीकी तरह गाऊँगा न अब तमाम उम्र किसी की नक़ल उतारूँगा और इधर हालत यह कि स्वर ठीक लग रहा है या नहीं। संदेह और असमंजस की इस अवस्था में कई बार मन की व्यथा तीव्र हो जाती और एक बार तो यह व्यथा कुछ इस कदर नुकीली हो गई कि निराशा, विफलता, निरुत्साह तथा स्वयं को पराभूत अनुभव करने पर रास्ता चलते चलते ही (पावेल कंपनी के वहाँ) कुमारजी रो पडे। १९४१ की एक शाम की उक्त हकीकत कुमारजी अपने जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना मानते हैं। लेखक की दृष्टि में यह एक अपरिहार्य मंज़िल है, जिससे कोई भी बच नहीं पाया है। अन्य जन्मों के गुण लेकर ही दुनिया में प्रवेश करनेवाले कुमारजी जैसे कलाकार स्वयं को इससे बचा कर निकल नहीं पाये तो औरों की बात ही क्या?

इस अवस्था में कुमारजी ने १९४१ से १९४७ तक कोई छह साल गुजारे। यों इस अर्से में भी उनके संगीत कार्यक्रमों और महफ़िलों का सिलसिला बराबर जारी था, सुननेवाले भरपूर दाद देते थे, उनकी कीर्ति बढ़ती जा रही थी, पैसा भी आ ही रहा था। लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ रही थी पर अन्तर की चिन्ता भी जला ही रही थी। किसी अन्य की तरह न गाने का निश्चय और इधर नया कुछ बनता नहीं इस गत्यवरोध की मनोदशा में घूमते फिरते वे देवास जा पहुँचे। अपने गायक मित्र श्री कृष्णराव मुजुमदार के यहाँ वे ठहरे और 'मैं गाना सुनाने के लिये खास तौर से आप यहाँ आया हूँ' यह बात मुजुमदारजी से कहने योग्य उल्लास वे अवश्य महसूस कर रहे थे। लगातार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दस दिनों तक सुबह शाम दोपहर-रात निरन्तर गाना चलता रहा। और वहाँ एक रात भीमपलासी कुछ ऐसा जमा कि कुमारजी को स्वयं एकदम साक्षात्कार हुआ—'मुझे गाना आ गया'। छह वर्षों की निराशा और अंधकार के पश्चात् यह दिव्य प्रकाश। उनके सारे जीवन में आनन्द फैल गया। अब निराशा नहीं, अंधियारा नहीं, अब सिर्फ आनन्द है, प्रकाश है। यह गवाही उन्हें उक्त गाने से मिली। उस याद को सुनाते समय कुमारजी कहते हैं कि "उस रात मैं और मुजुमदार भोर के चार बजे तक उसी उल्लास में बाते करते रहे।"

इसी समय उनका विवाह कुमारी भानुमती कंस से सम्पन्न हुआ। भानुमतीजी ठान कर आई थीं कि गाना तो कुमारजी से ही सीखेंगी। गाना सीखते प्रेम हो गया और जल्दी ही उनकी शादी भी हो गई। स्वाभाविक ही उस आनन्द और उल्लास में ज्वार आ गया। भानुमती स्वयं एक अच्छी गायिका थीं, पढी-लिखी थीं। एम० ए० की परीक्षा पास की थी तथा डॉक्टरेट करने का भी इरादा था।

लेकिन किस्मत में कुछ और ही लिखा था। ऐन जवानी, गाना आ गया यह साक्षात्कार तथा खर्ज के साथ अपने आप गूँज उठनेवाले गंधार की भाँति संगीत में भी साथ देनेवाली सुशील, सुशिक्षित कर्तृत्वसंपन्न सहचारिणी की उपलब्धि, पर महफ़िल जम ही रही थी कि तानपूरे का तार अचानक टूट गया—कुमारजी पर तपेदिक ने आक्रमण कर दिया। स्वास्थ्यसंवर्धन हेतु कुमारजी बम्बई छोड़कर देवास चले गये तथा वहीं बस गये। लेकिन पाँच साल माने १९४७ से १९५२ तक वे लगभग बिस्तर पर ही थे।

यह बीमारी माने बिलकुल जान पर ही आ बनती है। लेकिन कुमारजी की इच्छाशक्ति इससे भी बढ़कर थी। पाँच साल तक निष्क्रिय अवस्था में जब वे बिस्तर पर पड़े थे तब भी 'अब मुझे गाना आ गया है' यह उल्लास था ही और कुमारजी कहते हैं कि उस आनन्द तथा प्रकाश के कारण ही उस बीमारी को वे सह सके। डॉक्टर का आदेश था कि पाँच साल तक तानपूरा लेकर गायें नहीं। और कुमारजी ने इस आदेश का अक्षरशः पालन किया। शायद इसीलिये उनका मन अधिक चिन्तनशील हो गया। भानुमतीजी देवास गर्ल्स स्कूल में अध्यापिका नियुक्त हो गई थीं और जब वे स्कूल जातीं तो कुमारजी घर में बिलकुल ही एकाकी रह जाते। मन इतना व्यग्र होने पर यह एकाकीपन तो भीषण हो जाता। लेकिन 'गाना आ जाने' का जो आनन्द मन में बस गया था वह उन्हें इस अवस्था में भी प्रकाश की किरण दिखाता रहा और इसीलिये इस बीमारी का भी उन्होंने इस्तेमाल कर लिया। यही नहीं, बल्कि इसी वजह से वे संगीत में गहरे पैठ कर उसकी थाह ले सके और अन्यथा प्राणलेवा सिद्ध होने वाली यह व्याधि संगीत के लिये उपकारक बनी। यह कहानी इस प्रकार है।

चौबीसों घंटे बिस्तर में पड़े पड़े गुज़ारने पड़ते थे सो उनका ध्यान आसपास से उठनेवाले ग्रामवासियों के लोकगीतों के स्वरों की ओर खींच गया। वे उन लोकगीतों की ओर विशेषतया लोकधुनों की ओर अधिकाधिक आकर्षित होते गये और इसी में से एक नये विश्व का दर्शन उन्हें प्राप्त हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान पर पड़नेवाला हर लोकगीत वे बहुत ध्यान से सुनते, मन-ही-मन उसे संजोकर रखते और पड़े-पड़े, शरीर को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो इसका पूरा ध्यान रखकर, मन-ही-मन गुनगुनाकर उस पर निरन्तर चिन्तन करते। न जाने देवास की जमीन में कैसा जादू है। कुछ वर्ष पूर्व जब मैं वहाँ गया था तब मुझे भी वहाँ की मिट्टी में संगीत की सुगन्ध प्रतीत हुई थी। और यह भूमि ही हमारे कोल्हापूर, मिरज, सांगली के इलाकों के समान खास संगीत की है यह अनुभूति मन-ही-मन हुई थी।

लोकगीत हमारे राग संगीत का आधारभूत तत्त्व है। विभिन्न लोक संगीतों की विभिन्न धुनों में से ही नये नये राग जन्म पाते हैं। 'आहिरी', 'मालवी', 'भटियारी', 'मुलतानी', सोरठ', 'बिहारी' आदि रागरूप उन विभिन्न क्षेत्रों माने आहिरी, मालवा, बंगाल, सिन्ध, पंजाब, सौराष्ट्र, बिहार आदि प्रदेशों के मूल लोकगीत ही हैं। निश्चय ही इनके रागरूपों का निर्माण गायकों ने मूर्च्छना, वादी-संवादी तथा वर्ज्यावर्ज्य आदि सिद्धान्तों के अनुसार किया। लेकिन यह सब बाद में हुआ जब संगीत का विकास होने लगा तब। लेकिन रागों का जन्मस्थान अथवा बीज इन लोकगीतों में ही मिलता है। हिन्दुस्तान की विभिन्न सांस्कृतिक इकाइयों के लोकगीत माने राग रूपों की खान है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि जहाँ से गायकी आगे बढ़ी उस ओर मुड़कर देखने की बात सिवाय कुमारजी के अन्य गायकों को नहीं सूझी। लोकगीतों के साहित्यिक अर्थ की ओर कई लोगों का ध्यान गया तथा अनेक भाषाओं के कई अभ्यासकों ने गाँव गाँव जा कर उन्हें एकत्रित किया तथा संग्रह भी प्रकाशित किये, इसी प्रकार अपनी पीएच्० डी० की खातिर बड़े बड़े प्रबन्ध भी लिखे। यह सब इन गीतों के साहित्यिक अर्थ के सिलसिले में हुआ। किन्तु जिन पात्रों में अर्थात् स्वरावलियों में यह अर्थ संचित था उनका अध्ययन नहीं हुआ। इन लोकगीतों की सारी धुनें सुनकर, उनके गीतों सहित एकत्रित कर गुनगुनाकर नोटेशन बनाकर, लिखकर उनके रागरूपों की दृष्टि से उनका अध्ययन सामान्यतया कोई नहीं करता। बीमारी के फलस्वरूप कुमारजी का ध्यान इस गंगोत्री की ओर गया और उनकी संगीतिकता को एक अन्य अंकुर प्रस्फुटित हुआ। वह शक्तिशाली अंकुर ही आगे चलकर विकसित हुआ तथा परिणाम-स्वरूप कुमारजी का संगीत उद्यान ही खिल गया। उसमें उन्हें नये राग मिले, नई बंदिशों की प्रेरणाएँ मिली तथा उनका संगीतमय जीवन भी गहगहा उठा, समृद्ध बना।

विभिन्न एवं कभी कभी असुविधा-जनक अनुभवों को सहकर भी कुमारजी ने लोकगीतों का, उनके स्वरों एवं शब्दों सहित काफ़ी बड़ा संग्रह किया है। [इस कार्य में उन्हें भानुमतीजी का, जिनका अक्टूबर १९६१ में, अत्यंत अप्रत्याशित, असामयिक निधन हो गया, अपरिमित सहयोग रहा।] इस संग्रह में कोई दो ढाई सौ गीत हैं। जब कभी यह संग्रह प्रकाशित होगा तब अध्ययनशील संगीतज्ञों को वही प्रसन्नता होगी जो किसी को गड़ा खजाना मिलने पर होती है।

अब सहज ही प्रश्न उठता है कि यदि सिर्फ मालवे में और देवास के पास पड़ौस में ही इतनी धुनें और गीत मिले तो क्या अन्य क्षेत्रों में इनके अलावा और इनसे भिन्न ढाँचे,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलग ढंग तथा लय की धुनें नहीं मिलेंगी ? पर इन्हें रेकार्ड कौन करेगा ? इनका महत्त्व किसे समझायें और सुननेवाला भी है कौन ? राज्यों में संगीत अकादमियाँ कायम हो चुकी हैं। उन्हें तो यह कार्य हाथ में लेना चाहिये न ? लेकिन इसके कोई लक्षण अभी नज़र नहीं आते। और महाराष्ट्र में तो अभी अकादमी ही कायम होनी है।

कुमारजी को इन लोकगीतों के अन्वेषण के फलस्वरूप नये रागरूप मिले। लोक-गीत सामान्यतया सम्पूर्ण सप्तक के नहीं होते। लेकिन आधे-सप्तक, पाव-सप्तक की जो भी धुनें मिल जायें उसे लेकर पर्याप्त चिन्तन किया जाये तो शेष स्वर कैसे जोड़े जायें यह अपने आप सूझने लगता है। उनमें रंजकता आ पाई है या नहीं, रागत्व है अथवा नहीं, महफ़िल में उन्हें पेश करने की पात्रता उनमें स्वभावतः है या नहीं आदि बातें तो बाद की हैं। महफ़िल की कसौटी पर रगड़े जाने पर उनके वादी-संवादी, वर्ज्यावर्ज्य तथा कायदे अपने आप सुलझने लगते हैं।

यह थी कुमारजी के नये रागों की जन्म कहानी की रूपरेखा। ये राग जानबूझकर बनाये नहीं गये, वे अपने आप बन गये। वे उत्स्फूर्त हैं, स्वयंविकसित हैं। प्रकृति का साहचर्य, असाधारण संगीतिकता तथा प्रयोगशील मानस इन तीनों के संयोग से उद्भूत हैं यह सारे राग। पर साथ-ही-साथ पुराने रागों का चिन्तन-मनन भी जारी ही था। इस का परिणाम दस-बारह मिश्र राग तथा नयेपुराने रागों में बांधी गई बंदिशें हैं।

बहरहाल, हम कुमारजी की गायकी के विकास की मंज़िलें देख रहे थे। उस दृष्टि से और एक-दो मंज़िलें उल्लेखनीय हैं। नई बंदिशों तथा रागों के निर्माण का कार्य पिछले बारह-चौदह वर्षों से (लगभग १९५० से) निरन्तर जारी था, तब भी उनकी विकासशील गायकी निश्चेष्ट नहीं थी। वह भी आगे बढ़ रही थी। इस विकास की एक और मंज़िल माने गायकी की कल्पना का ही विस्तार था। कुमारजी के संगीतिक जीवन में, मेरे ख्याल से, एक कालखण्ड ऐसा भी रहा कि जब वे मानते थे कि सुननेवालों की आँखों में आँसू न भर आयें तो वह गाना है ही नहीं। यह स्थिति १९५३-५४ के आसपास थी। उस समय कुमारजी की उम्र २९-३० ही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक उनकी सारी कोशिशें इसी दिशा में थी। पाँच दस गायक-सुननेवालों की महफ़िल में उनके इस प्रयोग को सफल होते प्रस्तुत लेखक अनेक बार देख चुका है। क्योंकि आँखें भर आनेवाले श्रोताओं में वह स्वयं भी हाजिर था और उसकी भावनाएँ भी उद्वेलित हो उठी थीं। ऐसी अविस्मरणीय स्मृतियाँ कई हैं। इस प्रकार महफ़िल जबतक जारी रहती थी, एक उन्मन अवस्था निर्माण करनेवाले अनुभव के रूप में, उसे मन में संजोये रखने तक तो बात ठीक थी। किन्तु उसके तुरन्त पश्चात् एक सवाल उठाता था कि सारा संगीत अथवा किसी की सम्पूर्ण स्वरधारणा एवं रचना क्या एकमात्र इसी हेतु से प्रेरित हो ? एक प्रकार की ही भाववृत्ति जागृत हो अथवा की जाये ? क्या संगीत अथवा गायक स्वयं के लिये इतना संकुचित दायरा खींच ले ? यदि ऐसा हो तो यह जो कहा जाता है कि अलग-अलग रागों की भाववृत्ति भिन्न होती है, उस को क्या माना जाये ? फिर जो राग इस मनोदशा के पोषक न हों क्या उन्हें छोड़ ही दिया जाये ? क्या इस बांध को भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फोड़कर गायक को बाहर न आना चाहिये ? इस प्रकार के अनेक विचार मन में उठते थे। पर बाद में कुमारजी स्वयं ही इस बन्धन से मुक्त हो गये और गायकी की अपनी मान्यताओं को भी उन्होंने विस्तृत किया।

अब उनकी अन्तिम मंज़िल का ही विवरण शेष है। कुमारजी का गाना मैं उनके बचपन से सुनता चला आ रहा हूँ। उस दृष्टि से अभी-अभी तक एक बात हमेशा मन में खटकती चली आ रही थी। और वह भी उनकी रचना का स्वैर भाव। या यों कहें—किसी भी विशिष्ट रीति प्रणाली या अनुशासन का सामान्यतया अभाव। कलाकार एक हद तक विद्रोही होता है या होना चाहिये, यह सब सही है। लेकिन इस विद्रोह में पुरानी बातों के त्याग के साथ ही कतिपय नई बातों का स्वीकार भी अनुस्यूत होता है। शुरू शुरू में इन नई बातों को भी, केवल वे नई हैं इसीलिये सुननेवालों से दाद मिलती है। लेकिन उतने से ही बात नहीं बनती। क्यों कि इन बातों की स्वीकृति से भी एकात्म एक-रस आकृति निर्माण हो यह भी आवश्यक होता है। और इसके लिये रचना में एक क्रम, एक तरीका, कुछ अनुशासन भी जरूरी होता है। अलग-अलग गध, आकार तथा कमोबेश नज़ाकत के फूल महज एकत्रित कर उनका ढेर बना देना एक बात है और उनसे एक खास ढंग का एकात्म गुलदस्ता बनाना एक बिलकुल अलग बात है। फूलों के ढेर की भी एक किस्म की शक्ल होती है, रंग-संगति एवं गन्ध होनी है। लेकिन उसमें वह सुन्दरता और शोभा नहीं होती जो खिले हुए पुष्पों के एक गुलदस्ते में पाई जाती है। नये का सुनना एक एक फूल को अलग-अलग सूंघ कर उसीका आस्वाद लेने जैसा होता है। पर समूचा सुनने की सिफ़त पैदा तभी होती है जब सुननेवाला भी अनुभवी हो। यह सारी बातें स्पष्ट ही आदी रसिक या गायक श्रोताओं की महफ़िलों से ही गायक को साध्य होती है। किसी राजमार्ग से जाकर भी, माने किसी घराने की खास तालीम लेने पर भी वह साध्य होती है और फिर उनका विकास भी होता जाता है। पर कुमारजी का सारा प्रवास इस कुटे-पिटे मार्ग से न होने के कारण यह महफ़िलों के अनुभवों का ही संचय जैसे जैसे जमा होता गया वैसे वैसे उनके मन में जो आकार योजना थी उसका भी विकास होता गया। इसके पहले भी उनके प्रवास का यह विकास आहिस्ता आहिस्ता जारी था ही। किन्तु आकार तत्त्व की अनुभूति उन्हें १९५७ के अन्त में हुई होगी, ऐसी मेरी मान्यता है। तब तक यद्यपि मैं उनके अनेक विलोभनीय गुणों से आकृष्ट हो चुका था फिर भी मन-ही-मन उनकी गायकी का आलोचक ही था। लेकिन सत्तावन के दिसंबर में उनकी पूना की एक महफ़िल से मेरा काफ़ी मतपरिवर्तन हो गया। बगल में ही बैठे प्रा० मंगरूलकर से मैंने पूछा : 'आज तक हमलोग जैसी आलोचना करते थे क्या वैसी अब करेंगे ?' और उन्होंने भी 'नहीं' कहकर इस मत का समर्थन किया था सो मुझे याद है। इसी सन्दर्भ में पूना का ही इसके पहले का एक संस्मरण सुनाने योग्य लगता है। उस समय कुमारजी के गाने के समय मेरे बगल में बैठे हुए एक बुजुर्ग कलाकार मेरे कान में फुसफुसाकर बोले : 'यह सब तो ठीक है, लेकिन वामनरावजी, कुमारजी किस घराने के हैं ?' उनके मन की बात मैं समझ गया। वे सुझाना चाहते थे कि कुमारजी की गायकी में उस समय तक एकात्म आकार दिखाई नहीं पड़ता था। मुझे की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बात यह है कि कुमारजी की गायकी में यह एकात्म आकार स्वयं मुझे उनकी उम्र के तेहतीसवें वर्ष से प्रतीत होने लगा। इस सिलसिले में कुमारजी का स्पष्टीकरण यह है— हर महफ़िल में मैं कोई नया प्रयोग करने की कोशिश में रहता हूँ और इसीलिये आपको वैसा लगता होगा। इसका अर्थ आज भी वे विकासशील है यही लगाया जा सकता है। आकृतितत्त्व का संवर्द्धन उनके द्वारा और अधिक तथा सतत जारी रहे यही सब की कामना होगी।

कुमारजी ने नई गायकी का भी निर्माण किया है यह इसके पहले भी बताया जा चुका है। और प्रस्तुत संग्रह भी उनके नव निर्माण का ही फल है। 'गायकी' स्वर लेखांकित हो ही नहीं सकती। लिहाजा इस पुस्तक के माध्यम से भी वह समझ में आनेवाली नहीं है। फिर कुमारजी की रचनाओं के बारे में सोचते समय उनकी गायकी का विशेष सन्दर्भ ध्यान में रक्खें बगैर उनका राज भी समझ में नहीं आयेगा अतएव उनकी गायकी का कुछ विवेचन आवश्यक है। और तब, कुमारजी ने नई गायकी का निर्माण किया माने क्या किया? यह नई गायकी के सब पुराने प्रकारों से कहाँ और कैसे भिन्न है? गायकों तथा श्रोताओं द्वारा उसका स्वागत किस प्रकार किया है? इसके बारे में घरानेदार गायकों की प्रतिक्रियाएँ क्या रही हैं? आदि प्रश्न इस संदर्भ में अनायास ही उत्पन्न होते हैं।

कोई भी नई बात निर्माण होती है तो वह पुरानी बातों का सिलसिला लेकर ही बनती है। नई बात, मानों जमीन से कोई सम्बन्ध ही न हो इस प्रकार समूची की समूची, आसमान से नहीं टपक पड़ती। कुमारजी भी 'नये कुछ' के पीछे कितने भी क्यों न रहें हो, पर फिर भी उन्होंने पुरानी बातों से अपना रिश्ता बिलकुल ही तोड़ लिया हो ऐसी बात नहीं है। यही नहीं, बहुश्रुत श्रोता को ये सिलसिले धुंधले ही क्यों न हों, पर नज़र आ जाते हैं। कह सकते हैं कि स्वयं लेखक की पीढ़ी, यानि जो आज उम्र के पचास-पचपन वर्ष पार कर चुके हैं उनकी पीढ़ी, इस माने में बहुश्रुत है। क्योंकि उसने अपने जीवन में पिछली आधी सदी के इतिहास का निर्माण करनेवाले महान कलाकारों को जिनमें अल्लादिया खाँ, रहिमत खाँ, फैयाज़ खाँ, अब्दुल करीम खाँ, मंजी खाँ आदि खाँ-साहब तथा बालकृष्णबुआ इचलकरंजीकर, भास्करबुआ बखले, वझेबुआ, सवाई गंधर्व आदि प्रमुख बुआसाहब हैं, को सुना है। इनमें से कइयों को कुमारजी ने अपने बचपन में सुना है और शेष के बारिसों को वे सुनते चले आ रहे हैं। इन सब के संस्कार कुमारजी की गायकी में कमोबेश दिखाई पड़ते हैं। यह पहले ही बताया जा चुका है कि बचपन में कुमारजी उक्त महानुभावों में से अधिकांशों की सही सही नक़ल उतारा करते थे। बाद में उन्होंने नक़ल उतारना छोड़ दिया। फिर भी बचपन के ये संस्कार कायम रह गये। और ये जो संस्कार उनके मन में बस गये सो गायकी के उन विभिन्न प्रकारों के मर्मों को आत्मसात् कर लेने के कारण ही बसे। फिर देवधरजी की चर्चा रोजाना सुनाई देती थी जिसमें फलाँ फलाँ की अच्छाई यह है इस आशय के भी उल्लेख होते ही थे। हर घराने की गायकी में देवधरजी को रुचनेवाला अंश काफ़ी था तथा स्वयं को जँचनेवाले अंशों को वे विशद कर समझाया भी करते थे। इस प्रकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गायकी के इन विभिन्न प्रकारों तथा गायकों की व्यक्तिगत कला के सारतत्त्व क्या हैं, किसमें समाये हैं, यह सारी बातें अनायास ही कुमारजी जान गये। अतएव कुमारजी की गायकी में प्रत्येक गायकी का 'सारांश' अपने आप गुथ गया। और आज कुमारजी का गाना सुनते समय मेरी पीढ़ी के श्रोताओं को स्थान स्थान पर यह पुराने नाते रिश्ते, धुंधले ही क्यों न हों, दिखाई दे जाते हैं। कुमारजी को सुनते समय विभिन्न अवसरों तथा जगहों पर स्वयं मुझे मंजी खाँ, फैयाज़ खाँ, रहिमत खाँ की याद आ चुकी है। ग्वालियर गायकी का सौम्य ढंग, जयपूर गायकी की लय का लास्य और तानों तथा फिक्रों की पहेलियाँ बुझाने तथा सुलझाने वाली रचना, आगरा गायकी की सम पर आवेशपूर्ण आमद, किराना के किस्म की भले ही न हो पर उसीकी के दर्जे की स्वर की सचाई और उसी की तरह हर स्वर के साथ उसके दायरे में आनेवाले कणों की सूक्ष्म हरकतें आदि विशेषतायें नजर आ ही जाती हैं। लेकिन इस सब के बावजूद उनकी गायकी के चेहरे पर किसी एक निश्चित घराने या गायकी की छाप नहीं दिखाई देती, न किसी पहले के संगीतज्ञ का सील-सिक्का नजर आता है। बहुत बारीकी के साथ देखें तो उसमें जयपूर गायकी की गन्ध कुछ अधिक आयेगी। लेकिन केवल गन्ध। इस प्रकार पिछली पीढ़ी के सब गायक और विभिन्न प्रणालियों के घरानों का सिलसिला यहाँ टूट गया है।

इस की वजह यह है कि इन सब के निचोड़ को लेकर कुमारजी ने कुछ ऐसा एकात्म ढाँचा बनाया है कि वह खास उन्हींका माना जायेगा। कई प्रकार की गायकी और कई घरानों को उन्होंने एक साँचे में ढालकर उनको एकरस बना लिया है। उसमें से अधिकांश अशुद्धतायें निकाल डाली हैं और उसे नये आकार, नई कल्पनायें, नये हेतु और प्रयोजनों से सजाया है। इसलिये उनकी गायकी में एक प्रकार की ताज़गी है, वह खिली-खिली-सी लगती है। उसका नखरा एकदम आधुनिक है और नज़ाकत पागल बना देनेवाली।

गायकी के विभिन्न प्रकारों की विशिष्टताओं को आत्मसात् कर कुमारजी ने उनका एक स्वतंत्र संमिश्र ढाँचा बनाया है और इस प्रकार स्वयं की गायकी समन्वयात्मक (eclectic) बनाई है। अब उनकी गायकी के अंतर्गत रचना की कुछ विशिष्टतायें प्रस्तुत करने का प्रयास कर देखता हूँ।

अन्य चालू गायकी तथा कुमारजी की गायकी में पाया जानेवाला यह फ़र्क़ तत्काल ध्यान में आ जाता है। अब तक का तरीका यह रहा है कि ताल के धीमे-धीमे चलनेवाले एक आवर्तन में जिसे गुत्थी कहा जा सके उस प्रकार की बात बमुश्किल एकाध ही हुआ करती थी। मतलब विलम्बित लय के प्रत्येक आवर्तन में पहले हौले हौले शुरुआत कर ज़रूरत हो तो दो-तीन मात्रायें यूँ ही बीत जाने देने के पश्चात् धीरे धीरे उत्कण्ठन के परमोच्च बिन्दु तक जा पहुँचना और फिर उस के बाद ही उस उत्कण्ठा को विसर्जित करना। उत्कण्ठा की पराकाष्ठा बंदिश के मुखड़े से लगे हुए पहले बिन्दु पर होती थी। और फिर बंदिश का मुखड़ा लेकर समावस्था प्रस्थापित की जाती थी। अर्थात् एक आवर्तन में एक बार उत्कण्ठन तथा एक बार उसका विसर्जन इस प्रकार की प्रक्रिया सामान्यतया होती थी। लेकिन कुमारजी के गाने में एक बार उत्कण्ठन, फिर उससे भी अधिक उत्कण्ठन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और तीसरी बार दूसरी बार से भी अधिक उत्कण्ठन इस तरह का क्रम चलता है। पहले दो उत्कण्ठन अविसर्जित रह जाते हैं और फिर बंदिश का मुखडा लेकर इन उत्कण्ठनों का विसर्जन होता है। माने, हर बार नया उत्कण्ठन, पहले का निराकरण होने के पूर्व ही दूसरा तैयार, और वह मिटने के पहले तीसरा हाजिर, इस प्रकार उत्कण्ठनों की मालिका कुमारजी पेश करते हैं।

कुमारजी की गायकी की एक और विशेषता यह है कि समय के अनुरूप, उनकी तान, अन्य गायकों की अपेक्षा बहुत अधिक तेज है। उनकी आवाज़ सुरीली है ही किन्तु उसकी चपलता अद्भुत है। लिहाजा तान की उनकी फिरत भी उतनी ही तेज़ है यह कहना अनावश्यक है। लेकिन कह सकते हैं कि आजकल के सभी गायकों का एक सामान्य लक्षण तेज़ तान है। फैयाज़ खाँ की गमकदार धीमी तान, साथ ही अल्लादिया खाँ, केसरबाई, मोगुबाई, हीराबाई आदि की भी तान आज के जमाने में पिछड़ गई है। और आज के किसी भी गायक को लें तो प्रतीत होगा कि गमक की तान पर से उसकी श्रद्धा ही उठ गई है। तीस चालिस के इधर के और धीमी गमकदार तान पर श्रद्धा रखनेवाले गायक या गायिका के दर्शन अभी तक लेखक को हुए नहीं हैं। अब जो है या हो चुका है, वह अच्छा है या बुरा है यह सवाल ही यहाँ पैदा नहीं होता। पर कुमारजी की गायकी की यह एक विशेषता है यह नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता।

उत्कण्ठन (टेन्शन) या तनाव निर्माण करने की कुमारजी की करामात भी असाधारण है। अनायास प्रभावशाली तनाव निर्माण करने में वे सिद्धहस्त हैं। कहाँ जा पहुचेंगे इसका कोई ठिकाना नहीं। किन्तु छोटी-छोटी बातों में से भी वे एकदम अप्रत्याशित खिंचाव पैदा कर देते हैं। बंदिश के अक्षरों के उच्चारणे में भी उनकी यह क्षमता दिखाई देती है। बंदिश के शब्दों में से किसी एक अक्षर को लेकर कुछ ऐसे आवेश से दुबारा वे उसका उच्चारण करते हैं कि वहीं जबर्दस्त खिंचाव पैदा हो जाता है, और सुननेवाला चकरा जाता है। बंदिशों का इस प्रकार उच्चारण करनेवाला अन्य कोई मुझे तो नज़र नहीं आया है। और खास तौर से ध्यान में रखने की बात यह है कि उच्चारणजन्य उत्कण्ठन उनकी गायकी में इतनी विपुलता से तथा स्थान स्थान पर बिखरा हुआ है मानों पग पग पर गत्यवरोध निर्माण करनेवाले वर्तमान ज़माने से ही वे स्पर्धा कर रहे हों। उनके संगीत के छोटे मात्रांश में भी संगीतिक घटनायें (म्यूज़िकल इव्हेंट्स) कूट कूट कर भरी होती हैं। अक्षरों के उच्चारण से भी खिंचाव निर्माण करने की कुमारजी की क्षमता इतनी बड़ी है कि उच्चारण की यह पद्धति वे बदल दें तो उनकी गायकी का प्रभाव आधे से भी कम हो जायगा, ऐसा कम-से-कम मुझे तो लगता है। और, इस दृष्टि से कुमारजी ने एक दिशा अलोकित कर समूचे हिंदुस्थानी संगीत को समृद्ध बनाया है और उसका दायरा भी बड़ा कर दिया है।

कुमारजी की गायकी के अन्तर्गत रचना की उक्त विशिष्टतायें ध्यान में आने के बाद मेरे मन में एक प्रश्न हमेशा खड़ा होता है। वह यह कि उनके गाने में आज के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गतिमान् समय का, आपाधापी एवं उलझनों से युक्त समाज-जीवन का प्रतिबिम्ब ही तो कहीं नज़र नहीं आता ? कुमारजी की तान की तेज़ी और आज के जीवन की गति इन दोनों का क्या कोई सम्बन्ध है ? उनके गाने में पाये जानेवाले तनाव और आज के, विशेषतया महायुद्धोत्तर, जीवन के तनाव और पेंच इनका सम्बन्ध क्या केवल काकतालीय ही है ? कहते हैं कि संगीत में समयानुरूप मुहावरा (contemporary idiom) होता है। जीवन में होनेवाला परिवर्तन कला में भी प्रतिबिम्बित होता है यह सूत्र इतने प्रकट रूप से सही लगता है कि उसके बारे में सन्देह क्यों व्यक्त किया जाय सो समझ में नहीं आता। लेकिन जीवन के कौन-से परिवर्तन कला में परावर्तित होते हैं तथा किन इकाइयों के माध्यम से और कैसे होते हैं यह सोचने लगें तो इन प्रश्नों के उत्तर आसानी से नहीं मिलते। साहित्य जैसी कलाओं के सन्दर्भ में इन प्रश्नों के आम तौर पर संतोषजनक उत्तर पा सकना अधिक आसान हो सकता है। संगीत के बारे में इन प्रश्नों के उत्तर देना इस कला के विशिष्ट स्वरूप के कारण ही बेहद कठिन है। और मैं उन उत्तरों को देने का प्रयास भी नहीं करता। लेकिन बार बार लगता है कि कुमारजीकी गायकी में नये ज़माने की, परिवर्तनशील, परिवर्तित युग की विशेष छाया है। संगीत के क्षितिज पर कुमारजी का जब उदय हो रहा था तब यह भावना व्यक्त भी की जा चुकी है। संगीत का धर्म 'ग्लानि-ग्रस्त' है और उससे उसे मुक्त करने के लिए यह श्रीकृष्ण का 'अवतार' ही हुआ है, आदि विचार ऐसे समय सूझने लगते हैं। कुमारजी के बारे में यह सब हो चुका है, कहा जा चुका है। लेकिन ऐसे उद्गार महज मित्रों की श्रद्धा व भक्ति के प्रतीक कहकर टाले नहीं जा सकते। इनमें इससे अलग एवं महत्त्वपूर्ण अर्थ हो ऐसी संभावनाएँ हैं। 'प्रतिबिम्ब' के इस विषय की अधिक खोजबीन किसी के द्वारा की जानी चाहिये। मैं सिर्फ यही कहने की इज़ाजत चाहता हूँ कि कुमारजी के गाने में ऐसा कुछ प्रतिबिम्ब मुझे दिखाई देता है।

कुमारजी की गायकी की एक और विशेषता यह है कि स्वर-लय से सोलह आने ईमानदारी बरतते हुए भी उन्होंने अपने संगीत को आक्रामक बनाया है। उनकी गायकी इतनी युयुत्सु तथा विजिगीषु हो इसका कारण है उनका असाधारण आवेश और आवेग। अब तक इतिहास कुछ ऐसा रहा है कि गायकी आक्रामक बनाने हेतु स्वर की सचाई की ओर कुछ उदासीनता अपनाई जाती थी। एक मान्य घराने में आक्रामकता का पीछा करते करते स्वरों की कुछ उपेक्षा करनी पड़ी और फिर नाक से गाना, अथवा खुरच कर आवाज मिलाना आदि तरीके उस घराने की गायकी में रूढ़ हो गये। इसका नतीजा हम आज भी देखते ही हैं। लेकिन कुमारजी की खासियत है कि आक्रामकता हासिल करने के लिये न तो उन्हें स्वरों के प्रति बेईमानी करनी पड़ी और न लय से एकाकार होने से जी चुराना पड़ा। और फिर भी वे आक्रामकता का कीर्तिमान स्थापित कर पाये। असामान्य आवेश के लिये आन्तरिक प्रेरणा भी उतनी ही शक्तिशाली हो यह आवश्यक है। कुमारजी के संगीत की सारी शक्ति एवं क्षमता इस शक्तिशाली प्रेरणा में ही समाई हुई है। लेकिन सवाल उपस्थित होता है कि प्रेरणा में पायी जानेवाली असामान्य शक्ति का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूल कारण आख़िर क्या हो सकता है? कोई भी समर्थ अभिव्यक्ति उतनी ही समर्थ प्रेरणा के बिना सम्भव हो ही नहीं सकती।

कुमारजी के संगीत में पाया जानेवाला अनन्यसाधारण आवेश या vitality जन्मजात तो है ही लेकिन मेरी समझ के अनुसार उसका पोषण लोकगीतों के अनुशीलन के कारण ही हो पाया है। यह विचार, सम्भव है, तर्कसंगत न हो पर अन्य कोई कारण कम-से-कम मुझे ज्ञात नहीं है। संगीत की बहती गंगा से स्फूर्ति ग्रहण करना एक बात है तथा उसे ग्रहण कर उसके अलावा उसके उद्‌गम का जीवन-रस पीना बिलकुल अलग है। दोनों किनारों को छेक कर बहनेवाली संगीत-धारा में कई छोटे प्रवाह मिले रहते हैं यह बात सही है। किन्तु साथ ही उसमें कीचड़-कूड़ा भी बहता आता है और गायकों के मन-मस्तिष्क पर इसका भी असर होता है। लेकिन गंगोत्री के निर्मल सोते में जो अपना कण्ठ भिगो ले उसका तेज और सत्त्व श्रेष्ठ ही होगा इसमें अचरज कैसा? लोकगीत song of the soil ही होता है। अशोधित भले ही हो, पर उसकी जीवन-शक्ति अन्य किसी से भी अधिक होती है। क्योंकि स्वयं धरती के जीवनसत्त्व ही वह सोख लेता है। इन अनगढ़ लोकगीतों का स्वर लगाने का तरीका, आघात और ढंग कुछ अलग ही होता है। और इसलिये कुमारजी के संगीत के ठोसपन vitality को धार प्रदान करने का श्रेय लोकसंगीत में उनके अवगाहन को ही देना होगा। उनके गाने में जो कई 'पुकार' और 'आघात' हैं वे लोकगीतों से ही आये हैं। इसका अनुभव कोई भी उनकी एकाध महफ़िल सुनकर आसानी से प्राप्त कर सकता है।

संगीत की सृजनशक्ति नये स्वरसंयोग ज़माने में निहित होती है। नये स्वरसंयोगों की कल्पनायें सूझना ही संगीत के क्षेत्र की प्रतिभा है। कुमारजी के गाने की उभरी हुई विशिष्टता है कि उन्हें नई एवं तेजस्वी कल्पनाएँ बेहद तेज़ी से और बहुत सूझती हैं।

और कुल मिलाकर कुमारजी के गाने का रंग अनोखा, है exotic है। उनकी गायकी अलग प्रतीत होती है सो खासकर इसी कारण से, ऐसा लगता है। उनके गाने का मुख्य आकर्षण इसीमें समाया हुआ है। हम जो स्वर एवं स्वरावली सुन रहे हैं वह पहले कभी सुनी ही नहीं थी इतना नयापन एवं इतनी ताज़गी होती है उनमें। वे केवल नई हैं मात्र इतना ही मैं नहीं कहना चाहता। क्योंकि औसत प्रतिभावाला गायक भी हर महफ़िल में कुछ-न-कुछ नया प्रस्तुत करता ही है। कुमारजी की नवीनता में भी एक अलग जोश, एक अलग भूल-भुलैय्या होती है। वह संगीत, ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी अन्य भूभाग से आया है और फिर भी एक रहस्यमय ढंग से दिल के तारों को छेड़ता है। कुमारजी के गाने में जो चेतनता है, जो vitality है उसका कारण क्या यही हो सकता है?

संक्षेप में, मौलिक मानसिक क्षमता, भूमि की प्रसवशक्ति तथा सत्त्व, अब तक की परिष्कृत कुल गायकी का सार रूप मनोहारी मिश्रण कुमारजी के संगीत में है। इसके साथ ही समय की पुकार की प्रतिध्वनि भी उसमें गूँजती है।

समय जैसे जैसे बदलेगा, संगीत में भी उसी के अनुरूप परिवर्तन होगा और चूँकि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिछले पन्द्रह-बीस वर्षों से समय की गति एकदम बेहद तेज़ हो गई है, लिहाजा उसका प्रतिबिम्ब संगीत में दिखाई देगा ही, इस तत्त्व का प्रमाण कुमारजी की गायकी में मिलता है। कुमारजी की तो खैर बात ही अलग है। उनके संगीत का प्रवास स्वयं उनके द्वारा, लीक से हटकर निर्मित मार्ग से ही हुआ है। पर जिन्होंने पूर्वपरम्परानुरूप शिक्षा पाई और उसी परम्परा में जो बडे हुए उनमें भी यह परिवर्तन होता चलता है और वह जान भी पड़ता है। इसका उदाहरण देना हो तो श्री भीमसेन जोशी का दिया जा सकता है। किराना घराने की भरपूर तालीम और उसका अनुशासन उनके ख़ून में समाया हुआ है। लेकिन समय की नवीन गति का परिणाम उन पर भी हुआ है। कट्टरता के बन्धन उन्होंने काफ़ी ढीले कर दिये हैं। और कुछ तो बिलकुल ही छोड़ दिये हैं। और नये समय के नये मूल्य अपना लिये हैं। भिन्न मोड़ की हो तो भी चमकीली तेज़ ताना उनकी भी विशिष्टता बन गई है। मूल किराना गायकी में उन्होंने इतना फ़र्क़ कर डाला है कि कइयों की शिकायत है कि उनकी गायकी से किराना घराने की विशिष्टता नष्ट हो गई है। इतना परिवर्तन कट्टर परम्पराप्रियता मंजूर नहीं करती। लेकिन शायद यही चीज, माने वर्तमान घराने से संवादी परिवर्तन ही, उनके भारी यश का कारण है ऐसा मुझे लगता है।

बात चल पड़ी है इसलिये कहता हूँ। आजकल के गायकों में कुमारजी और श्री भीमसेन जोशी इन दोनों ने ही बड़ा यश अर्जित किया है। और दोनों के उदाहरण तो बहुत ही उद्बोधक हैं। दोनों ही की गायकी कालमान के अनुरूप ही है। किन्तु कला का प्रवास इन दोनों ने बिलकुल विरोधी दिशाओं से किया है। कुमारजी के प्रवास का प्रारम्भ विद्रोह से हुआ, माने घरानेदार गायकी के इनकार से ही वे चले। तो भीमसेनजी का प्रारम्भ परम्परागत कट्टर गायकी से हुआ। यही नहीं बल्कि वह उनके रक्त में घुलमिल गई। कुमारजी का अगला प्रवास स्वनिर्मित कलात्मक बन्धनों को स्वीकार करते हुए हुआ तो भीमसेन स्वयं को पुराने बन्धनों में से मुक्त करने के प्रयास में लगे। मतलब कुमारजी का प्रवास 'स्वतंत्रता से बन्धन की ओर' जा रहा है तो भीमसेन बन्धन से स्वतंत्रता की ओर जा रहे हैं। कुमारजी स्वयं की भूमिका का वर्णन 'बन्धनयुक्त स्वतंत्रता' करते हैं और भीमसेन किन शब्दों में करते हैं सो उन्होंने आज तक कहा नहीं है। लेकिन उनकी कृति से वह स्वतंत्रतायुक्त बन्धन होगी यही प्रतीत होता है। ये दोनों कलाकार इस प्रकार आमने-सामने नज़र आते हैं। किन्तु उनके प्रवास के मार्ग एकरूप न होकर समानान्तर ही रहेंगे यह स्पष्ट है क्योंकि प्रत्येक की आवाज़, धारणा, मनोवृत्ति, प्रतिभा और कुल मिलाकर व्यक्तित्व ही भिन्न है।

क्या कुमारजी की नई गायकी जड़ पकड़ पायेगी? मतलब क्या वह एक 'घराने' के रूप में प्रस्थापित हो सकेगी? प्रश्न बहुत मुश्किल है। कभी ऐसा लगता है कि उनके गुणों की समृद्धि अधिकांशतया व्यक्तिगत ही है। लिहाजा उसका 'कायदा' नहीं हो सकेगा। ऐसी आवाज़ तथा प्रतिभा के लोग बिरले ही होते हैं। कम-से-कम अब तक बिरले ही रहे हैं। रहिमत खाँसाहब का घराना नहीं बन पाया। भास्करबुआ का नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बना। और नाट्य संगीत में नारायणराव बालगंधर्व का भी कोई घराना कायम नहीं हुआ। फिर भी कुमारजी की आवाज़ से, उसकी चपलता से एक हद तक सहधर्मी, आवाज़ के गायक आजकल नजर आते हैं। ऐसे शिष्य-प्रशिष्य उन्हें मिलें तो निश्चय ही उनका स्वतंत्र घराना कायम हो सकेगा।

घराना कायम होगा या नहीं यह सवाल इस प्रकार संदेहास्पद हो तो भी एक श्रेष्ठ कला के नाते उनकी गायकी अभिजात अवश्य ही मानी जायेगी, प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी। आज भी उसे वह प्रतिष्ठा काफ़ी कुछ मिल चुकी है। काफ़ी कुछ कहने की वजह यह है कि आज भी एक ऐसा घरानेदार वर्ग है कि जो उनके संगीत से स्तिमित होता है, वे पूर्वजन्मों के गुण लेकर पैदा हुए हैं यह मानता है, उनके नवनिर्माण के प्रति आदर रखता है, उन्हें एक 'जीनियस' के रूप में स्वीकार करता है, फिर भी दबी ज़बान से शिकायत भी करता है कि उनके संगीत से हमें तस्कीन नहीं मिलती। इस सिलसिले में एक बात हमेशा ध्यान में रखनी होगी कि किसी भी नवीनता अथवा नवनिर्माण को सामान्यतया बीस-पच्चीस वर्ष यानि मोटे तौर से एक पीढ़ी का अर्सा उम्मीदवारी में गुज़ारना पड़ता है। यह नवनिर्माण का अलिखित कानून है। इस दृष्टि से कुमारजी की उम्मीदवारी की अवधी कब से गिनी जाये यह भी एक सवाल है। मेरी राय में उसकी शुरुआत सन १९४७ से यानि जब उन्हें साक्षात्कार हुआ कि 'मुझे गाना आ गया' तब से गिनी जानी चाहिये। माने उम्मीदवारी के उनके सत्रह वर्ष बीत चुके हैं और आगामी पाँच-दस वर्षों में उनकी गायकी अपने आप कायम हो जायेगी ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

उम्मीदवारी के इस अर्से में नये अनुभव आते हैं और कला (आकृति तत्त्व) में उसी हिसाब से सुधार होता चलता है। मन-ही-मन निर्धारित हिसाब बार बार जाँचे परखे जाते हैं। बदलते समय की आहट मिलती है। सुननेवालों की अपेक्षाओं की जानकारी भी बढ़ती जाती है। स्वयं की कला तथा गायकी के स्थिर मूल्य क्या तथा कौनसे हैं, यह भी समझ में आता है। और ऐन जवानी की भड़कीली अतिरंजनापूर्ण तथा अविवेकी भावना काफी सौम्य होने लगती है। जैसे जैसे यह प्रक्रिया होती है वैसे वैसे इस नई गायकी में स्वयं गायक ही परिवर्तन करता चलता है। इस के बाद ही वह नवीन गायकी निश्चित होती है और उसे अभिजात्य की प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। तब तक जो रूठा हुआ तथा असंतुष्ट वर्ग होता है वह भी समय के साथ मिटता जाता है।

पिछले पाँच-पचास वर्षों में हुए अल्लादिया खाँ तथा अब्दुल करीम खाँ जैसे नव निर्माताओं को भी इस प्रक्रिया तथा उम्मीदवारी के अर्से से गुजरना पड़ा है यह तथ्य लेखक की पीढ़ी को अच्छी तरह से ज्ञात है। पहले के कुछ वर्ष उपहास तथा तिरस्कार फिर उनकी गायकी की समर्थता का धुंधला सन्देह, फिर नये आविष्कार की जिज्ञासा, उसके बाद उसके विशिष्ट आनन्द की अनुभूति व जानकारी और तब कहीं मान्यता एवं प्रतिष्ठा इस प्रवास से कोई भी नवनिर्माता बच नहीं पाया। इसकी तुलना में कहना होगा कि कुमारजी की यात्रा बहुत ही सुखपूर्वक हुई है। उपहास और तिरस्कार का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो प्रश्न ही नहीं बल्कि प्रारम्भ से ही उनको प्रशंसा प्राप्त होती रही। श्रोताओं ने उन्हें सिर पर उठा लिया और जो आलोचना हुई वह भी बेहद सौम्य स्वरूप की थी।

लेखक की पीढ़ी अथवा जो परंपरा के अनुसार शिक्षित है वह युवा वर्ग भी कुमारजी के संगीत से 'खुश' न हो इस में अचरज की कोई बात नहीं। पचीस वर्षों से भी अधिक समय से मैं उनकी सराहना करता चला आ रहा हूँ फिर भी स्वयं मुझे उनके गाने में खास आकर्षण प्रतीत नहीं होता था। कोई भी नई बात समझ लेनी पड़ती है, दिमाग को कुछ खपाना पड़ता है। नई पद्धति की कुछ बंदिशें गले में उतारने की कोशिश करनी पड़ती है। तथा उनकी नई राहों को कुछ आत्मसात करना पड़ता है। यह सब कुछ मैंने भी जानबूझकर नहीं किया। अभी अभी तक मेरी उत्सुकता भी जागृत नहीं थी। पर पिछले कुछ वर्षों से मेरे खास दोस्तों पर कुमारजी कुछ इस तरह से हावी हो गये कि स्वयं को अछूता रख ही नहीं पाया। मित्रों के घर जब भी कुमारजी आकर ठहरते, वह एक त्योहार माना जाता था। मित्रों के यहाँ कुमारजी का गाना होता ही था और ऐसे सब अवसरों पर मैं भी हाज़िर रहता था। इसलिये कुमारजी की गायकी से अधिकाधिक परिचय होता गया। बाद बाद में कुमारजी मेरे भी घर पर मुकाम करने लगे और मेरे बच्चे भी वह त्योहार-समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाने लगे। और उनके मन पर कुमारजी की गायकी का असर इस कदर ज़बर्दस्त है कि जिसका कोई हिसाब नहीं है। वे उनकी बंदिशें रातदिन गुनगुनाया करते हैं। मेरे घर पर कुमारजी ने जब इस प्रकार आक्रमण कर दिया तब मुझे उनकी गायकी का ज़ायका अधिकाधिक समझ में आने लगा और अब तो बात यह भूमिका लिखने तक बढ़ चुकी है। मतलब यह कि कुमारजी की गायकी की विशेषतायें समझ में आने के लिये मैंने जान-बूझकर कोशिशें की हैं अथवा मेरे द्वारा हो गई हैं। तो, आलोचक भी इस नई गायकी, नये युग तथा उसके नये मूल्य समझ पाने के लिये जब तक स्वयं के मस्तिष्क तथा कण्ठ को कष्ट नहीं देंगे उसकी विशिष्ट कलात्मकता समझ नहीं पायेंगे। और शायद, मेरे जैसे भारी गले में वह उतर न भी पाये तो भी उसके भिन्न एवं विशिष्ट-स्वाद का चाव अवश्य लग जायेगा।

इस सारे विवेचन के पश्चात् भी मेरे मन में एक बात खटक रही है कि कुमारजी की गायकी की आत्मा में उँगली रखकर बता नहीं पाया हूँ। उनकी गायकी में ही पारे के समान कुछ ऐसा गुण है कि उसकी आभा मन को मोह लेती है, चपलता आँखों में समा जाती है और जब तक हाथ में है उसका वजन भी महसूस होता है, लेकिन उसे मुट्ठी में पकड़ लेना बड़ा मुश्किल होता है। पकड़ में न आने की, फिसलकर निकल जाने की उसकी खूबी भी बेहद है। और एक बार छूट निकलने पर हाथ में कुछ भी शेष नहीं रहता। छूट निकलने की उसकी प्रक्रिया भी इतनी अजीबोगरीब है कि किस दिशा से वह निकल जायेगी इसका कोई अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। कुमारजी की गायकी mercurial है। जब तक सुनते रहो उसकी तेजस्विता से सुननेवाला अभिभूत हो जाता है, उसके वज़न का भी अनुभव करता है। लेकिन बाद में उसकी चर्चा करने के लिये हाथ में कुछ नहीं होता। क्योंकि उसकी चपलता भी उतनी ही अप्रत्याशित होती है। अब आगे क्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होगा, हरकत या तान, या बोलतान कुछ भी कहना, असम्भव है। फिर वह किस प्रकार की होगी इसका अनुमान तो लगाया ही नहीं जा सकता। मेरी तो खैर बात छोड़िये मेरा सांगीतिक जीवन एक विशिष्ट मार्ग से ही गया है, जो भी सीखा है सो परम्परागत रूप में। मन पर जो संस्कार हैं सो पहली पीढ़ी के हैं। फिर थोड़ा-बहुत गा भी लेता हूँ तो भी गायक ही हूँ! लेकिन कुमारजी के साथ संगत करनेवाले वादक भी इस कठिनाई को अनुभव करते हैं। संगत करनेवाला वादक स्वभाव से ही सूक्ष्म दृष्टिवाला होता है। क्योंकि उसे तो प्रत्येक स्वर पकड़ना पड़ता है। उसे भी जब यह कठिनाई अनुभव होती है तो मुझे भी अनुभव हुई इसमें आश्चर्य नहीं। एक वादक ने मुझे बताया है कि अन्य किसी की संगत करते समय दस में से छे-सात अन्दाज़ सही उतरते हैं लेकिन कुमारजी की संगत करते समय मुमकिन है कि दस के दस अन्दाज़ ग़लत साबित हों। यानि उनकी गायकी, बंसी में नहीं अटकती। लेकिन अचरज की बात यह है कि युवक गायकों के गले में वह एक हद तक उतर जाती है। रसिकों को रिझाती है और सुनने-वालों को वह सम्मोहित कर लेती है।

कुमारजी को मैं इतने वर्षों से निहारता रहा हूँ, पूर्व जन्मों के गुणों का उनके द्वारा किया गया विकास देखकर प्रसन्नता अनुभव करता रहा हूँ और मैंने पाया है कि वे कलाकार के नाते बड़े हैं उसी प्रकार मानव के नाते भी बड़े हैं। कुमारजी की रोजमर्रा की बोलचाल भी मधुर, सुसंस्कृत और चतुरता-भरी होती है। इस हद तक कि किसी समाज और मजमें में उनका व्यक्तित्व उभर कर नज़र आता है। उनमें कई खूबियाँ हैं, अनेक हुनर हैं। किसी भी बिकट परिस्थिति का मुकाबला ठण्डे दिमाग से करने की मानसिक शक्ति है, तथा सभी पहलुओं से बात को सोच विचार कर तत्काल सही निर्णय करने की बौद्धिक क्षमता भी है। सूझबूझवाले सयाने भी जहाँ गड़बड़ा जायें वहाँ कुमारजी सही निर्णय पर पहुँचते हैं, यह अनुभवसिद्ध है। तथा सामान्यतया जो शारीरिक व्याधि प्राणलेवा होती है उसे समेट कर उन्होंने अपना सन्तुलन बनाये रक्खा है। अन्तर में व्यथा समेटे हुए तथा बंदिशों में 'शोक' नामधारी यह व्यक्ति अत्यन्त धीरज वाला है। और कलाकार स्वयं को कला के हेतु पूरी तरह समर्पित कर दे किन्तु जीवन में बह न जाये, सन्तुलन न छोड़े यह आचरण धर्म भी वह निभाते रहे हैं।

कुमारजी के सारे कृतित्व की जड़ में उनकी सौन्दर्यशोधक दृष्टि तथा विशेष तीव्र प्रकार की संवेदनक्षमता है। इस संवेदनक्षमता के कारण ही जहाँ जहाँ जिस जिस गायक में तथा जिस जिस गायकी में उन्हें एक भी गुण दिखाई दिया वहाँ वहाँ से उसे उन्होंने सीख लिया। स्वयं को मिले किंचित् लाभ का भी ऋण अत्यन्त खुले दिल से मान्य करते समय उनका अहंकार कभी भी उनको नहीं रोकता। और उनकी सौन्दर्य-वेधी दृष्टि मात्र संगीत की ओर ही लगी रहती हो सो नहीं बल्कि समूचे नादविश्व की ओर लगी रहती है। मात्र मानवी स्वर ही नहीं बल्कि प्रकृति के भिन्न नाद भी, किसी भीखमंगे के स्वरों का मजा तो उन्हें नज़र आता ही है लेकिन किसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जंगली पक्षी के स्वर का भी। और तब उस आवाज का पीछा करनेवाले उनके बावरे कान उन्हें जंगलों में भी घसीट ले जाते हैं। इस बावरेपन के कारण ही वे लोकगीतों की ओर खींचे और सो इस हद तक कि विभिन्न प्रदेशों के लोकगीतों को वे पुराने परिचित मित्रों की तरह पहचान सकते हैं, किसी खटके के आधार पर वह गीत किस प्रदेश का है यह वे बता सकते हैं, लोकगीत गाते समय कोई, ग़लत आघात करे तो वे उसे सुधार सकते हैं। इस बावरेपन के कारण ही अनन्त प्रकार के भजन वे सुन चुके हैं, उनका विपुल आस्वाद ले चुके हैं तथा उनके स्वर्णकण मस्तिष्क में संजो रक्खे हैं। उनकी संवेदनक्षमता ने उन्हें बहुत समृद्ध बनाया है।

और यह कह चुकने के पश्चात् संगीत पर उनकी असीम एकमार्गी श्रद्धा है यह अलग से कहने की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि वे उसी विश्व में लीन हैं। उनके जीवन की इतिकर्तव्यता अन्य नहीं है।

उन्होंने स्वयं की गायकी का जो विकास एवं विस्तार किया है उससे मैं प्रभावित हुआ हूँ तथा उनकी नई गायकी, नये राग एवं नई बंदिशों ने मुझे आकर्षित किया है। उनकी गायकी में आकारतत्त्व का उभार मैं अपनी आँखों से देखता और कानों से सुनता चला आ रहा हूँ। उसकी विकासक्षमता भी मुझे अभिभूत कर डालती है। "मैं हमेशा कुछ न कुछ नया प्रयोग करने की फिराक में रहता हूँ" यह उनका वाक्य मेरे कानों में हमेशा गूँजता रहता है। गायकी के सभी अंगों का विकास चाहने वाले इस कलाकार को यह एहसास है कि जो करना है वह अभी आगे ही है।

इस सन्दर्भ में उनकी एक तुकबन्दी मुझे याद आती है कि जिसका आशय है— "मैं जिसके पीछे पड़ा था, अब उसके आगे हूँ, पर जब मैं चारों ओर देखता हूँ तब मुझे नज़र आता है कि जो कुछ है वह सब आगे ही है।" इतनी मंज़िलें पार करने के बावजूद भी, जो कुछ हासिल करने लायक है वह अभी आगे है यह अनुभूति मन में बराबर बनाये रखनेवाला कलाकार शायद ही कभी नज़र आता है। इसी में उनकी यशस्विता का रहस्य तथा भावी विकास का आश्वासन अनायास ही निहित है। कुमारजी का भावी प्रवास तथा प्रस्तुत संकलन अधिकाधिक यश अर्जित करे इस हार्दिक कामना के साथ यह प्रदीर्घ भूमिका यहीं समाप्त करना उचित होगा।

छंदोवती
४८४/६८ मित्रमंडल कालनी
पर्वतीदर्शन, पूना ९

—वा० ह० देशपाण्डे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरांकन संकेतों का परिचय

१. री ग ध नि इन स्वरों के नीचे '–' इस प्रकार डॅश का चिन्ह हो तो वे स्वर कोमल हो जाते हैं। जैसे :—री ग ध नि। यदि यह चिन्ह न हो तो वे स्वर शुद्ध या तीव्र रहते हैं।

२. कोमल या शुद्ध मध्यम को कोई चिन्ह नहीं। तीव्र मध्यम के ऊपर '।' ऐसी खड़ी रेषा का चिन्ह होगा। जैसे : 'म'।

३. मंद्र सप्तक के स्वरों के नीचे '.' इस प्रकार बिंदु का चिन्ह होगा। जैसे : नि़ ध़ प़ म़।

४. तार सप्तक के स्वरों के ऊपर '.' इस प्रकार बिंदु का चिन्ह होगा। जैसे : सां रीं गं मं पं।

५. मध्य सप्तक के स्वरों के ऊपर या नीचे कोई चिन्ह न होगा। जैसे। सा री ग म प ध नि।

६. ‿ इस अर्धचंद्र या कमानी के चिन्ह के अंदर अंकित स्वर एक मात्रा की अवधि में होते हैं जैसे : मप मपध मपध–मपधनि मपधनि, सांनिधप।

७. ‾ इस प्रकार उलटा अर्धचंद्र या कमान का चिन्ह जिन स्वरों पर हो वहाँ एक स्वर से दूसरे स्वर पर "मींड" लेकर या कमानी बनाकर गाना चाहिये।

८. स्वरों को अलंकारिक बनाने के लिए तथा रागरूप शुद्ध रखने के लिये जो स्वर होते हैं वे स्वरों के ऊपर बाईं ओर दिखाये गये हैं। इन्हें 'कण' स्वर भी कहते हैं। जैसे : सा री ग (ग) और प ध सां (सां)।

९. जिस स्वर के आगे '–' इस प्रकार डॅश हो वह चिन्ह पीछे के स्वर को आगे बढ़ाने के लिए होता है। जैसे : म ---।

१०. गीत के शब्दों के अक्षर का मात्रा-काल बढ़ाने के लिए 'ऽ' इस अवग्रह चिन्ह का उपयोग किया गया है। जैसे। आ ऽ उं ऽ रे ऽऽ।

११. ताल की पहली मात्रा जिसे 'सम्' कहते हैं वह "×" इस चिन्ह से दर्शाई गई है। इसी प्रकार ताल की खाली याने ताल का आधा हिस्सा होने के बाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो दूसरा आधा हिस्सा शुरू होता है इसे '०' शून्य चिन्ह से सूचित किया गया है।

१२. जो ताल जितनी मात्राओंका होगा और उसका ताल विभाजन या खंड जैसे होंगे उसके अनुसार 'बंदिशें' या गीत स्वरबद्ध किये जाते हैं और लिखे जाते हैं।

१३. स्वरों के नीचे '–' इस प्रकार डॅश हो और ऊपर '।' रेखा हो वह स्वर कोमल और शुद्ध स्वर का बीच का अंतर होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तालों का परिचय

रूपक ताल

रूपक ताल सात मात्राओंका होता है। इस ताल में तीन खंड होते हैं। पहला खंड तीन मात्राओंका तथा दूसरा और तीसरा खंड दो, दो मात्राओंका होता है। पहली मात्रा पर सम है। चौथी और छठी मात्रा पर आघात है। इस ताल का स्वभाव ही मध्य लय है।

१	२	३	४	५	६	७
तिन्	तिन्	ना	धी	ना	धी	ना
×			२		३	

झपताल

झपताल दस मात्राओं का होता है। इस ताल में चार खंड होते हैं। पहले और तीसरे खंड में दो, दो मात्राएँ होती हैं। दूसरे और चौथे खंड में तीन, तीन मात्राएँ होती हैं। पहली मात्रापर सम और छठी मात्रा पर खाली है। तीसरी तथा आठवीं मात्रा पर आघात है। इस ताल का विशेष गुण ठाय और मध्यलय है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		२			०		३		

एकताल

एकताल बारह मात्राओं का होता है। इस ताल में छः खंड होते हैं। प्रत्येक खंड दो मात्राओं का होता है। पहली मात्रा पर सम और सातवीं मात्रा पर खाली है। पांचवीं, नौवीं तथा ग्यारहवीं मात्रा पर आघात है। विलंबित, ठाय, मध्य तथा द्रुतलय इस ताल का विशेष गुण है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धिन्	धिन्	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धिन्	ना
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रिताल

त्रिताल सोलह मात्राओं का ताल है। इस ताल में चार खंड होते हैं। प्रत्येक खंड चार मात्राओं का है। पहली मात्रा पर सम और नौवीं मात्रा पर खाली है। पांचवीं तथा तेरहवी मात्रा पर आघात है। इस ताल का विशेष गुण विलंबित, ठाय, मध्य तथा द्रुतलय है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	धिन्	धिन्	धा	धा	धिन्	धिन्	धा	धा	तिन्	तिन्	ता	ता	धिन्	धिन्	धा
×				२				०				३			

छकताल

यह ताल चौबीस मात्राओं का है। छकताल में चार खंड हैं। प्रत्येक खंड छः मात्राओं का होता है। पहली मात्रा पर सम और तेरहवीं मात्रा पर खाली है। सातवीं और उन्नीसवीं मात्रा पर आघात है। विलंबित और ठाय लय ही इस ताल का विशेष गुण है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	–	धिन्	–	धा	–	धा	–	धिन्	–	धा	–
×						२					

१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
धा	–	तिन्	–	ता	–	ता	–	धिन्	–	धा	–
०						३					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनूपरागविलास

पारम्परिक राग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तोडी, ताल त्रिताल, लय मध्य

देवो मोहे धीर माई सरसती देवी
तुमरो गुन रटरट दिन जुग बीते ॥
शोक मन माँगे आसीस तोरी
एक बार मोहे आन मिलोरी ॥

स्थाई

नि

मं	धनि	सां	निध	मं	ध	–	ध	नि	ध	मं	–	ध	सां	–	सां, नि
दे	वो	ऽ ऽ	मो	ऽ हे	धी	ऽ	र	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ ऽ	ई,	स
	३				×				२				०		
ध	मं	री	ग	री	–	सा	–	सा	री	ग	–	मं	मं	ध	नि
र	स	ती	ऽ	दे	ऽ	वी	ऽ	तु	म	रो	ऽ	गु	न	र	ट
३				×				२				०			
ध	मं	री	ग	री	सा	–	–	सारीगमं		गरी, गमं		धनी धमं			
र	ट	दि	न	जु	ग	ऽ	ऽ	बी ऽ ऽ ऽ		ऽऽ, ऽऽ		ते ऽ ऽ ऽ			
३				×				२							
धनी सां रीं				गंगं रीं सां				नी ध मं ग		रीसारीग,		मं			
ऽ ऽ ऽ ऽ				ऽ ऽ ऽ ऽ				ऽ ऽ ऽ ऽ		ऽ ऽ ऽ ऽ,		दे			
				०											

अंतरा

मं	ध	सां	सां	सां	रीं	–	सां	ध	–	सां	सां	–	गं	रीं	सां गं
शो	क	ऽ	म	न	मां	ऽ	गे	आ	ऽ	सी	स	ऽ	तो	ऽ	री ए
	३				×				२				०		
रीं	सां	–	नि	ध	ध	ध	मं	सारीगमं		गरी, गमं		धनीधमं		धनीसांरी	
क	बा	ऽ	र	मो	हे	आ	न	मि ऽऽऽ		ऽऽ, ऽऽ		ऽऽ ऽऽ		लो ऽऽऽ	
३				×				२							
गंगं रीं सां				नीधमंग				रेसारीग, मं							
ऽऽ री ऽ				ऽऽऽऽ				ऽऽऽऽ दे							
०															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तोडी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

पूछो काय मोसे, मोसे रे
आज शुभ दिन है राजन
मन में भयो आनंद रंगीला रे ॥
कुसुम रंग छायो केसूला
बन में जारे तू लेता आजो रे ॥

स्थाई

			नि																				
सां	सां	ध	–ध	मं	ध	–	–	–	मं	–	ध	मं	धनि	सां	निध	सां							
पू	छो	का	ऽय	मो	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	से	रेऽ	ऽ	ऽऽ,	पू							
	३				×				२				०										
			नि													नि							
सां	ध	–ध	मं	ध	–	–	–	मं	–	ध	मं	धनि	सां	री	ग								
छो	का	ऽय	मो	से	ऽ	ऽ	–	ऽ	ऽ	मो	से	रेऽ	ऽ	ऽ,	आ								
३				×				२				०											
–	री	–	सा	सा	–	सा	सारी	ग	गमं	री	ग	री	–	–,	सा								
ऽ	ज	ऽ	शु	भ	ऽ	दि	नऽ	है	ऽऽ	रा	ज	न	ऽ	ऽ,	म								
३				×				२				०											
सा				ध																			
री	ग	–	मं	मं	ध	–	नि	ध	ध	निसां	सां	रींसांनि	धपमं	गरीसा,	सां								
न	में	ऽ	म	यो	आ	ऽ	नं	द	रं	गीऽ	ला	रेऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ,	पू								
३				×				२				०											

अंतरा

ग	मं	ध	निनि	धमं	धनि	सां	–	–	सां	–	सां	सां	रीं	सां	–,	सा							
कु	सु	म	रंऽ	गऽ	छाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	के	सू	ला	ऽ	ऽ,	ब							
	३				×				२				०										
											नि												
री	ग	–	री	ग	मं	ध	मं	ध	सां	–	सां	रींसां	निध	पमं,	ध								
न	में	ऽ	जा	रे	तू	ऽ	ले	ता	आ	ऽ	जो	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ,	पू								
३				×				२				०											

२ : अनूपरागविलास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिलासखानी तोडी, ताल त्रिताल, लय मध्य

नयन में जल भर आये देखन तोहे
काहे पिया नहीं देत दरस मोहे ॥
शोक मन छाये, याद तरसाये
कैसे धरूं धीर, देवो दरस मोहे ॥

स्थाई

ग॒ री॒ –नि॒ ध॒	नि॒ सा –री॒ ग॒	ग॒ – ग॒ री॒	ग॒ री॒ सा सा
न य ऽन में	ज ल ऽम र	आ ऽ ये दे	ख न तो हे
०	३	×	२
ग॒ री॒ सा –	नि॒ सा –री॒ ग॒	रीग॒ म ग॒ री॒	गं॒ री॒ –सा सा
का ऽ हे ऽ	पि या ऽन हीं	देऽ ऽ त द	र स ऽमो हे
०	३	×	२

अंतरा

ग॒ री॒ सा –री॒	ग॒ प ध॒नि॒ – – ध॒	सां – सां रीं	सां गं॒ रीं सां
शो ऽ क ऽम	न छा ऽऽ ऽऽ ये	या ऽ द त	र सा ऽ ये
०	३	×	२
सांरीं गं॒ रीं नि॒	सां ध॒ – म	पध॒ नि॒ ध॒ म	ग॒ रीग॒ –री॒ सा
कैऽ ऽ से ध	रूं धी ऽ र	देऽ ऽ वो द	र सऽ ऽमो हे
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अहीरभैरव, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

कैसे मनालूँ रे
बुझावुँ अब कस तोहे रे
समुझाय हारी हारी रे ॥
पूछो ना मोसे, अबरे पिया
करो ना संदेहा मोपेंरे
समुझाय हारी हारी रे ॥

स्थाई

																		ग					
प	ध	नि॒सां	धप	मप	म	म	–	–	–	पम	गम	री॒	सा	ग	–	म,	म
कै	ऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽऽ	म	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	लूँ	ऽ	रे	ऽ	ऽ,	बु
		३				×				२				०			
		धप	पम	गम	गरी॒	री॒सा	–	–	सा	ग	म	ध	–	धम	म	–,	ध़
		झाऽ	बुँऽ	ऽऽ	अऽ	ब	ऽ	ऽ	ऽ	क	स	तो	हे	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ, स
		३				×					२				०		
		नि॒	सा	–	री॒	ग	–	म	–	मप	धप,	पध	नि॒ध	धनि॒	सांसां	नि॒ध,	नि॒सां
		मु	झा	ऽ	य	हा	ऽ	री	ऽ	हाऽ	ऽऽ,	रीऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ,	कैऽ
		३				×				२				०			
		–	धप	मप	म												
		ऽ	सेऽ	ऽऽ	म												
		३															

अंतरा

सा	सांसां	धप	मप	म	म	–	–	ग	मपध	नि॒सां	धनि॒	री॒	–	सां,	नि॒
पू	छोऽ	नाऽ	ऽऽ	मो	से	ऽ	ऽ	अ	बरेऽ	ऽऽ	पिऽ	या	ऽ	ऽ,	पू
	३				×				२			०			
	सांसां	धप	मप	म	म	–	–	ग	म पध	नि॒सां	धनि॒	री॒	–	सां,	सां
	छोऽ	नाऽ	ऽऽ	मो	से	ऽ	ऽ	अ	ब रेऽ	ऽऽ	पिऽ	या	ऽ	ऽ,	क
	३				×				२			०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां						प	म								
गं	रीं	–	सांनि	निसां	–	ध	म	प	–	गम	रीग	री	सा	–,	ध़
रो	ना	ऽ	संऽ	देऽ	–	हा	ऽ	मो	ऽ	पेऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ,	स
३				×				२				०			
नि़	सा	–	री	ग	–	म	–	म़प	धप	पध	निध	धनि	सांसां	निध	सां
म	झा	ऽ	य	हा	ऽ	री	ऽ	हाऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	कै
२				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग ललित, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ये मेरो मन बसियारे
तोरे अंखियांपे वारी जाऊं रे ॥
हाल-बेहाल भई रें बनवारी
नेक नजर मोपे राखो, वारी जाऊं रे ॥

स्थाई

												ग							
ग	मं	ध	मं	ध	मं	म	–	–	–	म	–	ग	री	मं	–धमं	मग–	,	नि	
ये	ऽऽ	मे	रो	म		न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ब	सि		या	ऽरेऽ	ऽऽऽ,		तो	
	३					×				२				०					
	–	री	ग	री		म	–	ग	री	री	ग	म	मं	निं,	निध	धमं	मंमम,		ग
	ऽ	रे	अं	खि		यां	ऽ	पे	ऽ	वा	री	जा	ऊं	रे,	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ये	
	३					×				२				०					

अंतरा

मं																		म	
ध	–ध	मं	धध	मं	म	–	–	–	मं	धमं	धरीं	नि	रींगं	मं	मं	मं			
हा	ऽल	बे	हाल	म	ईं	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ब	न	वाऽ	ऽ	री,	ने			
	३				×				२				०						
	–मं	गं	रीं	नि	ध	मं	म	ग	री	ग	म	मं	नि,	निध	धमं	मंमम	ग		
	ऽक	न	ज	र	मो	पे	रा	खो	वा	री	जा	ऊं	रे	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ये		
	३				×				२				०						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गुणकरी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आव म्हारा मनबसियारे
दरसबिना रे तरस रही मैं ॥
निरख-निरख नित रैन दिना रे
याद करत अब तरस रही मैं ॥

स्थाई

म	पध॒प	पम	मग	गरी	रीसा	–री	सा	प	–	–	–	म	पध॒प	पमम	री				
आ	ऽऽव	म्हाऽ	राऽ	म	ऽ न	ऽ	ऽ ब	सि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	रेऽऽ	ऽ				
०				३					×				२						
–	मम	प	ध॒	सां	–	सां	–	प	ध॒सां	ध॒	ध॒	पध॒	पध॒	पमम	री				
ऽ	दर	स	बि	ना	ऽ	रे	ऽ	त	रऽ	स	र	ही	ऽ ऽऽ	मैंऽऽ	ऽ				
०				३					×				२						

अंतरा

													सां						
म	म	प	ध॒	सां	सां	सां	सां	–	रीं	–रीं	रीं	रीं	–	सां	–				
नि	र	ख	नि	र	ख	नि	त	ऽ	रे	ऽन	दि	ना	ऽ	रे	ऽ				
०				३					×				२						
ध॒	–	ध॒	ध॒	सां	सां	ध॒	ध॒	–	ध॒ध॒	ध॒	ध॒	पध॒	पध॒	पमम	री				
या	ऽ	द	कं	र	त	अ	ब	ऽ	तर	स	र	हीऽ	ऽऽ	मैंऽऽ	ऽ				
०				३					×				२						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैयाबिलावल, ताल त्रिताल, लय द्रुत

लैता जाज्यो म्हारो दै सने सो
तू तो जाण्यो म्हारो दुखरो, अब ये ॥
ऊबीरी है कयो मग में हूँ तो
विरहा अगिन मन में, अब ये ॥

स्थाई

						प		ध			नि				
प	ध	पम,	म	ग	री	ग	प	नि	–	नि	सां	–	ध	नि	धग – , प ध
लै	ता	जाऽ,	ऽ	ज्यो	ऽ	म्हा	रो	दै	ऽऽ	स	ने	ऽ	ऽऽ	ऽ	सोऽ ऽ, ले ता
		०					३				×				२

							प		ध			नि			
पम,	म	ग	री	ग	प	नि	–	नि	सां	–	ध	नि	धप – , री ग
जाऽ,	ऽ	ज्यो	ऽ	म्हा	रो	दै	ऽऽ	स	ने	ऽ	ऽऽ	ऽ	सोऽ ऽ, तू तो
०					३				×				२

प	पध	निध	धप	पध	ग	प	ध	पध	निसां	सा	सा	गम	ग,	ग,	प ध
जा	ण्योऽ	ऽऽ	म्हाऽ	रोऽ	ऽ	दु	ख	रोऽ	ऽऽ	अ	ब	येऽ	ऽ,	ऽ,	ले ता
०				३				×				२			

अंतरा

							री								
ग	नि	ध	प	ध	म	गम	ग	ग	प	धनि	सांनि	सां	ध	निध	निग, ग प
ऊ	बी	री	है	ऽ	क	योऽ	ऽऽ	म	ग	मेंऽ	ऽऽ	ऽ	हूँ	तोऽ	ऽऽ, बि र
		०				३				×				२	

धनि	सांरीं	गं	सां	निध	धप	म	ग	पध	निसां,	सा	सा	साम	गं,	ग,	प ध
हाऽ	ऽऽ	ऽ	अ	गिऽ	नऽ	म	न	मेंऽ	ऽऽ,	अ	ब	येऽ	ऽ,	ऽ,	लै ता
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जीवनपुरी, ताल त्रिताल, लय विलंबित

श्याम बजा बाँसुरियारे
सुन लेहूं रे धुन तोरी, नीकोरे नीको लागेरे ॥
आछी-आछी तान सुरन कन तोरे
मोह लेत मोहे लय रूप
धुन तोरी नीको रे नीको लागेरे ॥

स्थाई

--, -- --, -- --, प ध नि सां - नि ध, प प -
ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, श्याऽ ऽ म ऽ ब ऽ, जा ऽ ऽ
३

नि -, -- --, -- नि ध -, नि ध - प -, - -
बाँ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ
×

ध म, -- ध प, - - नि सां नि नि, - - नि ध, नि ध
सु ऽ, ऽ ऽ रि ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ
२

प -, -- प ध, म - मप, प ध प, ग, -- री री -, --
या ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
०

सा -, -- म -, ग - री री -, सा - - -, म री -
ऽ ऽ, ऽ ऽ सु ऽ न ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ले ऽ ऽ
३

म -, -- --, -- प म -, प म - प -, - -
हूं ऽ, ऽ ऽ ऽऽ, ऽ ऽ रे ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ
×

प -, -- प -, -- नि ध -, नि ध - प -, - -
धु ऽ, ऽ ऽ न ऽ, ऽ ऽ तो ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ री ऽ, ऽ ऽ
२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध म, -- मप, नि ध प- पसां-, --- सां-, सां-
ऽ ऽ ऽऽ नीको, रे ऽ ऽ ऽ ऽऽऽ, ऽ ऽ ऽ नीऽ, कोऽ
०

सांनि-, रींसां रीं- नि ध-, प-- धम-, पध निसां -निध, पप-
ला ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ गे ऽ ऽ, ऽऽऽ रे ऽ ऽ श्या ऽ ऽ म ऽ ब ऽ, जा ऽऽ
३

अंतरा

--, -- --, -- --, मप -नि ध, नि ध प-
ऽऽ, ऽऽ ऽऽ, ऽऽ ऽऽ, आछी ऽआऽ, ऽऽछीऽ
३

सां-, -- सां-, -- निधधप, सां- --, सांसां
ताऽ, ऽऽ नऽ, ऽऽ सुऽरऽ, नऽ ऽऽ, कन
×

रींमंपंगं, -- रीं-, सां- रींरींसांनि, धप-प निनिधप, मगरीसा
तोऽऽऽ, ऽऽ रेऽ, ऽऽ मोऽहले, ऽऽऽत मोऽहेल, यरूऽप
२

नि
रीम, पध मप, निधप- पसां--, -- सां-, सां-
धुन तोरी नीको, रेऽऽऽ ऽऽऽऽ, ऽऽ नीऽ, कोऽ
०

सांनि--, रींसांरीं- निध-, प- धम-, पधनिसां -निध, पप-
लाऽऽऽ ऽऽऽऽ गेऽऽ, रेऽ ऽऽऽ, श्याऽऽम ऽबऽ, जाऽऽ
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जीवनपुरी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

अरि येरी जागरी
पिछुहारे श्याम खरे नोजमोरी ॥
अरि वोके माथे सोहे है पिसारो
कर मुरली अधर धर बोलायोरी ॥

स्थाई

–	पम	धप	प	सां	–	–	–	रींनि	–	सां	रीं	ध	–	प	–
ऽ अरि	ये	ऽ	री	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	री	ऽ
३				×				२				०			

												म			
–	मम	धप	प	नि –		–नि	धप	पध	म	मप	धप	ग	री	–	म
ऽ पिछु	हा	ऽ	रे	श्या	ऽ	ऽम	खऽ	रेऽ	ऽ	बोऽ	ऽऽ	ला	यो	ऽ	री
३				×				२				०			

अंतरा

						रीं		नि							
–	मप	निध	प	सां	–	सां,	सां	ध	प	सां	–	सां	रीं	निध	प
ऽ अरि	वो	ऽ	के	मा	ऽ	थे,	सो	हे	ऽ	है	ऽ	पि	सा	रो	ऽ ऽ
३				×				२				०			

												म			
–	पम	धप	प	निसां	निनि	निध	धप	प,	ध	प	धप	ग	री	–	म
ऽ कर	मु	ऽ	र	लीऽ	ऽऽ	अऽ	धऽ	र	ध	र	बोऽ	ला	यो	ऽ	री
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग जीवनपुरी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

तदानि तारे, तारे दानि रे, तनन देरेना देरेना
ओदानि दानि तारे दानि, तननन देरेना ॥
दीं तानों तानों, तों तों तननारे
देदेरे तदारे, तननन देरेना ॥

स्थाई

–	नि॒	ध॒	प	सां	–	–	–	रीं	नि॒	सां	रीं	ध॒	–	प	नि॒
ऽ	त	दा	नि	ता	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ता	रे	दा	ऽ	नि	रे
३				×				२				०			
–	नि॒	ध॒	प	सां	–	–	–	रीं	नि॒	सां	रीं	ध॒	–	प	नि॒
ऽ	त	दा	नि	ता	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ता	रे	दा	ऽ	नि,	रे
३				×				२				०			
–	नि॒	ध॒	प	ग॒	री	–	म	–	म	प	प	म	प	नि॒	ध॒
ऽ	त	न	न	दे	रे	ऽ	ना	ऽ	दे	रे	ना	ओ	दा	नि	दा
३				×				२				०			
प	सां	–	ध॒	प	रीं	–	सां	गं॒	रीं	नि॒	सां	रीं	ध॒	नि॒ –	प
नि	ता	ऽ	रे	ऽ	दा	ऽ	नि	त	न	न	न	दे	रे	ऽ	ना
३				×				२				०			
–	नि॒	ध॒	प												
ऽ	त	दा	नि												
३															

अंतरा

–	री	म	प	सां	–	ध॒	प	सां	–	सां	–	सां	सां	सां	सां
ऽ	दीं	ता	नों	ता	ऽ	नों	ऽ	तों	ऽ	तों	ऽ	त	न	ना	रे
३				×				२				०			
–	रीं	मं	पं	गं॒	रीं	–	सां	गं॒	रीं	नि॒	सां	रीं	ध॒ नि॒	–	प
ऽ	दे	दे	रे	त	दा	ऽ	रे	त	न	न	न	दे	रे	ऽ	ना
३				×				२				०			
–	नि॒	ध॒	प												
ऽ	त	दा	नि												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देशकार, ताल झपताल, लय मध्य

आयो मिलवे को जी
शुभ घरी, शुभ दिन को
शुभ संदेस सो लायो जी ॥
कछु न रहे मन में जो
चाहे सो बोलिलो
आज मन धोइलो जी ॥

स्थाई

							री				
सां–	धसां	प–	गप	धप	ग–	सा–		रीध़	सा–	सा–	
आऽ	ऽऽ	योऽ	ऽऽ	मिल	वेऽ	ऽऽ		कोऽ	ऽऽ	जीऽ	
×		२			०			३			
सा–	साध़	सा–	सा–	––	प–	पग		प–	ध–	प–	
शुऽ	भऽ	घऽ	रीऽ	ऽऽ	शुऽ	भऽ		दिऽ	नऽ	कोऽ	
×		२			०			३			
				रीं							
सां–	रीं–	गं पं	गं–	सांसां	सां–	धसां		प–	धग	पध	
शुऽ	भऽ	संऽ	देऽ	ऽस	सोऽ	ऽऽ		लाऽ	ऽऽ	योजी	
×		२			०			३			

अंतरा

ग–	प–	ध–	सां–	सां–	सां–	सां–		सांरींध–	सां–	सां–	
कऽ	छुऽ	नऽ	रऽ	हेऽ	मऽ	नऽ		मेंऽऽऽ	ऽऽ	जोऽ	
×		२			०			३			
		प									
सा–	––	ध–	ध–	––	सां–	धसां		प–	ध–	––	
चाऽ	ऽऽ	हेऽ	सोऽ	ऽऽ	बोऽ	ऽऽ		लिऽ	लोऽ	ऽऽ	
×		२			०			३			
				रीं							
सां–	रीं–	गं–पंगं	गंसां	सां–	सां–	धसां		प–	धग	पध	
आऽ	ऽऽ	जऽऽऽ	मऽ	नऽ	धोऽ	ऽऽ		इऽ	लोऽ	ऽजी	
×		२			०			३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देशकार, ताल त्रिताल, लय मध्य

जा जारे भौंरा जारे बिदेसा
संदेसा लेता आजो सैयाँ का ॥
पूछो जो तोहे हलिया मोरा
बतै दे मनमां बिरोग भवा ॥

स्थाई

सा | ध –धप पग,प ध | सां – ध सां | धप,प पग – पध प | ग –सा सा, सा |
जा | जा ऽरेऽ ऽऽ,मौ रा | जा ऽ ऽ ऽ | रेऽ,ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ बि | दे ऽऽ सा, सं |
३ × २ ०

ध़ सा – सा | ध –पसां धसां | धप,प प,ग-गप–धप | ग – –सा, सा |
दे सा ऽ ले | ता ऽ आऽ ऽऽ | जोऽ,ऽ ऽ, ऽऽसैऽ याँऽ | का ऽ ऽऽ, जा |
३ × २ ०

अंतरा

सां सां
ग | प ध – ध | सां – – ध | सां रींगंरीं सांसां ध | धसांध प,प– –, सा |
पू | छो जो ऽ तो | हे ऽ ऽ ह | लि याऽऽ ऽऽ मो | राऽऽ ऽऽ ऽ, ब |
३ × २ ०

ध री
ग –प – प | ध –ध – सां | प – गप धप | ग – सा, सा |
तै ऽदे ऽ म | न ऽमां ऽ बि | रो ऽ गऽ भऽ | वा ऽ ऽ, जा |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देशी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

आपके बुलावा है जो
सुध है के नाहीं मनरंग
वहाँ तो जी बाट जोरियो ॥
अरे हांरे मैं भूलीग्यो
नेक भयो तू आयोरे
अब तू भी साथे चलियो ॥

स्थाई

म नि ध म
ग॒ | री म प प | सां – सां – | प॒ – म प ध प | ग॒ री –, री |
आ | प के ऽ बु | ला ऽ ऽऽ ऽ | वा ऽ है ऽ ऽऽ | जो ऽ ऽ, सु |
३ × २ ०

ग॒ री – सा | सारी – नि॒ – | सा – म प | ध प प री –, म |
ध है ऽ के | नाऽ ऽ ऽ ऽ | हीं ऽ म न | रंऽ गऽ ऽ, ब |
३ × २ ०

नि ध म म
प .प गं॒रीं रींसां | सां – सां – | प – म प ध प | ग॒ री –, ग॒ |
हां तो ऽऽ जीऽ | बा ऽ ऽ ऽ | ट ऽ जोऽ रीऽ | यो ऽ ऽ, आ |
३ × २ ०

अंतरा

प ध प सां प
री | म प सां – | सां – – – | नि॒ – सांरीं गं॒ | रींरीं सां –, रीं |
अ | रे हां रे ऽ | मैं ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ भूऽ ऽ | लीऽ ग्यो ऽ, ने |
३ × २ ०

ध प
– गं॒रीं गं॒ रींसां | सांरीं गं॒रीं रींसां सां | प – ध म – | ध प सां –, री |
ऽ कऽ ऽ मऽ | योऽ ऽऽ ऽऽ ऽ | तू ऽ आऽ ऽ | योऽ रे ऽ, अ |
३ × २ ०

नि ध म म
म प गं॒रीं रींसां | सां – सां – | प – म प ध प | ग॒ री –, ग॒ |
ब तू ऽऽ भीऽ | सा ऽ ऽ ऽ | थे ऽ चऽ लिऽ | यो ऽ ऽ, आ |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देशी, ताल एकताल, लय द्रुत

येरी आली मोहे
कल ना परत कबहूंरी ॥
जद खोले पलखन ये
निसदिस मुख दरसोरी ॥

स्थाई

री	म	प	री	—	ग	सा	सा	री	नि़	सा	—
ये	री	आ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	मो	हे	ऽ	ऽ	ऽ
४		×		०		२		०		३	
नि़	प़	सा	नि़	री	सा	री	मरी	म प	ध़ प	ग	री
क	ल	न	प	र	त	क	बऽ	हूंऽ	ऽऽ	री	ऽ
४		×		०		२		०		३	

अंतरा

प	प										
म	म	ध	—	प ध	म प	सां	सां	रीं	रीं	सां	प
ज	द	खो	ऽ	लेऽ	ऽऽ	प	ल	ख	न	ये	ऽ
४		×		०		२		०		३	
मरी	री	प म	म	ध प	प	सां	सां	म प	ध़प	ग	री
निऽ	स	दिऽ	स	मुऽ	ख	द	र	सोऽ	ऽऽ	री	ऽ
४		×		०		२		०		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी, मध्यम ग्राम, ताल त्रिताल, लय मध्य

नाद धुन गान आज मन गावां
ध्यान कर रूप, पार नहीं पावां ॥
बीच मझधार, देख डर लागे
ध्यान कर रूप, पार नहीं पावां ॥

स्थाई

																		ध़					
नि़	ग	रीसा	–	सा	सानि़नि़	–	सा	–	सा,	नि़ध़ध़	–	नि़	ध़	–नि़	ध़	सा	–	सा,	ग
ना	ऽ	दऽ	ऽध	नऽ,	ऽऽ		गा	ऽ	न,	आऽऽऽ		ऽ	ज	ऽम	न	गा	ऽ	वां,	ध्या
	३						×					२				०			
	–रीसा	–री	सारी		म	–	म,	ग	गमपध	मप	–ग	म	गरीसानि़		सारीग	–	–,	नि़	
	ऽ	नऽ	ऽक	रऽ	रू	ऽ	प,	पा	ऽऽऽऽ	रऽ	ऽन	हीं	पाऽऽऽ		वांऽऽऽ		ऽ,	ना	
	३				×				२				०						

अंतरा

सा																							
प	–	गम	सागु	मगु		प	–	प	प	–	गम	–प	धप		नि	–	धप,	प,	प				
वी	ऽ	चऽ	ऽम	झऽ		धा	ऽ	र	दे	ऽ	खऽ	ऽड	रऽ		ला	ऽ	गेऽ,	ऽ,	ध्या				
	३					×				२					०								
	–	मग,	गसा	–री	सारी		म	–	म	ग	गममध	मप	–ग	म	गरीसानि़		सारीग	–	–नि़				
	ऽ	नऽ,	ऽऽ	ऽक	रऽ		रू	ऽ	प	पा	ऽऽऽऽ	रऽ	ऽन	हीं	पाऽऽऽ		वांऽऽऽ		ऽना				
	३						×				२				०								

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौडसारंग, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

पिया बसेरा घर आली
फुलवन लागी मैं कलियाँ ॥
हरे हरे पातन मैं लाथी
हरुवा बनाय डारूंगी कलियाँ ॥

स्थाई

सा	री सा म –	ग, – –, –	–, – ग री	म ग – म
पि	या ब से ऽ	रा, ऽ ऽ, ऽ	ऽ, ऽ घ र	आ ली ऽ, फु
	३	×	२	०
	ग प – प	प – सां –	ध प पध पप	म ग री, सा
	ल व ऽ न	ला ऽ गी ऽ	मैं ऽ कऽ लिऽ	याँ ऽ ऽ, पि
	३	×	२	०

अंतरा

प	प सां – सां	सां – सां सां	ध नि ध पप –	म ग – ग
ह	रे ह ऽ रे	पा ऽ त न	मैं ऽ लाऽ ऽ	यी ऽ ऽ, ह
	३	×	२	०
	री म ग ग	प –प सांरीं सांसां	पध पप पध पप	म ग री, सा
	रु वा ऽ ब	ना ऽय डाऽ ऽऽ	रूंऽ गीऽ कऽ लिऽ	याँ ऽ ऽ, पि
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शुद्धसारंग, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

नैना न माने मोरा
छतिया थरक गई रे पियरवा ॥
जानूं न जानूं मैं
कांहे चुरिया करक गई रे लंगरवा ॥

स्थाई

रीसासा
म | – री – सा | नि़ – – ध़ | नि़ – सा – | सारी सासा –, प़ |
नै | ऽ ना ऽ न | मा ऽ ऽ ऽ | ने ऽ मो ऽ | राऽ ऽ ऽ ऽ, छ |
३ × २ ०

प री
नि़ सा – री | मं प ध नि | निध प, प– मं म | री सारी सासा, म |
ति या ऽ थ | र क ग ई | रेऽ ऽ, ऽऽ पि य | र वाऽ ऽऽ, नै |
३ × २ ०

अंतरा

प
म | री – मं प | नि – – ध | – नि सांरीं सांसां | नि, नि प –, नि़ |
जा | ऽ ऽ नूं न | जा ऽ ऽ ऽ | ऽ नूं मैंऽ ऽ ऽ | का, ऽ हे ऽ, चु |
३ × २ ०

प
सा री मं प | नि सांरीं सां नि | प – मं म | री सारी सासा, म |
रि या क र | क गऽ ई रे | ऽ ऽ लं ग | र वाऽ ऽऽ, नै |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मधमाधसारंग, ताल एकताल, लय द्रुत

रुखवा तले आया, आया तले आया
बेठा वटमारा, तपना करि दूरा ॥
अरे वो बाजी आवो, पियासा बुझाले तोरा ॥

स्थाई

म	री	म	प	प	नि	निप	मम	–	–	मम	री
रु	ख	वा	ऽ	त	ले	आऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	याऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

	सा	नि़			सा						
री	नि़	सा	–	नि़	री	री	–	–	–	सा	–
आ	ऽ	या	ऽ	त	ले	आ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ
०		३		४		×		०		२	

नि़सा	रीसा	नि़प़	–	नि़	सा	रीम	सारी	–	–	री	–
बेऽ	ऽऽ	ठाऽ	ऽ	ब	ट	माऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ
०		३		४		×		०		२	

री	म	पनि	प	नि	सां	सां	रींसां	निनि	पम	मरी	सासा
त	प	नाऽ	ऽ	क	रि	दू	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

					नि						
री	म	पनि	प	नि	सां	सां	–	–	–	सां	–
अ	रे	वोऽ	ऽ	वा	जी	आ	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ
०		३		४		×		०		२	

		सां									
सां	नि	रीं	नि	सां	नि	सां	रींसां	निनि	पम	मरी	सासा
पि	या	सा	बु	झा	ले	तो	राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी, ताल एकताल, लय विलंबित

नाद सो जानुरे सुरगानी
महाकठन ये बिस्तार धरम है ॥
सुरत देखाय जब ये नाद-लय
करो रे आघात सह लो
तब ताल सुर बन सार, धरम है ॥

स्थाई

म म
--, -- ग, म, गरी, सा | म-, -- ग -, म प |
ऽऽ, ऽऽ ना, ऽ, ऽद, सो | जाऽ, ऽऽ ऽ ऽ, ऽ नु |
४ ×

म
प-, ग- म-, मम | धप, -, नि, - धध, -, प, प |
रेऽ, ऽऽ ऽऽ, सुर | गाऽ ऽ, ऽ, ऽ नीऽ, ऽ, ऽ, म |
० २

प ध धप म ग
नि,-, -, प प मग, ग, सा, मग | री, -, सासा, सा म ग, प म |
हा, ऽ, ऽ, क ठ नये, ऽ, ऽ, त्रिऽ | स्ता, ऽ, ऽऽ, र ध ऽ, र ऽ |
० ३

म म ग म
ध, पप, ग, सा ग, म, गरी, सासा |
म, ऽऽ, है, ऽ ना, ऽ, ऽद, सोऽ |
४

अंतरा

प ध
- -, - - ग, म, -प, -नि | ध -, प प निं नि सां, नि, -, प |
ऽ ऽ, ऽ ऽ सु, र, ऽत, ऽदे | खाऽ, ऽय जबऽ, ये, ऽ, ऽ, |
४ ×

सां
सां, नि, -, निनि सां सां, सां, -, - | निनि, सां, गं, रीं -, नि, -, सांरीं |
नाऽ, ऽ, ऽ, दऽ, लऽ, य, ऽ, ऽ | करो, रे, आ, घा ऽ, त, ऽ, सह |
० २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि सां, –, –, सांरीं सां, –नि, धप, मधप | म, ग, सा, सा म ग, प म |
लो ऽ, ऽ, ऽ, त ब ता, ऽल, सुर, बऽन | सा, ऽ, ऽ, र ध ऽ, र ऽ
० ३

म म ग म
ध, प प, ग, सा ग, म, गरीं, सासा |
म, ऽऽ, है, ऽ ना, ऽ, ऽद, सोऽ |
४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी, ताल रूपक, लय मध्य

इस जगमें तुम बिन कोन
तुम गुरुदेव, मैं चेला ॥
गुन के सागर तुम हो मेरे
गुनी-नायक ध्यान करत-करत
तुम गुरुदेव, मैं चेला ॥

स्थाई

		रि								नि़					
सा	नि़	सा	ग	रि	–	सा	सा	नि़	रि	सारी	सा	–	सा		
इ	स	ज	ग	में	ऽ	ऽ	तु	म	बि	नऽ	को	ऽ	न		
२		३		×			२		३		×				
						म									
नि़	नि़	सा	सा	म	ग	प	ग	–	म	ग	रि	सा	नि़		
तु	म	गु	रु	दे	ऽ	व	मैं	ऽ	चे	ऽ	ला	ऽ	ऽ		
२		३		×			२		३		×				

अंतरा

					सां	सां									
म	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	निरीं	–	सां	–		
गु	न	के	सा	ऽ	ग	र	तु	म	हो	मेंऽ	ऽ	रे	ऽ		
×			२		३		×			२		३			
सांसां															
नि	नि	धप	सां	–	नि	धप	प	–	म	प	ग	म	–		
गु	नी	ऽऽ	ना	ऽ	य	कऽ	ध्या	ऽ	न	क	र	त	ऽ		
×			२		३		×			२		३			
									म						
ग	रि	सा	नि़	नि़	सा	सा	म	ग	प	ग	–	म	ग		
क	र	त	तु	म	गु	रु	दे	ऽ	व	मैं	ऽ	चे	ऽ		
×			२		३		×			२		३			
रि	सा	नि़													
ला	ऽ	ऽ													
×															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी, ताल त्रिताल, लय मध्य

सब सुर साधे जब भयो पार
मिल नर नारी तब कर गान ॥
सुरलय साथ करो दोऊ एक
तरो सुर-सिंधु जब भयो पार ॥
शोक तज आज सुरसती नाम
करो रट नाम करे तब पार ॥

स्थाई

	सां सां			ग
सा	नि प नि सां	सां – सां सांनि	ध नि ध प	मप म म, ग
स	ब ऽ सु र	सा ऽ धे ज ऽ	ब ऽ भ यो	पाऽ ऽ र, मि
	३	×	२	०
			म	सा
	म – प नि	ध – प प	ग सा ग म	ग री सा, सा
	ल ऽ न र	ना ऽ री त	ब ऽ क र	गा ऽ न, स
	३	×	२	०

अंतरा १

म	नि			
ग	म – प नि	ध – प ध	म प ग म	पनि सां सां, रीं
सु	र ऽ ल य	सा ऽ थ क	रो ऽ दो ऊ	एऽ ऽ क, त
	३	×	२	०
		ग	म	सा
	नि सां नि धप	प म म म	पनि सां,नि ध प	ग री सा, सा
	रो ऽ सु रऽ	सिं ऽ धु ज	बऽ ऽ,ऽ भ यो	पा ऽ र, स
	३	×	२	०

अंतरा २

मप	नि – सां गं	रीं – सां सां	मं – मं पं	मं – मं, सां
शोऽ	क ऽ त ज	आ ऽ ज सु	र ऽ स ती	ना ऽ म, क
	३	×	२	०
			म	सा
	पं – नि सां	नि ध प म	पनि सां,नि ध प	ग री सा, सा
	रो ऽ र ट	ना ऽ म क	रेऽ ऽ,ऽ त ब	पा ऽ र, स
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी, ताल रूपक, लय मध्य

आयो रंग फाग सखी सब खेलें
मेरो मन रसिया आरे मंदर ॥
सब रंग घोले धूम मचायो
तुम बिन कैसे खेलूं लंगरं ॥

स्थाई

											सां
नि –		धम	– –		धप	सां –	– –	सां –	प –		नि –
आऽ		योऽ	ऽ ऽ		रंग	फाऽ	ऽऽ	गऽ	सऽ		खीऽ
२			३			×			२		
नि											
सां –		सांगंरीं –	नि –	ध –	प –	म –		म –	– प		म –
ऽऽ		सऽऽऽ	खेऽ	ऽऽ	लेंऽ	मेऽ		रोऽ	ऽम		नऽ
३			×			२			३		
ध											
प –	नि –	धप	नि –		– –	सां –		निसांरीं –	नि –	ध –	प –
रऽ	सिऽ	याऽ	आऽ		ऽऽ	रेऽ		ऽऽऽऽ	मंऽ	दऽ	रऽ
×			२			३			×		

अंतरा

			ध						प		
ग –	म –		– नि		प –	नि –	– –	सां –	नि –		– –
सऽ	ऽऽ		ऽ रं		गऽ	घोऽ	ऽऽ	लेऽ	धूऽ		ऽऽ
२			३			×			२		
नि											
सां –	– रीं		नि –	ध –	प –	म –		म –	– धप		पम
मऽ	ऽम		चाऽ	ऽऽ	योऽ	तुऽ		मऽ	ऽबिऽ		नऽ
३			×			२			३		
			प			नि					
धप	नि –	धप	नि –		– –	सां –		निसांरीं –	नि –	ध –	प –
कैऽ	ऽऽ	सेऽ	खेऽ		ऽऽ	लूंऽ		ऽऽऽऽ	लंऽ	गऽ	रऽ
×			२			३			×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

जावां हूं देसा अब घरमां
उभरायोरी अरी वो मनवारे ॥
मिलनसो आवै मेरो जो संघाती
बतियां करत अखियां भरायोरे ॥

स्थाई

सारी	मग	रीसा	री	सा	–	–	–	नि़	–	सा	नि़	सा	–	–	नि़
जाऽ	वांऽ	हूंऽ	दे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दे	सा	ऽ	ऽ,	ऽ
३				×				२				०			
सारी	मग	रीसा	री	सा	–	–	–	नि़	नि़	सा	म	म	–	नि़	–
जाऽ	वांऽ	हूंऽ	दे	सा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	घ	र	मां	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
								प		प					
नि़	सा	म	ग	प	–	ग	म	ध	–	म	ग	गम	–ग	रीसा	नि़
उ	म	रा	यो	री	ऽ	अ	री	वो	ऽ	म	न	वाऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ
३				×				२				०			

अंतरा

म	म											नि			
ग	ग	म	प	नि	–	ध	प	म	प	नि	प	सां	–	सां	–
मि	ल	न	सो	आ	ऽ	वै	ऽ	मे	रो	जो	सं	घा	ऽ	ती	ऽ
३				×				२				०			
प	रीं	सां	रीं	नि सांनि		निध		धप		पम	गम	पम	गम	–ग	रीसा नि़
ब	ति	यां	क	र त	ऽ	अऽ		खिऽ		यांऽ	ऽम	राऽ	योऽ	ऽऽ	रेऽ ऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग भीमपलासी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

दीं तन देरेना तना दीं तानों
तदारे दानी तारे दानी, ताऽऽ दिर दिर देरेना
देरे देरेना दारादीं दारादीं दारादींतन ॥
तनन तनतना तारे तदारे दानी, तनन दिर दिर
देरेना देरेना देरे ना देरे, ताऽऽ तनत
दारादीं दारादीं दारादीं तन देरेना तना ॥

स्थाई

ग॒	–	म	प	नि॒	ध	प	ध	म	–	प	–	ग॒	–	म	प
दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त	ना	ऽ	दीं	ऽ	ता	ऽ	नों,	त
०				३				×				२			

ग॒	म	ग॒	री	सा	री	नि॒	सा	म	–	ग॒	म	प	ध	नि॒	सां
द	रे	दा	नी	ता	रे	दा	नी	ता	ऽ	ऽऽ	दिर	दिर	दे	रे	ना
०				३				×				२			

ध	प	म	प	ग॒	म,	नि॒	ध	प	–	ध	प	म	–	प	म
दे	रे	दे	रे	ना	ऽ,	दा	रा	दीं	ऽ	दा	रा	दीं	ऽ	दा	रा
०				३				×				२			

ग॒	–	म	प	नि॒	ध	प	ध	म	–	प	–
दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त	ना	ऽ	दीं	ऽ
०				३				×			

अंतरा

						ध									
नि॒	ध	प	म	प	प	ग॒	म	पसां	नि॒	सां	रीं	सां	नि॒	ध	प
त	न	न	त	न	त	ना	ऽ	ताऽ	ऽ	रे	त	दा	रे	दा	नी
०				३				×				२			

नि॒	ध	प	मम	पप	ग॒	म	प	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	नि॒	ध	प
त	न	न	दिर	दिर	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दे	रे
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	–	नि॒	ध	प	ध	सां	नि॒	ध	प	नि॒	ध	प	म	ध	प
ता	ऽ	न्न	त	न	त	दा	रा	दीं	ऽ	दा	रा	दीं	ऽ	दा	रा
०				३				×				२			

								प			
ग॒	–	म	प	नि॒	ध	प	ध	म	–	प	–
दीं	ऽ	त	न	दे	रे	ना	त	ना	ऽ	दीं	ऽ
०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धानी, ताल त्रिताल, लय मध्य

प्यारो लागो म्हने बोलणारे
कुण रे बणायो पेचारो थारो ॥
पागा पेच्यो मोती सोवे लाला
झगमग रजरी कंठीरे थारो ॥

स्थाई

नि़ नि़ सा – | सागु रीगु सा सा | गुम पध नि प | गु – सा, रीरी |
प्या रो ला ऽ | गोऽ ऽऽ म्ह ने | बो ऽऽऽ ऽ ल | णा ऽ रे ऽऽ |
× २ ० ३

ध
नि़ नि़ सा – | सागु रीगु सा सा | – गुमपध नि प | गु – सा – |
प्या रो ला ऽ | गोऽ ऽऽ म्ह ने | ऽ बोऽऽऽ ऽ ल | णा ऽ रे – |
× २ ० ३

ध
– नि़सा प म | प म गु म गु – | – गुमपध नि प | गु – सा सारी |
ऽ कुण रे ब | णाऽ ऽऽ यो ऽ | ऽ पेऽऽऽ ऽ चा | रो ऽ था रोऽ |
× २ ० ३

अंतरा

नि
प नि –प म | पम गुम गु – | – गुम –प नि | सां – सां – |
पा गा ऽपे च्यो | मोऽ ऽऽ ती ऽ | ऽ सोऽ ऽवे ऽ | ला ऽ ला ऽ |
× २ ० ३

ध
–, रींरीं –सां नि | सांनि निप पम मगु | – गुमपध नि प | गु –सा सारी |
ऽ, झग ऽम ग | र ऽ ज ऽ रीऽ ऽऽ | ऽ कंऽऽऽ ऽ ठी | रे ऽ था रोऽ |
× २ ० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धानी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आई रुत आई रुत
बोलन लगी कोयलिया बनमें ॥
बहार आई अंबूकी मदभरे
गमक रही चहुं दिस बन में ॥

स्थाई

								म				ग			
गम	पनि	–	पनिप	मगग	रे	नि़	सा	ग	–	–	–	रे	रे	नि़	सा
आ	ऽऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ई	ऽऽऽ	रु	त	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	रु	त
०				३				×				२			

–	साम	म	म	म	म	प	म	पम	मग	म	प	सांनिनि	निपप	मगग	सानिसा
ऽ	बोल	न	ल	गी	को	य	लि	याऽ	ऽऽ	ब	न	में ऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽ
०				३				×				२			

अंतरा

म	म	म	म	पनिप	नि	–	नि	सां	–	सां	–	नि	प	सां	सां
ब	हा	र	आ	ऽऽऽ	ई	ऽ	अं	बू	ऽ	की	ऽ	म	द	भ	रे
०				३				×				२			

					नि										
–	निगं	रें	सां	सां	–	नि	प	म	ग	म	प	सांनिनि	निपप	मगग	सानिसा
ऽ	गम	क	र	ही	ऽ	च	हुं	दि	स	ब	न	में ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ			
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धनाश्री, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

आरिया वीरा म्हारा हो सखी
आज हूं तो जावां मयका
लेवा आयोरे म्हारा ॥
हूं उत खेलूं, झूला झूलूं,
गावूं नाचूं सखी मिल
देख्यो वीराजी म्हारा ॥

स्थाई

म ग
– सा नि़ध़ प़ | नि़ सा –ग म | म –ग प –म | म –ग री सा |
ऽ आ ऽरि या | बी रा ऽम्हा रा | हो ऽऽ ऽ ऽऽ | ऽ ऽऽ स खी |
० ३ × २

नि़ म ग
री, सा –नि़ ध़प़ | नि़ सा –ग म | म –ग प –म | म –ग री सा |
ऽ, आ ऽऽ रिया | बी रा ऽम्हा रा | हो ऽऽ ऽ ऽऽ | ऽ ऽऽ स खी |
० ३ × २

प़ नि़ सा री | नि़ सानि़ ध़ प़ | सा ग म पम | गम –ग री सा |
आ ज हूं तो | जा वांऽ मयका | ले वा आ योऽ | रेऽ ऽऽ म्हा रा |
० ३ × २

री
गरी सा नि़, ध़ प़ |
ऽऽ आ ऽ, रि या |
०

अंतरा

– म –प नि | सां – सां – | सांरीं गंमं –गं रींसां– | रींनि सांनि ध प |
ऽ हूं ऽउ त | खे ऽ लूं ऽ | झूऽ ऽऽ ऽऽ लाऽऽ | झूऽ ऽऽ लूं ऽ |
० ३ × २

ग
सा ग म पम | प सांनि ध प | सा ग म पधप–म | म –ग री सा |
गा वूं ना चूंऽ | स खीऽ मि ल | दे ख्यो बीरा ऽऽ ऽऽ | जीऽ ऽऽ म्हा रा |
० ३ × २

नि़ म ग
री, सा –नि़ ध़प़ | नि़ सा –ग म | म –ग प –म | म –ग री सा |
ऽ, आ ऽऽ रिया | बी रा ऽम्हा रा | हो ऽऽ ऽ ऽऽ | ऽ ऽऽ स खी |
० ३ × २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण, ताल एकताल, लय ठाय

देवो दान मोहे
माँगत सुर भीक, दास तेहारो ॥
तोरे बिन ग्यान दे कौन मो सो
नेक नजर मो पर, आस तेहारो ॥

स्थाई

ग नि़ ध़
– – – नि़ | रेगमंग, गमंप, –, मंप रे, –, सा, नि़ | गरी सा – – –
ऽ ऽ ऽ दे | बोऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ दा ऽ न मो | हेऽ ऽऽ ऽ ऽ
४ ×

ध़ नि़, सा, – नि़, – –ध़, –प़, –म़, – | ध़ प़ प़, – | नि़ ध़ सा नि़ सा – सा नि़
माँऽ, ऽ, ऽग, ऽ ऽत, ऽसु, ऽर, ऽ | भी ऽ क ऽ | दा ऽऽऽ ऽऽ स ते
० २ ०

ग
रेगमंग, गमंप, –, – गगरे, –, नि़, – | रेगमंग, गमंप, –, मप
हाऽऽऽ ऽऽऽऽऽ रोऽऽऽ देऽ | वोऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ
३ ४

अंतरा

मं धनि
–, –, प, – | मंग–मं धमं, धनि, सां, सां | सां सां
ऽ ऽ तो ऽ | रेऽऽ वि नऽ ग्याऽ ऽ न | दे ऽ
४ ×

ध ध
नि, रें, गरें, सां सां नि, –, प प, – | निनि, – ध, पमं, गरे सानि़, नि़, ध़, प़
कौ न मोऽ ऽऽ सो ऽ ऽऽऽ | नेऽ ऽ क नज रमो पऽ ऽ ऽर
० २

ग
नि़ ध़ सा नि़ सा – सा नि़ | रेगमंग, गमंप, –, – गगरे, –, नि़, –
आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ स ते | हाऽऽऽ ऽऽऽ ऽ ऽ रोऽऽ ऽ दे ऽ
० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण, ताल झपताल, लय मध्य

शिव शिव कल्याण करी, जप जप जिय नाम शिव
हर हरत दुख सबै, रट रट पुरहर नाम ॥
जप करत सुरगन, महादेव, महादेव
शिव करत कल्याण, रट धरो नाम शिव ॥

स्थाई

						म॑								रीसा					
सा	सा	ग	री	ग	प	ग		म	ग,	ग	री	सा	सा			सा			
शि	व	शि	व	क	ऽ	ल्या		ऽ	ण,	ऽ	क	री	ज			प			
×		२				०			३				×						

																		म॑	
नि़	ध़	नि़रीसा		नि़		ध़	प़	ध़	प़	सा		सा		ग	री	ग	प		
ज	प	जिऽय		ना		ऽ	म	शि	व	ह		र		ह	र	त	ऽ		
२				०			३			×				२					

						म													
ग		म	ग,	ग	ग	री	निनि		ध	प	म॑	ग	प	ग		म			
दु		ख	सऽ		वै	ऽ	रऽ		ट	र	ट	पु	र	ह		र			
०			३				×			२				०					

ग	री	सा	
ना	ऽ	म	
३			

अंतरा

				प								ध							
म॑		ग	म॑	ध	प	सां		सां	नि	रीं	सां	सां		सां					
ज		प	क	र	त	सु		र	ऽ	ग	न	म		हा					
×			२			०			३			×							

गं	रीं	सां	नि		ध	नि	ध	प	म॑		ग	प	रीं	सां					
दे	ऽ	व	म		हा	दे	ऽ	व	शि		व	क	र	त					
२			०			३			×			२							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि	ध	नि	ध	प	प	मं	ग	ध	प	मं	म	ग	री	सा
क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	र	ट	ध	रो	ऽ	ना	ऽ	म	शि	व
०		३			×		२			०		३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण, ताल त्रिताल, लय मध्य

पीयरवा आवो तुम हम मिल
लयसुरकी महिमा गावें ॥
लयसुर सूना शोक तुम बिन
ना भाये कैसे महिमा गावे ॥

स्थाई

मंप	गमं	धनि	मंध	निध	पप	गरी	सासा	सा,	सा	नि़	ध़	सा	नि़	री	सा
पीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	यऽ	रऽ	वाऽ	ऽऽ	आ	बो	तु	म	ह	म	मि	ल
०				३				×				२			
मं	मं	ध	मं	ध	नि	रीं	गं	गंरीं	सांनि	धप	मंग	धप	मंग	रीसा	सा
ल	य	सु	र	की	ऽ	म	हि	माऽऽऽऽऽऽऽ				गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	वें
०				३				×				२			

अंतरा

												नि	ध		
प	प	ध	प	धनि	सां	सां	–	सां	–	रीं	गं	सां	नि	ध	प
ल	य	सु	र	सूऽ	ऽ	ना	ऽ	शो	ऽ	क	तु	म	ऽ	बि	न
०				३				×				२			
–	प	मं	ग	मं	ध	नि	रीं	गंरीं	सांनि	धप	मंग	धप	मंग	रीसा	सा
ऽ	ना	भा	ये	कै	से	म	हि	माऽऽऽऽऽऽऽ				गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	वे
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

यार वे ना आयो रे
सूझ परे नाही आज मोहे ॥
याद मन मोरा, करत निठुरा रे
सूरत दिखा जारे, आज मोहे ॥

स्थाई

नि़ | री नि़ री ग | सा – – – | नि़ ध़, नि़ री | ग – –, सा |
या | ऽ र वे ऽ | ना ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ, आ यो | रे ऽ ऽ, सू |
३ × २ ०

– नि़ध़ –नि़ री | प मं री, गमं | पध धपप – मं | – मंगग – नि़ |
ऽ झऽ ऽप रे | ना ऽ ही, आऽ | ऽऽ जऽऽ ऽ मो | ऽ हेऽऽ ऽ या |
३ × २ ०

अंतरा

मं री मं
प | –मं ग नि़ री | गमं प प, मं | ध मं –ध नि | नि ध प, सां |
या | ऽऽ द म न | मोऽ ऽ रा, क | र त ऽनि ठु | रा ऽ रे, सू |
३ × २ ०

री
नि ध –प मं | ग – री, गमं | पध धपप – मं | – मंगग – नि़ |
र त ऽदि खा | जा ऽ रे, आऽ | ऽऽ जऽऽ ऽ मो | ऽ हेऽऽ ऽ या |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कल्याण, ताल त्रिताल, लय मध्य

मुख तेरो कारो काहे है री
समझ परो ना मोहे कैसे ॥
तोपे मन मेरो कल जो आयो
गेली कर गइली मोहे कैसे ॥

स्थाई

ग
– मंप –मं री | ग – ग री | – सा –नि़ ध़ | नि़री री ग री |
ऽ मुख ऽते रो | का ऽ रो ऽ | ऽ का ऽहे ऽ | हैऽ ऽ री ऽ |
३ × २ ०

गमं, मंप –मं री | ग – ग री | – सा –नि़ ध़ | नि़री री ग री |
ऽऽ, मुख ऽते रो | का ऽ रो ऽ | ऽ का हेऽ ऽ | हैऽ ऽ री ऽ |
३ × २ ०

री ग ग
– सारीसासा नि़ ध़ | नि़ – री – | ग – री – | रीग मंप मं री |
ऽ सऽमऽ झ प | रो ऽ ना ऽ | मो ऽ हे ऽ | कैऽ ऽऽ से ऽ |
३ × २ ०

ग मंप –मं री |
ऽ मुख ऽते रो |
३

अंतरा

– मंप –मं ग | प – प – | – मंमं –ध मं | ध नि सां नि नि |
ऽ तोपे ऽम न | मे ऽ रो ऽ | ऽ कल ऽजो ऽ | आऽ ऽ यो ऽ |
३ × २ ०

प ग
– पसां –नि ध | नि ध प मं | – ग रीसा नि़ | रीग मंप मं री |
ऽ गेली ऽक र | ग इ ली ऽ | ऽ मो ऽहे ऽ | कैऽ ऽऽ से ऽ |
३ × २ ०

ग
ग, मंप –मं री |
ऽ, मुख ऽते रो |
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मधुवंती, ताल त्रिताल, लय मध्य

मैं आऊं तोरे मंदरवा
पैयाँ परन देहो मोहे मनबसिया ॥
अरे मेरो मढैयां तोरा आहे रे
काहे धरो चरन मेरो, मनबसिया ॥

स्थाई

–	–	नि़	–	सा	मं	–	ग॒	री	सा	री	नि़	मं	–	–	–
ऽ	ऽ	मैं	ऽ	आ	ऊं	ऽ	तो	रे	मं	द	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
ग॒	–,	नि़	–	सा	मं	–	ग॒	री	सा	री	नि़	मं	–	ग॒	–
ऽ	ऽ,	मैं	ऽ	आ	ऊं	ऽ	तो	रे	मं	द	र	वा	ऽ	ऽ	ऽ
२				०				३				×			
मंप	धप	ग॒	–	प़	नि़	सा	प	मं	पधप	मं	ग॒	सा	मंग॒	ग॒री	रीसा
पैंऽ	ऽऽ	याँ	ऽ	प	र	न	दे	हो	ऽऽऽ	मो	हे	म	नऽ	बऽ	सिऽ
२				०				३				×			
सारी	रीग॒री,	नि़ –													
याऽऽऽऽ,	मैंऽ														
२															

अतरां

–	–	ग॒	मं	प	ध	–	प	मं	गमं	ग॒मं	प	नि	–	सां	–नि
ऽ	ऽ	अ	रे	मे	रो	ऽ	म	ढै	यांऽ	ऽतो	रा	आ	ऽ	हे	ऽऽ
२				०				३				×			
ध	प,	प	नि	सां	रीं	–	सांनी	निध	धप	पमं	मंग॒	सा	मंग॒	ग॒री	रीसा
रे	ऽ,	का	हे	ध	रो	ऽ	चऽ	रऽ	नऽ	मेऽ	रोऽ	म	नऽ	बऽ	सिऽ
२				०				३				×			
सारी	रीग॒री,	रीसा	नि़												
याऽ	ऽऽऽ,	मैंऽ	ऽ												
२															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा, ताल एकताल, लय विलंबित

घाम परे रे, बाउना चाल्यो है
तपरिया है अत घणारे ये भूमरी ॥
चल अचल सो देखले, मुख मुरझाय रे
शोक मन गर सुखाय, ये भूमरी ॥

स्थाई

–, –, –, सा नि़, री़, –नि़, ध़ | री़ –, नि़, री़ नि़, ध़, –, ध़ |
ऽ, ऽ, ऽ, घा ऽ, ऽ, ऽम, प | रे ऽ, ऽ ऽ रे, ऽ, ऽ, बा |
४ ×

सा –, – – सा, –, नि़री़, नि़ध़ | नि़री़, नि़ध़, –, – ध़, नि़, –री़, ग |
उ ऽ, ऽ ऽ ना, ऽ, ऽऽ, चाल्यो | है ऽ, ऽऽ, ऽ, ऽ त, प, ऽरि, या |
० २

ध ध म॑
म॑, ध, –, – म॑ –, म॑ – | ध –, निरीं, नि ध निरीं, ध, सां, – |
है, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, अ ऽ | त ऽ, ऽऽ घणा रे ऽ, ऽ, ये, ऽ |
० ३

सांसांरींनि, धम॑गरी़, सासा, सा नि़, री़, –नि़, ध़ |
भू ऽ म री, ऽऽऽऽ, ऽऽ, घा ऽ, ऽ, म, प |
४

अंतरा

–, –, –, सासा सा –, –सां सांसां | सां – – – नि, रीं, नि, ध |
ऽ, ऽ, ऽ, च ल अ ऽ, ऽच लसो | दे ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ, ख, ले |
४ ×

– –, सां सां नि, रीं, –, नि ध | नि, रीं, नि, धध ध – – –
ऽ ऽ, मु ख ऽ, ऽ, ऽ, मुर | झा, ऽ, ऽ, ऽय रे ऽ ऽ ऽ |
० २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध मं ध

ध़, नि़, –, री़ ग, –, –, मं | ध, –, –, मं धनिरींनि, ध, सां, –

शो, क, ऽ, म न, ऽ, ऽ, ग | र, ऽ, ऽ, सु खाऽऽऽ, य, ये, ऽ

० ३

सांसांरींनि, धमंगरी़, सासा, सा नि़, री़ –नि़, ध़

भू ऽ म री, ऽऽऽऽ, ऽ ऽ, धा ऽ, ऽ, ऽम, प

४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूरियाधनाश्री, ताल एकताल, लय विलंबित

बलगई जोत, सांझ भइल
नहिं आयल बलक धरुं कैसन धीर
मन घबरायो री ॥
अरू सबके घर आयल हो अपनो
हमरा नहिं आयल, अब देखन को
मन उभरायोरी ॥

स्थाई

		री					मं
---प	(प)	गमं	ध	नि–ध–	प–प–	प---	मं–ध–
ऽऽऽब	ल	ऽगई		जोऽऽऽ	ऽऽतऽ	सांऽऽऽ	ऽऽऽऽ
४				×		०	
		मं					
मं–ग–		–रीग–		री–सा–	सा---	नि–री–	ग---
झऽऽऽ		ऽमऽऽ		इऽऽऽ	लऽऽऽ	नऽहिंऽ	आऽऽऽ
२				०		३	
मंरीग–		ग--री		गमंप ...	प---	मं–ध–	नि–रींगं
यऽऽऽ		लऽऽब		लऽऽ ...	कऽऽऽ	धऽरुंऽ	कैऽसन
४				×		०	
रीं							मं
गं–रींसां		सां---		रीं–निध	–निधप	प---पधपप,	ग---
धीऽऽऽ		रऽऽऽ		मऽनऽ	ऽघबऽ	राऽऽऽयोऽऽऽऽऽऽ	
२				०		३	

	री
निरी, गमं, प, प	(प) गमंध
रीऽऽऽऽब	लऽगई
४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

			नि			रीं	
---प	मंगमंरी गगमंमं	सां---	रीं-सां-	नि-रींगं		गं-रींसां	
ऽऽऽअ	रूऽऽऽऽऽसब	केऽऽऽ	घऽरऽ	आऽयल		होऽअप	
४		×		०			

नि					
धनिरींनि	धप, पधपप	मंग, मंरीग, री, सा	निरी, ग, मं, ध	धनि, रीं, नि, धप, प, धपप, मंग	
नोऽहम	राऽनहिंऽऽ	आऽ, ऽऽऽ, य	ल अब, दे, ख, न	कोऽ, ऽ, म, न उ, म, राऽऽ, योऽ	
२		०		३	

नि री, ग मं, प, प
रीऽ, ऽऽ, ऽब
४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूरियाधनाश्री, ताल त्रिताल, लय द्रुत

कहाँ चला हो रे, मुख फेरीलो पिया
रे अब ना जावो, रूठ कर हम सन ॥
कछु ना कही मैतो, जानूं ना जानूं रे
सपने में कही हो तो रूठ कर हम सन ॥

स्थाई

										ग			मं		
मं	धनि	ध	प	प	–	प	–	मं	ग	मं	री	ग	–	ध	मं
क	हाँऽ	च	ला	हो	ऽ	रे	ऽ	मु	ख	फे	री	ल्ले	ऽ,	पि	या
३				×				२				०			
मं	ध	मं	ग	री	सा	सा	–	नि	री	ग	मं	पध	पमं	गमं	रीग
रे	ऽ	अ	ब	ना	जा	वो	ऽ	रु	ठ	क	र	हऽ	मऽ	सऽ	नऽ
३				×				२				०			

अंतरा

मं	धनि	ध	प	प	–	री	ग	मं	ध	नि	सां	सांरीं	निसां	सां	–
क	छुऽ	ना	क	ही	ऽ	मै	तो	जा	नूं	ना	जा	नूंऽ	ऽऽ	रे	ऽ
३				×				२				०			
	सां														
सां	गं	रीं	सां	ध	नि	ध	प	नि	री	ग	मं	पध	पमं	गमं	रीग
स	प	ने	में	क	ही	हो	तो	रु	ठ	क	र	हऽ	मऽ	सऽ	नऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्री, ताल त्रिताल, लय द्रुत

संजा कहे जाय अब, जाने नी दो री सखी
म्हारा संग नी खेल्यो, जाने नी दो री सखी ॥
जाने दो री जाने दो री, संजा गोरी रूठरिया
पाछे फन्यो नी आयो, बाट जोरिया घरे ॥

स्थाई

								प				सा			
–,	रीमं	–प	नि	ध	–ध	प	मं	ध	धमं	–ग	री	ग	–	री	सा
ऽ,	संजा	ऽक	हे	जा	ऽय	अ	ब	ऽ	जाने	ऽनी	दो	री	ऽ	स	खी
३				×				२				०			

				सा											
–,	रीसा	–प	प	ग	–	री	प	–	मंमं	–प	ध	धप,परी	ग	री	सा
ऽ,	म्हारा	ऽसं	ग	नी	ऽ	खे	ल्यो	ऽ	जाने	ऽनी	दो	रीऽ,ऽऽ	ऽ	स	खी
३				×				२				०			

अंतरा

–,	गरी	–सा	मं	प	नि	सां	रीं	–,	निनि	–सां	रीं	नि	–नि	ध	प
ऽ,	जाने	ऽदो	री	जा	ने	दो	री	ऽ,	संजा	ऽगो	री	रू	ऽठ	रि	या
३				×				२				०			

								प				सा			
–,	रीसा	–प	प	प	–	प	मं	ध	धमं	–ग	री	ग	–	री	सा
ऽ,	पाछे	ऽफ	न्यो	नी	ऽ	आ	यो	ऽ	बाट	ऽजो	रि	या	ऽ	घ	रे
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्री, ताल त्रिताल, लय द्रुत

करन दे रे कछु ललारे
व वो परा जा रे, लेले लेवो रे ॥
ईको उठाले आकर कोई
ये उधम करे, लेले लेवो रे ॥

स्थाई

						सा									
–	रीग	री	सा	सा	–	प	–	–	–	प	प	प	ध	–	प
ऽ	कऽ	र	न	दे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	क	छु	ल	ला	ऽ	रे
३				×				२				०			
प						सा									
री,	ग	री	सा	सा	–	प	–	–	–	प	प	प	ध	–	प
ऽ,	क	र	न	दे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	क	छु	ल	ला	ऽ	रे
३				×				२				०			
–,	रीरी	मंमं	प	नि	–	धप	–	री	–	प	प	प	ध	–	पप
ऽ,	वऽ	वोऽ	प	रा	ऽ	जाऽ	ऽ	रे	ऽ	ले	ले	ले	वो	ऽ	रेऽ
३				×				२				०			
री,	ग	री	सा												
ऽ,	क	र	न												
३															

अंतरा

–	री	मं	प	नि	–	नि	–	–	सां	सां	सां	रीं	–	सां	–
ऽ	ई	को	उ	ठा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	आ	क	र	को	ऽ	ई	ऽ
३				×				२				०			
–,	रीं	–	नि	ध	प	–	पध	री	–	प	प	प	ध	–	पप
ऽ,	ये	ऽ	उ	ध	म	ऽ	कऽ	रे	ऽ	ले	ले	ले	वो	ऽ	रेऽ
३				×				२				०			
री,	ग	री	सा												
ऽ	क	र	न												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौरी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

काहे तोरा मुख मलिन अहै
बिसोह मन काहे, कहोरी ॥
बटोही जावो जावो अपने घरवा
पूछत काहे करो दुखवा हमरी ॥

स्थाई

री	ग	री	सा	सा	सा	–	–	–	–,	निरी	ग	री	ग	–	–, नि
का	हे	तो	रा	मु	ख	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	मलि	न	अ	है	ऽ	ऽ, बि
३					×				२				०		

री	ग	मं	ग	गमं	प	पध	मंप	–	–	मं	ग	ग	–	रीसानि,	री
सो	ह	म	न	काऽ	ऽ	हेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	क	हो	री	ऽ	ऽऽऽ,	का
३				×				२				०			

अंतरा

सा	ध	प	मं	ध	नि	सां	–	निसां	रींनि	सां	नि	ध्र नि	–ध	–	प, नि
ब	टो	ही	जा	वो	जा	वो	ऽ	अऽ	ऽप	ऽ	ने	घ	ऽर	ऽ	वा पू
३					×				२				०		

ध	प	मं	ग	री	ग	–	नि	ध	प	मं	ग	री ग	–	रीसानि,	री
छ	त	का	हे	क	रो	ऽ	दु	ख	वा	ह	म	री	ऽ	ऽऽऽ	का
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौरी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

घूंघट खोलो ना जी, लागुं पैयां
देखत हंसरियां सब सखीयन मिल ॥
हट जाव मुरक जाय बैंयां मोरी
करोना इतनी बरजोरी, सरम लग ॥

स्थाई

–,	प	प	धमं	प	–मं	ग	री	ग	–	–	–	री	ग	री	सा
ऽ,	घूं	घ	टऽ	ऽ	ऽखो	लो	ना	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ला	गुं	पैं	या
०				३				×				२			
–,	नि़	–नि़	नि़	री	ग	री	ग	री	गमं	पमं	प	मं	गमं	–ग	री
ऽ,	दे	ऽख	त	हं	स	रि	यां	स	बऽ	ऽस	खी	य	नऽ	ऽमि	ल
०				३				×				२			

अंतरा

								मं							
–,	ग	री	सा	–सा	नि़	री	ग	प	–	मं	ग	मं	ग	रीग	मंप
ऽ,	ह	ट	जा	ऽव	मु	र	क	जा	ऽ	य	बैं	यां	मो	रीऽ	ऽऽ
०				३				×				२			
												ग			
ध,	मं	प	नि	सां	नि	ध	पध	मं	प	–	मं	ग	मं	–ग	री
ऽ,	क	रो	ना	इ	त	नी	बर	जो	री	ऽ	स	र	म	ऽल	ग
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौरी, ताल त्रिताल, लय मध्य

चित चंचल मोरा होय जायो री
फूल खिरै कचनार चमेली री ॥
भौंरा गुंजार करे रस चाख्यो
देख मोरा मन चैन न आयोरी ॥

स्थाई

			ग												
–	पप	री	–	ग	ग	–	री	सा	–	सारी–	सानि–	नि	–री	गरी	गम
ऽऽ	चित	चं	ऽ	च	ल	ऽ	मो	रा	ऽ	होयऽ	ऽऽऽऽ	जा	ऽयो	ऽऽ	रीऽ
३				×				२				०			
			म					री			ग				
प,	मं	–प	ध	प	–	मं	ग	ग	–	ग	री	गम	पध	मंप	धध
ऽ	फू	ऽल	खि	रै	ऽ	क	च	ना	ऽ	र	च	मेऽ	ऽऽ	लीऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
			ग												
पमं	पप	री	–												
रीऽ,	चित	चं	ऽ												
३															

अंतरा

									प				प		
–	मं	–ध	निध	नि	–	नि	ध	प	मं	–ध	नि	नि	ध	प	–
ऽऽ	भौं	ऽरा	ऽगुं	जा	ऽ	र	क	रे	ऽ	ऽर	स	चा	ऽ	ख्यो	ऽ
३				×				२				०			
–	प	मंग	री	ग	–	री	सा	–	सारी	–सा	नि	री	गरी	गम	पध
ऽ	दे	ऽख	मो	रा	ऽ	म	न	ऽ	चैऽ	ऽन	न	आ	योऽ	रीऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
			ग												
पमं	पप	री	–												
ऽऽ	चित	चं	ऽ												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूप, ताल त्रिताल, लय ठाय और मध्य

ध्यान अब दीज्यो गुनिजन
सुर मिल ताल, राग मुखतान ॥
सप्त कण संग, पंच सुध सुर
तालबध बोल, राग मुखतान ॥

स्थाई

सा		री		री	
प	ग रीग–	सा,सारी सा	सा – सा –	ध़ – सा ग	री ग –, ग
ध्या	ऽ नऽऽ	ऽअऽ ब	दी ऽ ज्यो ऽ	ऽ ऽ गु नि	ज न ऽ,. सु
	३		×	२	०

		ग		ग
– री –प ग	प – प प	– ध सां ध	धधपग गपधसां सांधपप,	प
ऽ र ऽमि ल	ता ऽ ल रा	ऽ ग मु ख	ताऽऽऽ ऽऽऽऽ नऽऽऽ,	ध्या
३	×	२	०	

अंतरा

ग	– प –ध सां	सां – सां ध	– सां रीं गं	सां ध पग–, ग
स	ऽ स ऽक ण	सं ऽ ग पं	ऽ च सु ध	सु ऽ रऽ, ता
	३	×	२	०

		ग		ग
– री –प ग	प – प प	– ध सां ध	धधपग गपधसां सांधपप,	प
ऽ ल ऽब ध	बो ऽ ल ग़ा	ऽ ग मु ख	ताऽऽऽ ऽऽऽऽ नऽऽऽ,	ध्या
३	×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूप, ताल त्रिताल, लय मध्य

नींद न आयें भाये ना मन
गावे कैसे ना आये पिया ॥
दूना शोक पिया बिन लागा
गावे कैसे ना आये पिया ॥

स्थाई

										ग					
–	सा	–ग	री	ग	–	–	री	–	प	ग	री	ग	री	सा	सा
ऽ	नीं	ऽद	न	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	भा	ये	ऽ	ना	ऽ	म	न
३				×				२				०			
ध़,	सा	–ग	री	ग	–	–	री	ग	प	ग	री	ग	री	सा	सा
ऽ,	नीं	ऽद	न	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	भा	ये	ऽ	ना	ऽ	म	न
३				×				२				०			
	प					रीं		ग							री
–,	ग	–ग	प	सां	–	सां	ध	ध	–	प	–	ग	री	ग	सा
ऽ,	गा	ऽवे	ऽ	कै	ऽ	से	ऽ	ना	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	पि	या
३				×				२				०			
ध़,	सा	–ग	री												
ऽ,	नीं	ऽद	न												
३															

अंतरा

	प														
–	ग	–ग	प	सां	–	सां	ध	सां	–	रीं	गं	सां	रीं	ध	–
ऽ	दू	ऽना	ऽ	शो	ऽ	क	पि	या	ऽ	बि	न	ला	ऽ	गा	ऽ
३				×				२				०			
						रीं		ग							री
–,	ग	–ग	प	सां	–	सां	ध	ध	–	प	–	ग	री	ग	सा
ऽ,	गा	ऽवे	ऽ	कै	ऽ	से	ऽ	ना	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	पि	या
३				×				२				०			
ध़	सा	–ग	री												
ऽ	नीं	ऽद	न												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग चैतीभूप, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

निमोरी का मौरा है रे
गमकीला है मन बौरारे ॥
बौरा चैता बौरायेरे हो
ये उतपतियापे मन बौरारे ॥

स्थाई

														सा					
–	ग	पध	प	ग	–	–	–	रीग–	रीसा–	सा	ध़	सा	–	–	रीग,	–			
ऽ	नि	मोऽ	री	का	ऽ	ऽ	ऽ	मौऽऽ	ऽऽऽ	राऽ		है	ऽ	ऽ	रेऽऽ				
३				×				२				०							

																		सा	
सारी–,	सासा	ध़प़	ध़	ग	–	री	–	प	ग	पध	पप	गरी	ग	रीसा	री				
ऽऽऽ	गऽ	मऽ	की	ला	ऽ	ऽ	ऽ	है	ऽ	मऽ	नऽ	बौऽ	रा	ऽऽ	रे				
३				×				२				०							

–,	ग	पध	प	
ऽ	नि	मोऽ	री	
३				

अंतरा

						सां													
–	ग	प	ध	सां	–	प	–	ध	–	सां	रींगं–	गंरीं	–	–	सां				
ऽ	बौ	रा	चै	ता	ऽ	बौ	ऽ	रा	ऽ	ये	ऽऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	हो				
३				×				२				०							

																		सा	
–	सां	–	ध	गं	–	रीं	सां	ध	प	ग	री	गरी	ग	रीसा	री				
ऽ	ये	ऽ	उ	त	ऽ	प	ति	या	पे	म	न	बौऽ	रा	ऽऽ	रे				
३				×				२				०							

–	ग	पध	प	
ऽ	नि	मोऽ	री	
३				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग, ताल त्रिताल, लय द्रुत

करत लाडी लाडी बतियाँ हमसे
ना जानूं मन में, कछु और न हो ॥
जानूं जानूं अब काहे प्यारी बातें
का मन में तेरो है, हाँ कहोरी गोरी ॥

स्थाई

												ग			
सा	नि़	सा	प	मं	प	प	–	ग	ग	म	प	म	ग	–	री, सा
क	र	त	ला	डी	ला	डी	ऽ	ब	ति	यॉं	ह	म	से	ऽ	ऽ, क
	३				×				२				०		

												ग		री	
	नि़	सा	प	मं	प	प	–	ग	ग	म	प	भ	ग	–,	सा –
	र	त	ला	डी	ला	डी	ऽ	ब	ति	यॉं	ह	म	से	ऽऽ,	ना ऽ
	३				×				२				०		

	नि़	–ध़	प़	–	सा	नि़	सा	–	म	ग	प	–मं	ग	म	गरी, सा
	जा	ऽऽ	नूं	ऽ	म	न	में	ऽ	क	छु	औ	ऽऽ	र	न	होऽ, क
	३				×				२				०		

अंतरा

गम	पनि	निध	पमं	गम	ग	म	प	नि	सां	–	नि	ध	नि	प –,	पमं गम
जाऽ	ऽऽ	नूंऽ	जाऽ	नूंऽ	ऽ	अ	ब	का	हे	ऽ	प्या	री	बा	तें ऽ,	काऽ ऽऽ
		३				×				२				०	

	गरी	सा	म	ग	म	प	नि	–	ध	–	मं	प	ग	म	गरी, सा
	मऽ	न	में	ऽ	ते	रो	है	ऽ	हाँ	ऽ	क	हो	री	गो	रीऽ, क
	३				×				२				०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ना छेडो ना छेडो ना छेडो री
मैं का जानू, पिया मुख खोले ना बोले ॥
जब पिया बोले, कहुंगी तब मैं तो
अब ना करो यह बरजोरी, सखी ॥

स्थाई

–	–,	नि़	सा	ग	–री	ग	म	प	–मं	ग	म	ग	–	–,	म
ऽ	ऽ,	ना	छे	डो	ऽऽ	ना	छे	डो	ऽऽ	ना	छे	डो	ऽ	ऽ,	री
२				०				३				×			
ग	री,	नि़	सा	ग	–री	ग	म	प	–मं	ग	म	ग	–	–,	म
ऽ	ऽ,	ना	छे	डो	ऽऽ	ना	छे	डो	ऽऽ	ना	छे	डो	ऽ	ऽ,	री
२				०				३				×			
ग	री,	सा	नि़	सा	री	नि़सा	नि़	ध़	प़	प़	सा	नि़	सा	ग	–री	ग
ऽ	ऽ,	मैं	का	जा	ऽ	ऽऽ	नू	ऽ	पि	या	मु	ख	खो	ले	ऽऽ	ना
२				०				३					×			
म	गरी,	नि़	सा													
बो	लेऽ,	ना	छे													
२																

अंतरा

						ध									
–	–,	ग	म	प	नि	मं	प	–	ग	म	प	नि	सां	नि़नि	–
ऽ	ऽ,	ज	ब	पि	या	बो	ले	ऽ	क	हुं	गी	त	ब	मैंऽ	ऽ
२				०				३				×			
पप	–,	प	मं	गम	गरी	सा	नि़	सा	ग	म	प	नि	प	–	मं
तोऽ	ऽ,	अ	ब	नाऽ	ऽऽ	क	रो	य	ह	ब	र	जो	री	ऽ	स
२				०				३				×			
गम	गरी,	नि़	सा												
खीऽ	ऽऽ,	ना	छे												
२															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सावनी, ताल त्रिताल, लय ठाय और मध्य

दरस बिन निरस सब लागेरी
समुझ कछु नाहिं परो मोहे री ॥
करम सब सार, मुरक बन लागे
तरस मन ध्यान करे आली री ॥

स्थाई

	री	सा		ध
ग	म पग –सा सा–	प़ नि़ सा –ग	री ग– –म प	सां प ग, ग
द	र सऽऽ ऽबि नऽ	नि र स ऽस	ब लाऽ ऽगे ऽ	री ऽ ऽ, स
	३	×	२	०
				ध
	म पग –सा सानि़–	री – सा, सा	म ग – –म प	सां प ग, ग
	मु झ ऽक छुऽऽ	ना ऽ हिं, प	रोऽ ऽ ऽमो ऽ	हे ऽ री, द
	३	×	२	०

अंतरा

ग	म प –नि सां	सां – सां प	नि सां –गं सां	सांरींसांसां – धपप, ग
क	र म ऽस ब	सा ऽ र मु	र क ऽब न	लाऽऽऽ ऽ गेऽऽ, त
	३	×	२	०
				ध
	म पग –सा सानि़	री –सा सा	म ग – –म प	सां प ग, ग
	र सऽ ऽम नऽ	ध्याऽ न क	रे ऽ ऽ ऽआ ऽ	ली ऽ री, द
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कामोद, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ऐसन कैसन बरसत बरखा
घिरिघिरि आइ छाय दिस चहुँवा ॥
बहु दिन ते छिप गयो सूरजवा
ऊब रे गई बरसन ते मनवा ॥

स्थाई

				म				म				प			
०	री	सा	सा	री	रीप	प	प	–,	रीरी	रीप	प	ध	ध	प	–
०	ऐ	स	न	कै	ऽऽ	स	न	ऽ,	बर	सऽ	त	ब	र	खा	ऽ
३				×				२				०			
				म				म				प			
गम,	री	सा	सा	री	रीप	प	प	–	रीरी	रीप	प	ध	ध	प	–
ऽऽ,	ऐ	स	न	कै	ऽऽ	स	न	ऽ	बर	सऽ	त	ब	र	खा	ऽ
३				×				२				०			
०	गग	–म	प	गम	री	सा,	री	– सा	मरी	पप		सांसां	धप	मम	रीसा
०	घिरि	ऽघि	रि	आऽ	ऽ	इ,	छा	ऽ य	दिऽ	सऽ		चऽ	हुँऽ	वाऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
सा,	री	सा	सा												
ऽ,	ऐ	स	न												
३															

अंतरा

०	मरी	प	प	सां	–	सां	ध	सां	सां	सां	–	सां	रीं	सां	–
०	बहु	दि	न	ते	ऽ	छि	प	ग	यो	सू	ऽ	र	ज	वा	ऽ
३				×				२				०			
सां															
०	मं	–	रीं	सां	ध	प	म	री	सा	मरी	पप	सांसां	धप	मम	रीसा
०	ऊ	ऽ	ब्रे	ग	ई	ब	र	स	न	तेऽ	ऽऽ	मऽ	नऽ	वाऽ	ऽऽ
३				×				२				०			
सा,	री	सा	सा												
ऽ,	ऐ	स	न												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कामोद, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

बिन जाना सो गारे जन बात रे
हमें ना सुनाव, आये हंसों
कान उघारे ना राखे रे ॥
बुधि सो करो जो हो बातें
समझ परीग्यो तोहे
शोक उभारन का आयो रे ॥

स्थाई

		म			प	
गमप–	गम रीसा सा	रीप – प	पप – प	धप – ग,	गमप–	
बिंSSS	SS जा ना सो	गा रे S ज	न बा S त	रेS S S,	बिSS	
३		×	२	०		
		म				
गम रीसा सा	रीप – प	पप – प	धप – –	मप		
नS जा ना सो	गा रे S ज	न बा S त	रेS S S,	हS		
३		×	२	०		
मम री – सा	री –री – सा	– धनि प प	सा – –,	मरी		
मेंS ना S सु	ना Sव S आ	S येS S हं	सों S S,	काS		
३		×	२	०		
			प			
– प – प	सां – ध प	धप –, ग मप	री – सा,	गमप–		
S न S उ	घा S रे ना	रा S S SS	खेS रे,	SSSबिं		
३		×	२	०		

अंतरा

म	री प – प	सां – – –	सां – सां –	सां रीं सां,	प
बु	धि सो S क	रो S S S	जो S हो S	बा S तें,	स
	३	×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	सां	–	सां	रीं	–	सां	ध	प	–	प	–	धप	–	–,	म
म	झ	ऽ	प	री	ऽ	ग्यो	ऽ	ऽ	ऽ	तो	ऽ	हेऽ	ऽ	ऽ,	शो
३				×				२				०			

									प						
री	प	–	प	सां	–	ध	प	धप	–	ग	मप	री	–	सा,	गमप–
ऽ	क	ऽ	उ	मा	ऽ	र	न	काऽ	ऽ	आ	ऽऽ	यो	ऽ	रे,	विंऽऽऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हमीर, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

अजब दुनिया जारिया कहां है
जान पन्यो ना मैं का, आगे के पाछे रे ॥
बेठे ज्यो गुनी ये है, पूछत इनसो मैं
बतैदे कहां, ये आगे के पाछे रे ॥

स्थाई

	ध				
गम	निनि पप–गम री	गम प – ग	म ध –नि सां	निध निध प, धप,प–	
अऽ	जऽ बऽ ऽदुऽ नि	याऽ ऽ ऽजा	रि या ऽक हां	है ऽ ऽऽ ऽ, जा ऽऽऽ	
	३	×	२	०	
	गमम री सा ग	म ध नि सां	सांरीं सांसां नि धनि	धनिध प प ग, ग	
	ऽऽन प न्यो ना	मैं का आ गे	केऽ ऽऽ पा छेऽ	रेऽऽ ऽऽ ऽ, अ	
	३	×	२	०	

अंतरा

गम	निनि धपप– –ग म	धनि सांसां ध	नि सां रीं सां	निध नि धपप–, सा	
बेऽ	ठेऽ ज्योऽऽऽ ऽगु नी	येऽ ऽ है पू	छ त इ न	सोऽ ऽ मैंऽऽऽ, ब	
	३	×	२	०	
	ग म ध नि	धनि सां नि ध	सांरीं सांसां नि धनि	धनिध– पप ग, ग	
	तै दे क हां	येऽ ऽ आ गे	केऽ ऽऽ पा छेऽ	रेऽऽऽ ऽऽ ऽ, अ	
	३	×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हमीर, ताल त्रिताल, लय द्रुत

जारे जारे रंगरेज्या रे
खेलन आया रंग लै अनाडी रे ॥
धीटाई करो रे तू, छैला बन आजे रे
पुडिया लायो कां रे गुलालन अबीर रे ॥

स्थाई

																		प	
–	पप	ग	म	नि	ध	–	–	निनि	–	सांरीं	सांसां	निनि	धपप–	–	ध				
ऽ	जाऽ	ऽ	रे	जा	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	रंऽ	गऽ	रे	ऽ	ज्याऽऽऽ	ऽरे				
३				×				२				०							
–,	री	ग	म	ध	म॑	–	ध	नि	धपपम॑	–	ध	निसां	रींसां	सांनि	निध				
ऽ,	खे	ल	न	आ	था	ऽ	रं	ग	लैऽऽऽ	ऽ	अ	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	डीऽ				
३				×				२				०							
निध	पप	ग	म																
रेऽ	जाऽ	ऽ	रे																
३																			

अंतरा

																ध			
–	रीग	मध	नि	धनि	सां	सां	सांरीं	सांसां	–	नि	ध	म॑	धनिनि–	प	पप				
ऽ	धीटा	ईक	रो	रेऽ	ऽ	तू	छैऽ	लाऽ	ऽ	ब	न	आ	जेऽऽऽ	ऽ	रेऽ				
३				×				२				०							
गम,	रेग	मध	नि	धपपम॑	म॑	–	ध	निसांरीं–	सां	–	नि–ध	नि–ध	पप	–	पध				
ऽऽ	पुडि	याला	यो	कांऽऽऽ	रे	ऽ	गु	लाऽऽऽ	लन	ऽ	अऽऽऽ	बीऽऽऽ	रऽ	ऽ	रेऽ				
३				×				२				०							
पनिध–		पप	ग	म															
ऽऽऽऽ		जाऽ	ऽ	रे															
३																			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नंद, ताल त्रिताल, लय मध्य

राजन अब तो आ जारे
थिर न रहत कजरा आँखन में ॥
अब ना सहूं रे पिया
छब तोरी आगई आँखन में ॥

स्थाई

ग	ग											प	नि		
प	री	–	सा	–	सा	ग	मप	गप	–	–	–	ध	ध	मं	–
रा	ज	ऽ	न	ऽ	अ	ब	तोऽ	आऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			
	ग														
प	री	–	सा	–	सा	ग	मप	गप	–	–	–	नि	–	निध	प
रा	ज	ऽ	न	ऽ	अ	ब	तोऽ	आऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	रेऽ	ऽ
०				३				×				२			
		नि													प
प	ध	ध	धप	मं	प	ग	प	ध़	नि़	सा	ग	–	म	ध	ध
थि	र	ऽ	नऽ	ऽ	र	ह	त	क	ज	रा	आँ	ऽ	ख	न	में
०				३				×				२			

अंतरा

प	रीं	–	नि	प	प	ध	प	सां	–	–	–	–	–	सां	सां
अ	ब	ऽ	ना	ऽ	स	हूं	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि	या
०				३				×				२			
सां	गं	–	मं	पं	रीं	–	सांनि	प	–	ग	मप	री	सा	साग	मध
छ	ब	ऽ	तो	री	आ	ऽ	गऽ	ई	ऽ	आँ	ऽऽ	ख	न	मेंऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नाट, ताल त्रिताल, लय मध्य

सपत सुर गावे गुनीजन
भाव राग ताल काल की उगम ॥
सपत सुर रंग तरंग अति
अनंत नाद कर ग्राम गावे ॥

स्थाई

	ग						म			म				सा	
सा	री	ग	म,पध	पप,–	म	–	ग	री	–	म	ग	री	सारीसासा	––,	ध़
स	प	त	ऽ,सुऽ	रऽ,ऽ	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	गु	नी	ऽ	जऽनऽ	ऽऽ,	भा
	३				×				२				०		

	नि				ग								प	म	
–	पं	सा	–	सा	री	–	री	री	ग	–म	पधपप	म	ग	री,	सा
ऽ	व	रा	ऽ	ग	ता	ऽ	ल	का	ऽ	ऽल	कीऽऽऽ	उ	ग	म,	स
३				×				२				०			

अंतरा

					गं								पं	मं	सां
पध	पप	सां	–सां	सां	रीं	–	रीं	रीं	गं	मं	पंधंपंपं	मं	गं	रीं	सां,	ध
सऽ	पऽ	त	ऽसु	र	रं	ऽ	ग	त	रं	ऽ	गऽऽऽ	अ	ति	अ	नं,	ऽ
	३				×				२				०			

											प	म			
प	निसां	रीं	सां	ध	प	म	गम	प	म	ग	री	सारीसासा	––,	सा
त	नाऽ	ऽ	द	क	र	ऽ	ग्राऽ	ऽ	म	गा	ऽ	वेऽऽऽ	ऽऽ,	स
३				×				२				०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नाट, ताल एकताल, लय द्रुत

पिहर न मन लागे
नैनन में पिय बसगे ॥
लेवा नाहीं आयो देवराहो
हूं जावुं कस सजनी गे ॥

स्थाई

												सा	सारी
												ये	ऽऽ
												२	
								री		री			
री	री	ग	री	ग	म	ग	—	सा	—	सा	सारी		
पि	ह	र	न	म	न	ला	ऽ	ऽ	ऽ	गे	ऽऽ		
०		३		४		×		०		२			
						री		री					
री	री	ग	री	ग	म	ग	—	सा	—	सा	—		
पि	ह	र	न	म	न	ला	ऽ	ऽ	ऽ	गे	ऽ		
०		३		४		×		०		२			
सा							ग						
सां	—	ध	प	पप	ग	म	री	ग	सा	सा	सारी		
नै	ऽ	न	न	मेंऽ	ऽ	पि	य	ब	स	गे	ऽऽ		
०		३		४		×		०		२			

अंतरा

सां	सां	ध	प	प	सां	सां	सांरीं	रीं	रीं	रींगं	गंरीं
ले	वा	ना	हीं	आ	यो	दे	ऽ ऽ	व	रा	होऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	
सां	सां	ध	प	प	सां	सां	सांरीं	रीं	रीं	रीं	—
ले	वा	ना	हीं	आ	यो	दे	ऽ ऽ	व	रा	हो	ऽ
०		३		४		×		०		२	
सांसां	रींगं	गंरीं	सांसां	ध	प	पध	पप	गम	गरी	सारी	गरी
हूंऽ	ऽऽ	जाऽ	वूंऽ	क	स	सऽ	बऽ	नीऽ	ऽऽ	गेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग छायानट, ताल त्रिताल, लय मध्य

नहीं आना तुम्हें, आते हो जी
इक दिन बन ठन कर मिल जाते हो ॥
लगन लगी अब उनसे तुमरी
काहे याद होत हमरो, दिन भूले हो ॥

स्थाई

ऽ	ऽ	सा	सा
ऽ	ऽ	न	हीं
		२	

ग				ग				प		म					
री	ग	–री	ग	म	प	–	म	ग	–	री	ग–	सारी	सासा,	ध़	प़
आ	ना	ऽऽ	तु	म्हें	आ	ऽ	ते	हो	ऽ	ऽ	ऽऽ	जीऽ	ऽऽ,	इ	क
०				३				×				२			
सा	सा	सा	सा	री	री	ग	री	ग	म	मप	गम	री	सा,	सा	सा
दि	न	व	न	ठ	न	क	र	मि	ल	जाऽ	ऽऽ	ते	हो,	न	हीं
०				३				×				२			

अंतरा

ऽ	ऽ	री	ग
ऽ	ऽ	ल	ग
		२	

म	री	ग	म	प	ग	म	प	सां	–	ध	प	धपप	री,	रीग	म
न	ल	गी	ऽ	अ	ब	उ	न	से	ऽ	तु	म	रीऽऽ	ऽ,	काऽ	ऽ
०				३				×				२			
म	प	–प	सां	–सां	पध	पप	री	ग	म	मप	गम	री	सा,	सा	सा
हे	या	ऽद	हो	ऽत	हऽ	मऽ	रो	दि	न	भूऽ	ऽऽ	ले	हो,	न	ही
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री, ताल त्रिताल, लय मध्य

टेसुल बन फुले रंग छाये
भंवर रस लेत फिरत मदभरे ॥
अरे रसलोभीया, हमें ना तरसावो
पिया जो परदेसा, जरत मन मेरो ॥

स्थाई

म | प ग –म नि | ध – प – | म – –म ग | प –म म, म |
टे | सु ल ऽब न | फू ऽ ले ऽ | ऽ ऽ ऽरं ग | छा ऽऽ थे, मं |
३ | × | २ | ० |

ग री –नि सा | म – म, ग | म धध –नि सां | नि धप धप, म |
व र ऽर स | ले ऽ त, फि | र तऽ ऽम द | म रेऽ ऽऽ, टे |
३ | × | २ | ० |

अंतरा

पनिधप | ग म –ध नि | नि सां सां, नि | सां सां निसां रीं | नि सां निध, निग |
अऽऽऽ | रे ऽ ऽर स | लो मी या, ह | में ना ऽत र | सा ऽ वोऽ, पि |
३ | × | २ | ० |

म ध –नि सां | निध निध धप सांनि | निध धपम प म | पध धप मग, म |
या जो ऽप र | देऽ ऽऽ साऽ जऽ | रऽ तऽऽ म न | मेऽ ऽऽ रोऽ, टे |
३ | × | २ | ० |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री, ताल त्रिताल, लय मध्य

पार नहीं हो मन, धीर ना धर
कर नम सुर-सिंधु कन तब पायो ॥
गावे गान गुनी जब, तब कन लागे सिंधु
वह सुर-सिंधु कन जानो ॥

स्थाई

म																
ग॒	री	प	–	म	म	–	–	ग॒	–	री	मग॒	मग॒	री	सा	–,	सा
पा	ऽ	र	ऽ	न	हीं	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	म	न	ऽ,	धी
	३				×				२				०			
	–	सा	म	–	ग॒	ग॒	–	म	म	ध	ध	नि॒	सां	–	नि	ध
	ऽ	र	ना	ऽ	ड	र	ऽ	क	र	न	म	सु	र	ऽ	सिं	ऽ
	३				×				२				०			
				प		ध		प								म
	पध	नि॒	ध	म	म	प	–	ध	ध	ग॒	री	मग॒	मग॒	री	सा,	ग॒
	ऽऽ	ऽ	धु	ऽ	क	न	ऽ	त	ब	पा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	यो	ऽ,	पा
	३				×				२				०			

अंतरा

	सां															
सा	नि॒	ध	–नि॒	ध	सां	–	सां	नि॒	रींसां	–	मंगं॒	–	रीं	सां	–,	नि॒
गा	ऽ	ऽ	ऽवे	ऽ	गा	ऽ	न	गु	नीऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ज	ब	ऽ,	त
	३				×				२				०			
		रीं														
	नि॒	–	सां	मं	मं	–	मं	–	गं॒	रीं	गं॒	मं	मं	–	मं,	ध
	ब	ऽ	क	न	ला	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सिं	ऽ	धु,	ब
	३				×				२				०			
							नि॒									म
	नि॒	–	सां	मंगं॒	रीं	–	सां	–	नि॒	ध	ग॒	री	मग॒	मग॒	रीसा,	ग॒
	ह	ऽ	सु	रऽ	सिं	ऽ	धु	ऽ	क	न	जा	ऽ	ऽऽऽऽ		नोऽ,	पा
	३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री, ताल त्रिताल, लय मध्य

फेर आई मौरा अंबुवापे
अजब गोलाई बनायो रंगायो ॥
इत तो तरु पाति, झरन सब लागे
देखले मनरंग गुसैला केसूडा यो ॥

स्थाई

				प								म			
नि	–	नि	ध	प	म	ध	–	–	–	–	–	म	पध	–प	
फे	ऽ	र	आ	ई	मौ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अं	बुऽऽऽ		
	३					×				२					

												म	म		
ग	री	–	सा	री	–	सा,	सा	म	–	म	ग	ध	–	धप	निसां
ज	व	ऽ	गो	ला	ऽ	ई	ब	ना	ऽ	यो	रं	गा	ऽ	यो	फेऽ
३				×				२				०			

अंतरा

म	म											सां			
ग	ग	म	–नि	ध	धनि	सां	सां	नि	सां	सां	–सां	नि	रीं	–	सां, म
इ	त	तो	ऽत	रु	पा	ऽ	ऽ	ति	र	न	ऽस	ब	ला	ऽ	गे, दे
	३				×				२				०		

ध	नि	–सां	मंगं	गं	रीं	रींसां	–सांरीं	सांसां	निध	–प	म	मप	ध	धप–	निसां
ख	ले	ऽम	नऽ	रं	ऽ	गऽ	ऽ	गुऽ	सैऽ	लाऽ	ऽके	सू	डाऽऽ	योऽऽ	ऽफेऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग बागेश्री, ताल त्रिताल, लय द्रुत

तान् देरेना तदारे दानी दीम्
तनत दीम् तननत दीम्, तनन तन देरेना दीम्
तान् तदारेना तदारे दानी तार्दानी ॥
तानोम् दिर दिर दिर दिर तान् देरेना
देरेना तन तना तना तदानी दीम् तदीम् तदीम्
तान् तदारेना तदारे दानी तार्दानी ॥

स्थाई

												–	–	–	नि़
												ऽ	ऽ	ऽ	ता
												०			
–	सा	ग॒	म	ध	–	–	ध	प	ध	नि॒	सां	नि॒	ध	म,	–
ऽ	न्	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	त	दा	रे	दा	नी	दी	ऽ	म्,	ऽ
३				×				२				०			
–	म	प	ध	ग॒	–	री	ग॒	म	ग॒	री	सा	री	–	सा	–सा
ऽ	त	न	त	दी	ऽ	ऽ	ऽम्	त	न	न	त	दी	ऽ	ऽ	ऽम्
३				×				२				०			
–	री	री	सा	नि़	ध़	नि़	सा	नि़	सा	–	ग॒	–ग॒	म	ध	प
ऽ	त	न	न	त	न	दे	रे	ना	दी	ऽम्	ता	ऽन्	त	दा	रे
३				×				२				०			
ध,	नि॒	सां	नि॒	ध	म,	धनि॒	सांरें	गंरें	सांनि॒	धप	मग॒	रीसा	नि़सा	सा,	नि़
ना,	त	दा	रे	दा	नी,	ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	दाँऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नी,	ता
३				×				२				०			

अंतरा

															म
												–	–	–	ग॒
												ऽ	ऽ	ऽ	ता
												०			
–	म	नि॒	ध	सां	नि॒	सां	–	–	नि॒	सां	नि॒	सां	–	–,	नि॒
ऽ	नोम्	दिर	दिर	दिर	दिर	ता	ऽ	ऽ	न्	दे	रे	ना	ऽ	ऽ,	दे
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	नि॒	सां	नि॒	सां	रीं	–	नि॒	सां	–	–,	नि॒	सां	नि॒	सां	नि॒
रे	ना	त	न	त	ना	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ,	त	दा	ऽ	ऽ	नि
३				×				२				०			
ध	–ध	प	ध	नि॒	–नि॒	ध	नि॒	सां	–	सां,	ग॒	–ग॒	म	ध	प
दी	ऽम्	ऽ	त	दी	ऽम्	ऽ	त	दी	ऽ	ऽम्,	ता	ऽन्	त	दा	रे
३				×				२				०			
ध	नि॒	सां	नि॒	ध	म	धनि॒	सांरीं	गंरीं	सांनी	धप	मग॒	रीसा	नि़सा	सा,	नि़
ना	त	दा	रे	दा	नी	ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	दाऽ	ऽऽऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	नी,	ता
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बहार, ताल त्रिताल, लय विलंबित

रस बरसायो रे
उमंग भर आयो मन रिझावन सो ॥
मध सुगंध ले रितुराज रंगायो
बन-घन चहुँ दिस सजावन सो ॥

स्थाई

– – – –	– – – –	– – – –	म, म, –प, प
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	र, स, ऽ ब, र
३			
नि म, प, –, –	ग –, – –	ग म, –, म, –	म, –, –, –
सा ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	ऽ ऽ, ऽ ऽ	ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	यो, ऽ, ऽ, ऽ
×			
म नि, –, ध, –	नि प, –, म, –	ग, म, नि, –	ध, –, नि, सां
रे ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	उ, मं, ग, ऽ	ऽ, ऽ, म, र
२			
सां –, – –	रीं नि, सां, नि, ध	नि प, –, म, –	–, –, म, म
आ ऽ, ऽ ऽ	ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	ऽ ऽ, ऽ, यो, ऽ	ऽ, ऽ, म, न
०			
–, म, –, म	–, प, –, प	नि नि प म, प नि प –, ग, –	म, म, –प, प
ऽ, रि, ऽ, झा	ऽ, व, ऽ, न	सो ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ, ऽ	र, स, ऽ ब, र
३			

अंतरा

– – – –	– – – –	– – – –	म, ग, – म, नि ध नि
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	म, ध, ऽ सु, गं ऽ ध
३			
सां –, – –	नि सां, –, सां, सां	सां –, – –	नि सां, –, सां, सां
ले ऽ, ऽ ऽ	ऽ ऽ, ऽ, रि, तु	रा ऽ, ऽ ऽ	ऽ ऽ, ऽ, ज, रं
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रीं, –, सां, –	मं गं, –, मं गं, मं गं	मं, –, रीं रीं, –	सां, –, नि सां –
गा, ऽ, ऽ ऽ	ऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ	ऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ	यो, ऽ, ऽ ऽ ऽ
२			
सां –, नि –	ध –, नि सां	सां रीं, –, सां, –	ध, नि, प, म
ब ऽ, न ऽ	ऽ ऽ, ध न	च ऽ, ऽ, हुँ, ऽ	ऽ, ऽ, दि, स
०			
–, म, – म	–, प, –, प	नि – नि प, प नि प –, ग, –	म, म, – प, प
ऽ, स, ऽ जा	ऽ, ब, ऽ, न	सो ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ, ऽ	र, स, ऽ ब, र
३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बहार, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ऐसो कैसो आयो रीता रे
अंबुवा पे मोर ना आयो
कन्यो ना गुंजारे भंवरा रे ॥
पीर बढ्योरे कोयल की
रंग ना खिल्यो हे फुलवारे ॥

स्थाई

सां	– धनि प म	प – ग म	म – नि ध	धनि सांनि रींसां, सां
ऐ	ऽ सोऽ कैसो	आ ऽ ऽ ऽ	यो ऽ री ता	रे ऽ ऽऽ ऽऽ, ऐ
	३	×	२	०
	– धनि प म	प – ग म	म – नि ध	धनि सांनि सां, निनि
	ऽ सोऽ कैसो	आ ऽ ऽ ऽ	यो ऽ री ता	रे ऽ ऽऽ ऽ, अंऽ
	३	×	२	०
	पप ग म रीसा	री – सा सा	म – म –	पप मग म, री
	बुऽ वा ऽ पेऽ	मो ऽ ऽ र	ना ऽ आ ऽ	योऽ ऽऽ ऽ, क
	३	×	२	०
	सा म – म	पप मग म –	नि ध नि ध	धनि सांनि रींसां, सां
	न्यो ना ऽ गुं	जाऽऽऽ ऽऽ	रे ऽ मं ब	राऽऽऽ रेऽ, ऐ
	३	×	२	०

अंतरा

सां	– धनि प म	गम धनि सां सां	सां – सां सां (नि नि)	रीं – सां, सांसां
पी	ऽ रऽऽ ब	ढ्योऽऽऽ ऽ रे	को ऽ य ल	की ऽ ऽ, रंऽ
	३	×	२	०
	धनि पम प निप	ग (म) – – –	म नि – ध नि ध	धनि सांनि रींसां, सां
	गऽ नाऽऽ खिऽ	ल्योऽ ऽ ऽ	हेऽ ऽऽ फुल	वाऽ ऽऽ रेऽ, ए
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बहार, ताल त्रिताल, लय द्रुत

भंवर मन गेल्यो हो रे हो रे
रितु बसंत में कलि फूलन पै ॥
रंग-सुरंग छायो बन बन
सज धज बुलायो कलि फूलन पै ॥

स्थाई

म		म										म					म		
ग॒		ग॒	म	धनि॒	प	म	प	–	मप॒	–	ग॒	–	म	प			ग॒	–,	ग॒
भं		व	र	मऽ	न	गे	ल्यो	ऽ	होऽ	ऽ	रे	ऽ	हो	रे			ऽ	ऽ,	रि
		३				×				२				०					
		म	प	री	–	सा	सा	म	म	म	–	प	म	प			म ग॒	–,	ग॒
		तु	ब	सं	ऽ	त	में	क	लि	फू	ऽ	ल	न	पै			ऽ	ऽ,	भं
		३				×				२				०					

अंतरा

म			म																
ग॒		ग॒	म	नि॒ध	नि	सां	–	सां	–	–	–	सां	सांनि	रीं	–	सां,		नि॒नि॒	
रं		ग	सु	रंऽ	ग	छा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ब	नऽ	ब	ऽ	न,		सऽ	
		३				×				२				०					
		पम	प	ग॒	म	री	–	सा	म	म	म	–	प	म	प		म ग॒,	म ग॒	
		जऽ	ध	ज	बु	ला	ऽ	यो	क	लि	फू	ऽ	ल	न	पै		ऽ,	भं	
		३				×				२				०					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दरबारी कानडा, ताल एकताल, लय विलंबित

सुंदर मुख तेरो को बरनी न जाय
मुख हरत मन मेरो ॥
खेलत कुंवरकान्ह रविआंगनमें
परत नही परछाईं, इह देख
निरखनिरख नैन भर आये ॥

स्थाई

री नि़, – –, री सा, – – सा म, – –, री –, – – | सा, –, ध़, – नि़, –, प़, प़ |
मुं ऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ, द ऽ, ऽ ऽ | र, ऽ, ऽ, ऽ ऽ ऽ, मु, ख |
३ ४

ग़, –, –, – –, –, –, – | री री, –, –, – सा, –, –, – |
ते, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ, ऽ | रो ऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ |
× ०

री नि़, – –, री सा, – – सा म, – –, री –, सा – | नि़ सा, – नि़सानि़सा, –, नि़सा, रीसा |
को ऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ, ब ऽ, र ऽ | नी, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ, ऽ ऽ, न ऽ |
२ ०

ध़, –, –, – ध़ नि़, – –, प़, – | प़, –, –, – म़ प़ म़ प़, –, –, – |
जा, ऽ, ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ | य, ऽ, ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ |
३ ४

म़, –, प़, – ध़, –, नि़, – | नि़ सां, –, –, – नि़ सां, –, री, सा |
मु, ऽ, ख, ऽ ह, ऽ, र, ऽ | त, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ, म, न |
× ०

री ग़, –, –, – री री, –, –, – | नि़ सां, –, –, नि़ री, –, सा – |
मे ऽ, ऽ, ऽ, ऽ रो ऽ, ऽ, ऽ, ऽ | ऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ |
२ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

म, म, प, – म प, प, ध, ध | सां, –, सां, नि सां सां, सां रीं, रीं, सां |
खे, ल, त, ऽ ऽऽ, कुं, व, र | का, ऽ न्ह, र वि आं, ग न, में, ऽ |
४ ×

प
नि नि, प म, प, नि सां गं, रीं रीं सां | निनिपम, सां, –, सां नि नि प म, प, –म, पनि |
प र, त न, ही, प र छा, ईं ऽ ऽ | इ ऽ ह ऽ, दे, ऽ, ख नि ऽ र ऽ, ख, ऽ नि, रख |
० २

सा री
ग, –, री री, – नि, –, सा, री सा | ग, –, –, – री री, –, सा, – |
नै, ऽ, न ऽ, ऽ ऽ, ऽ, म, र ऽ | आ, ऽ, ऽ, ऽ ये ऽ, ऽ, ऽ, ऽ |
० ३

नि सा नि सा, री सा री ग, री ग म –, री सा ध, नि, – प, प |
सुं ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, द र ऽ, ऽ, ऽ मु, ख |
४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दरबारी कानडा, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

गोरी तोरे नैना नैना, करत बरजोरी हमसंग
हरत मन मेरो मेरो ॥
चाहत हम गोरी तुमको, करोरी बतियाँ
बतियाँ लागे लागे मन मेरो भाये भाये ॥

स्थाई

सा	री	नि़	सा	–	री	–	ग	–	–	–	री	–	री	सा	–, नि़
गो	री	तो	रे	ऽ	नै	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	नै	ऽ	ना	ऽ	ऽ, क
	३				×				२				०		
	सा	नि़	री	सा	री	ऽ	ध़	–	–	–	नि़	नि़	सा	सा	–, नि़
	र	त	व	र	जो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ह	म	सं	ग	ऽ, ह
	३				×				२				०		
	सा	नि़	री	सा	नि़	–	ग	–	–	–	री	–	री	सा	–, री
	र	त	म	न	मे	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रो	ऽ	ऽ, गो
	३				×				२				०		

अंतरा

म	प	प	ध	–ध	नि	सां	–	नि	सां	सां	सां	नि	रीं	सां	–, –
चा	ह	त	ह	ऽम	गो	री	ऽ	तु	म	को	क	रो	री	ऽ	ऽ, ऽ
	३				×				२				०		
		रीं													
	नि	सां	ध	–	ध	गं	–	गं	मं	नि	–	सां	नि़	–	सा –
	ब	ति	याँ	ऽ	ब	ति	ऽ	याँ	ऽ	ला	ऽ	गे	ला	ऽ	गे ऽ
	३				×				२				०		
	री	सा	नि़	सा	नि़	–	ग	–	–	–	री	–	री	सा	–, रीं
	म	न	मे	रो	भा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ	ये	ऽ	ऽ, गो
	३				×				२				०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अडाणा, ताल एकताल, लय द्रुत

सुन जियरा तरसे जियरा
सुन जब कान तान मुरली की जिय तरसे ॥
सुर मुरली की तान सुन गोपीजन नाच करत
गीत रचत गावत गुनी ॥

स्थाई

री	नि़	सा	री	ग	—	म	प	ध	—	नि	सां
सु	न	जि	य	रा	ऽ	त	र	से	ऽ	जि	य
×		०		२		०		३		४	
सां	—	नि	म	नि	प	सां	—	सां	ध	नि	प
रा	ऽ	सु	न	ज	ब	का	ऽ	न	ता	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	
म	प	ग	म	री	सा	री	नि़	सा	री	ग,	म
मु	र	ली	ऽ	की	ऽ	जि	य	त	र	से,	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	म	प	प	ध	—	नि	सां	—	नि	सां	सां
सु	र	मु	र	ली	ऽ	की	ता	ऽ	न	सु	न
×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	रीं	रीं	रीं	सां	नि	सां	ध	नि	नि
गो	ऽ	पी	ऽ	ज	न	ना	ऽ	च	क	र	त
×		०		२		०		३		४	
मं	—	रीं	सां	नि	सां	ध	नि	म	प	ग	म
गी	ऽ	त	र	च	त	गा	ऽ	व	त	गु	नी
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अडाणा, ताल एकताल, लय द्रुत

कंचन पिचकारी
सोहत कर फेकतरी दे
भरि रंग भरि मारत सखी ॥
सज धज दल आवत है
अररर येहो, डररर हे हो,
शोर मचाय नाचे सखी ॥

स्थाई

नि	—	सां	नि	सां	रीं	सांसां	—	नि ध	—	धनि	—
कं	ऽ	च	न	पि	च	काऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	
नि	—	सां	नि	सां	रीं	सां	—	—	—	नि ध	—
कं	ऽ	च	न	पि	च	का	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
०		३		४		×		०		२	
नि	—	प	म	प	म	नि	—	प	म	प	म
सो	ऽ	ह	त	क	र	फे	ऽ	क	त	री	दे
०		३		४		×		०		२	
म	म	प	प	नि ध	नि ध	नि	—	सां	ध	नि	नि
भ	रि	रं	ग	भ	रि	मा	ऽ	र	त	स	खी
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

म	म	प	प	नि ध	नि ध	नि	—	सां	नि	सां	—
स	ज	ध	ज	द	ल	आ	ऽ	व	त	है	ऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	सां	ध	ध	नि	नि	सां	सां	ध	ध	नि	नि
अ	र	र	र	ये	हो	ड	र	र	र	हे	हो
०		३		४		×		०		२	
नि	–	सांरींसां–नि		सांरीं	–रीं	रींसां	निसां	रींसां	निध	नि	नि
शो	ऽ	रऽऽऽ	म	चाऽ	ऽय	नाऽ	ऽऽ	चेऽ	ऽऽ	स	खी
०		३		४		×		२		०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कानडा, ताल त्रिताल, लय द्रुत

मेहल मंदरमांही रे
आज रे पिया दियना बरे रे ॥
रतिया चौदिस बनायो चौगुन
और मंगलचार बधावो सहेल्यारे ॥

स्थाई

								म							
म	नि	–	प	–	म	प	नि	प	–	–	–	ग	–	ग	ग
मे	ह	ऽ	ल	ऽ	मं	द	र	मां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ही	रे
०				३				×				२			

														नि	नि
म	रीं	–	सा	री	नि	सा	–	री	ग	–	म	–	प	ध	ध
आ	ज	ऽ	रे	ऽ	पि	या	ऽ	दि	य	ऽ	ना	ऽ	ब	रे	रे
०				३				×				२			

अंतरा

							नि								
निनि	पम	प	ध	–	नि	नि	नि	सां	–	सांनि	ध	नि	–	सां	सां
रऽ	तिऽ	या	चौ	ऽ	दि	स	ब	ना	ऽ	योऽ	ऽ	चौ	ऽ	गु	न
०				३				×				२			

								नि							
निसां	रींमं	रीं	सां	निनि	पम	–प	प	ध	–	ध	नि	सां	रींसां	निनि	पम
औऽ	ऽर	मं	ग	लऽ	चाऽ	ऽर	ब	धा	ऽ	बो	स	हे	ल्याऽ	रेऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कानडा, ताल एकताल, लय द्रुत

तान कपतान
नूर सूर या जगमें, फतेअली अली, बली बली बली ॥
मौमदखां धीर हदूखाँ हसूखाँ, भास्कर भये
अलादियो रजबली बली, बली बली बली ॥

स्थाई

--	सांनि	सांरीं	सांनि	पम	प	सां	-	प	-	नि	प
ऽऽ	ताऽ	ऽऽ	नऽ	कऽ	प	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
०		३		४		×		०		२	
म	-	री	प	-	म	नि	प	सां	नि	सां	-
नू	ऽ	र	सू	ऽ	र	या	ऽ	ज	ग	में	ऽ
०		३		४		×		०		२	
नि	प	नि	सां	नि	सां	-	सांरीं	सां,	सांरीं	सां	सांरीं
फ	ते	अ	ली	अ	ली	ऽ	बऽ	ली	बऽ	ली	बऽ
०		३		४		×		०		२	
नि											
सां	सांनि										
ली,	ताऽ										
०											

अंतरा

म	प	-	नि	-	प	सां	-	-	सां	-	सां
मौ	ऽ	ऽ	म	ऽ	द	खां	ऽ	ऽ	धी	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
सां			सां					रीं			
नि	-	-	रीं	-	सां	नि	सां	सां	प	नि	प
ह	ऽ	ऽ	दू	ऽ	खाँ	ह	ऽ	ऽ	सू	ऽ	खाँ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ सां | रींमं रीं | – सांनि॒ | प – | म री | प म |
भा ऽ | स्कऽ र | ऽ मऽ | ये ऽ | अ ला | दि यो |
० ३ ४ × ० २

नि॒ प | सां नि॒ | सांरीं सां | – सांरीं | सां, सांरीं | सां सांरीं |
र ज | ब ली | बऽ ली | ऽ बऽ | ली, बऽ | ली बऽ |
० ३ ४ × ० २

सां सांनि॒ |
ली ताऽ |
०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नायकीकानडा, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आये मंदरवा
पिया मोरे आजन्यो सहेल्यारी ॥
आवो मिल धावो, गावो बजावो
शुभ घडी आजन्यो सहेल्यारी ॥

स्थाई

म म म
ग ग म प ग रीम पम रीसा री सा, नि़
आ ऽ ये ऽ मं द ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ र ऽ वा, पि
३ × २ ०

म म
सा निसा री सा नि़ प़ ग म प रीम रीम पम रीसा, ग
या मोऽ ऽ रे आ ऽ ज न्यो ऽ स हे ल्याऽ ऽऽ ऽऽ रीऽ, आ
३ × २ ०

अंतरा

नि
निनि पम नि प सां सां नि सां रीं सां सां, निनि
आऽ वोऽ मि ल ऽ अा ऽ वो ऽ ऽ गा वो ब जा ऽ वो, शु ऽ
३ × २ ०

म म म
पप ग म रीसा री सा ग म प रीम पम रीसा निसा, ग
भऽ घऽ डीऽ आ ऽ ज न्यो ऽ स हे ल्या ऽऽ रीऽऽऽ, आ
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जैजैवंती, ताल एकताल, लय विलंबित

सुनलै मना मान मद ना करो
झगरो ना लयसुरसंग बेसंग व्है जाय ॥
नादनिधि लय सों समझो मन, गावो गान तब
ना तो बेलय स्वर व्है जाय ॥

स्थाई

सा सा	ग म री ग	प, ग, गरी, –	सासा,–, ध़, नि़
सु न	लै ऽ	ऽ म नाऽ ऽ	ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ
३		४	

ग री री			
मा ऽ न			
×			

सा			
ग़ री	सा,–, सासा,–	सा,–, सारी, नि़	ध़ध़,–, प़,–
म द	ना, ऽ, ऽऽ, ऽ	क, ऽ, रो ऽ, ऽ	ऽऽ,ऽ,ऽ,ऽ
०		२	

ध़ ध़			
प़ प़	पऽरी,–,–,–		
झग	रोऽ,ऽ,ऽ,ऽ		
०			

ग			
री–गरी	ग,–, म, गम	गग, –, री, – –	गरी, –, ग, –
ऽऽऽऽ	ऽ, ऽ, ऽ, ऽऽ	नाऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ	लऽ, ऽ, य, ऽ ऽ
३		४	×

–म प ध			
सुर ऽ			
×			

पमम,–, ग,–	री,–, रीग, म	ग री री –	सा नि़
संऽऽ, ऽ, ग, ऽ ऽ, ऽ, वे ऽ,ऽ		सं ऽ ग ऽ	व्है ऽ
०		२	

री			
सारी,–,–,–	सा,–, नि़सा,–		
जाऽ, ऽ, ऽ, ऽ	य,ऽ,ऽ ऽ,ऽ		
०			

अंतरा

म–पनि	नि, –, सां, निनि	सां निसां,–,–,–	ध, ध, निगं, रींगं
नाऽदनि	धि, ऽ, ल, यऽ	सों ऽ ऽ,ऽ,ऽ,ऽ	स, म, झोऽ,ऽऽ म
४		×	०

रीं सां, सांरीं			
न, गावो			

सांनिध, नि, धप, ध प	प–रीं–	सां,–नि, ध, प	म, ग, री, गम
गाऽऽ, ऽ, नऽ, त ब	नाऽतोऽ	बे, ऽऽ, ल, य	स्व, र, व्है, ऽऽ
२	०		३

रीगं रीसा			
जाऽयऽ			

सा, सा, नि़सारीग, मपम–	ग, री, सा, ध़नि़		
सु, न, लैऽऽऽ ऽऽमऽ	ना, ऽ, ऽ, ऽ ऽ		
४			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जैजैवंती, ताल त्रिताल, लय मध्य

बात तू न करो मन नहीं माने
जान गयी मैं मुख सत बोले ॥
तू अब लाग्यो भूलन मोहे
काहे कर मेरो धर तब बोले ॥

स्थाई

–	सा	–ध़	नि़	री	ग॒	री	–	–री	ग	म	ग	री	ग॒	री	सा
ऽ	बा	ऽत	तू	न	क	रो	ऽ	ऽम	न	न	हीं	मा	ऽ	ने	ऽ
३				×				२				०			
												ग			
ऽ	नि़	–सा	री	नि़	सा	नि़	ध़	–नि़	री	ग	म	री	ग॒	री	सा
ऽ	जा	ऽन	ग	यी	ऽ	मैं	ऽ	ऽमु	ख	स	त	बो	ऽ	ले	ऽ
३				×				२				०			

अंतरा

								गं				गं			
–	म	–प	नि	सां	–	सां	–	रीं	–	गं	मं	रीं	गं॒	रीं	सां
ऽ	तू	ऽअ	ब	ला	ऽ	ग्यो	ऽ	भू	ऽ	ल	न	मो	ऽ	हे	ऽ
३				×				२				०			
–	रीं	–	सां	नि॒	ध	प	प	नि॒	धप	म	ग	री	ग॒	री	सा
ऽ	का	ऽ	हे	क	र	मे	रो	ऽ	धर	त	ब	बो	ऽ	ले	ऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जैजैवंती, ताल त्रिताल, लय मध्य

बहोत ना बोलो बनत कछु नाहीं
बहोत करो तब बनत कछु थोरा ॥
करमहि कर करमहि सत व्यरथ सब
ना बोलो बनत नहीं कछु थोरा ॥

स्थाई

				ग		ग									
–	सा	ध़	नि़	री	–	री	ग	–	म	पम	ग	री	ग॒	री,	री सा
ऽ	ब	हो	त	ना	ऽ	बो	लो	ऽ	ब	नऽ	त	क	छु	ना,	ऽ हीं
३				×				२				०			
–	ग	म	नि॒	ध	प	ग	म	–	प	ग	म	री	ग॒	री	सा
ऽ	ब	हो	त	क	रो	त	ब	ऽ	ब	न	त	क	छु	थो	रा
३				×				२				०			
–	सा	ध़	नि़												
ऽ	ब	हो	त												
३															

अंतरा

–	मप	नि	नि	सां	सां	–	सांसां	ध	नि॒	रीं	रीं	–	रींगं॒	रीं	सां
ऽ	कर	म	हि	क	र	ऽ	कर	म	हि	स	त	ऽ	व्यर	थ	स
३				×				२				०			
सां	रींनि	सां	ध	नि॒	ध	प	ध	प	म	ग	म	री	ग॒	री	सा
ब	नाऽ	ऽ	बो	ऽ	लो	ऽ	ब	न	त	न	हीं	क	छु	थो	रा
३				×				२				०			
–	सा	ध़	नि़												
ऽ	ब	हो	त												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जैजैवंती, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आव बनजारा रे
काहे करत इत उत ठठोरी रे ॥
आजारे आजारे, ना तरसावो
इनसे उनसे करो ना इंत उत ठठोरी रे ॥

स्थाई

रीग मपम ग री	सा – – –	सारी नि़सा ध़नि़ प़	री – ग री
आऽ ऽऽव व न	जा ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽरा	रे ऽ ऽ ऽ
३	×	२	०
ग म नि ध	प ध ग म	गरी ग म प	रींरीं सांनिध पमग रीसा
का हे क र	त इ त उ	तऽ ठ ठो री	रेऽ ऽऽआ ऽऽऽ ऽऽ
३	×	२	०
नि़सारीग मपम ग री			
ऽऽऽऽ ऽऽव व न			
३			

अंतरा

म प नि नि	सां – सां –	गं रींगं रीं सां	रींसां निसांनि सां –
आ जा रे आ	जा ऽ रे ऽ	ना ऽऽ त र	साऽ ऽऽऽ वो ऽ
३	×	२	०
मग रीग मप निसां	री सां नि ध	प म ग री	रींरीं सांनिध पमग रीसा
इन सेउ नसे करो	ना इ त उ	त ठ ठो री	रेऽ ऽऽआ ऽऽऽ ऽऽ
३	×	२	०
नि़सारेग मपम ग री			
ऽऽऽऽ ऽऽव व न			
३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जैजैवंती, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ये लायी सेरा बनरा का
ये मै लायी सेरा बनरा का
दिखादे दिखादे ले जा आली री ॥
अरी मोसे के तो वोके रंग सो
मनलुभायग्यो वाको सेरा आली री ॥

स्थाई

				ग											
सा	–	धनि़	प़	री	–	–	–	रीग	ग,	मप	मग	री	ग	री	सा
ये	ऽ	लाऽ	यी	से	ऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ,	बऽ	नऽ	रा	ऽ	का	ऽ
३				×				२				०			

				ग											
सा	सा	धनि़	प़	री	–	–	–	रीग	ग,	मप	मग	री	ग	री	सा
ये	मैं	लाऽ	यी	से	ऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ,	बऽ	नऽ	रा	ऽ	का	ऽ
३				×				२				०			

										ध					
–	रीग	म	प	सां	–	सां	–	सांनि	धनि	प	धप	मग	मग	रीग	सा
ऽ	दिखा	दे	दि	खा	ऽ	दे	ऽ	लेऽ	ऽऽ	जा	ऽऽ	आऽ	लीऽ	रीऽ	ऽ
३				×				२				०			

अंतरा

म	प	–नि	सां	सां	–	सां	–	–	रींगं	रीं	सां	रींध	नि	ध	प
अ	री	ऽमो	से	के	ऽ	तो	ऽ	ऽ	वोके	रं	ग	सोऽ	ऽ	री	ऽ
३				×				२				०			

										गं					
म	प	–नि	सां	सां	–	सां	–	रींगं	मं	रीं	सां	सां	सां	धनि	प
अ	री	ऽमो	से	के	ऽ	तो	ऽ	वोऽ	ऽ	के	ऽ	रं	ग	सोऽ	ऽ
३				×				२				०			

री	ग	–म	प–	सां	–	ध	प	पध	निध	धप	मग	मग	रीग	री	सारी
म	न	ऽलु	भाय	ग्यो	ऽ	वा	को	सेऽ	ऽऽ	राऽ	ऽऽ	आऽ	ऽऽ	ली	रीऽ
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा, ताल एकताल, लय विलंबित

अनत जानू न जानू, पर भेद कछु जानू
सो परबीन नाहीं रे ॥
देखा न ग्यानी, सकल भेटा न ग्यानी
निकस परा कब से ढूंढन सो
परबीन नाहीं रे ॥

स्थाई

– – – –	– सा ग (प) प	नि – – –	– – ध –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ अ न त	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
४		×	
सां – नि –	– – ग –	पसां, –, निनि, –	प – ग प
ऽ ऽ नू ऽ	ऽ ऽ न ऽ	जाऽ, ऽ, ऽऽ, ऽ	नू ऽ ऽ ऽ
०		२	
(री) ग – – –	(री) सा – – –	सा, –नि़, नि़, –ध़	सा, –, सारी, –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	प, ऽऽ, ऽ, ऽऽ	ऽ, ऽ, ऽऽ, ऽ
०		३	
सा – – सा	प – ग प	रीग, –, –, –	(री) सा – – –
र ऽ ऽ भे	ऽ ऽ ऽ ऽ	द ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
४		×	
–, सासा, सा, साग	– – – –	सा प, –, गप, सा	साप, ग, प, –
ऽ, कछु, जा, नूऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	सो ऽ, ऽ, ऽऽ, ऽ	ऽऽ, ऽ, ऽ, ऽ
०		२	
–, गप, नि, –	धसां, –, नि, –	निसां, रींनि, सां, –	निनि, प, गप, सा
ऽ, पर, बी, ऽ	ऽऽ, ऽ, न, ऽ	ना ऽ, ऽ ऽ, ऽ, ऽ	ऽऽ, हीं, ऽऽ, ऽ
०		३	
सा प, ग, प, –	प – पग, गपगरी, सासाग –, प		
रे ऽ, ऽ, ऽ, ऽ	अऽऽऽ, ऽऽऽऽ, ऽऽनऽ, त		
४			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

– – – –	– ग प नि	सां – – सां	– नि सां नि
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ दे खा न	ग्या ऽ ऽ नी	ऽ स क ल
४		×	
प ग प नि	निसांरींनि, सां, नि, –	निसा, गप, नि, –	गप, निनिसांरीं, सांनि, ध
ऽ भे टा न	ग्याऽऽऽ, ऽ, नी, ऽ	निक, सप, रा, ऽ	कब, सेढ़ूंऽऽ, ऽड, न
०		२	
नि, ग, –, गप	नि, –ध, सां, नि	निसां, रींनि, सां, –	निनि, प, गप, सा
सो, ऽ, ऽ, पर	वी, ऽ ऽ, ऽ, न	नाऽ, ऽऽ, ऽ, ऽ	ऽऽ, हीं, ऽऽ, ऽ ऽ
०		३	
सप, ग, प, –	प–पग, गपगरी, सासाग–, प		
रेऽ, ऽ, ऽ, ऽ	अऽऽऽ, ऽऽऽऽ, ऽ ऽ नऽ, त		
४			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा, ताल झपताल, लय मध्य

सुंदर नयन तोरे देख मन भाये
नाद शिव शिव डमरु बाजे ॥
आये नटराज शेषगलमाल
शोभे संग गिरिजासुत साथ ॥

स्थाई

नि	प	ग	प	प	नि,नि	निसांरीं	निसां	नि	धनि
सुं	द	र	न	य	न, ऽ	तो ऽऽ	ऽऽ	रे	ऽऽ
३	-		×		२			०	
प		ध					री		
सां	–	प	ग	प	ग	–	सा	गपनिसां	गं
दे	ऽ	ख	म	न	भा	ऽ	थे	ना ऽऽऽ	ऽ
३			×		२			०	
रीं	सां	नि,नि	रीं	सां	गप	निनिसांरीं	निसां	नि	धनि
द	शि	व, ऽ	शि	व	डम	रुनाऽऽ	ऽऽ	जे	ऽऽ
३			×		२			०	

अंतरा

	ध					रीं			
नि	प	गपनि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	–
आ	ये	ऽऽऽ	न	ट	रा	ऽ	ज	शे	ऽ
३			×		२			०	
		ध							
सां	नि	प	निसांरीं	निसां	नि	–	–	सां	गं
ष	ग	ल	माऽऽ	ऽऽ	ल	ऽ	ऽ	शो	भे
३			×		२			०	
पंगं	–	सां	रीं	सां	नि	पनि	निसांरींनि	सांनि	धनि
ऽसं	ऽ	ग	गि	रि	जा	सुत	साऽऽऽ	ऽथ	ऽऽ
३			×		२			०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

सिर पै धरी गंग, कमर मृगछाला
मुंडकी गलमाल, हथेली सुल साजे ॥
पिनाकी महाग्यानि, अजब रूप धारे
डुलत डुल आवे, डिमरु डिम बाजे ॥

स्थाई

गप	निध पप गरे सासा	प – प, गप	गरी सासा ग प	सां नि –, गप
सिऽ	रऽ पैऽ धऽ रीऽ	गं ऽ ग, कऽ	मऽ रऽ मृ ग	छा ला ऽ, मुंऽ
३		×	२	०
	निध पप गरे सासा	सा – सा सा	ग प नि सां	रींसां निध पप, गप
	डऽ कीऽ गऽ लऽ	मा ऽ ल ह	थे ली सु ल	साऽ ऽऽ जेऽ, सिऽ
	३	×	२	०

अंतरा

सां	सां सांनि (ध) प ग	सां – सां, नि	सां नि प ग	सां – नि, सां
पि	ना कीऽ म हा	ग्या ऽ नि, अ	ज ब रू प	धा ऽ रे, डु
	३	×	२	०
	गं गं –गं पं	गंरें सांनि धपप, गप	गरे सासा ग प	निसां रेंसां निध, पप
	ल त ऽडु ल	आऽ ऽऽ वेऽऽ, डिऽ	मऽ रुऽ डि म	बाऽ ऽऽ जेऽ, सिऽ
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आवो रिझावो रिझावो रे
सुरन भेद प्रमाण सुनावो रे ॥
भेद अभेद प्रथम कर जानो
सुंदर रूप बनत बनावो रे ॥

स्थाई

री री
– प ग गप | ग – – – | सा – सा – | सा सा – सा |
ऽ आ वो रिऽ | झा ऽ ऽ ऽ | वो ऽ रि ऽ | झा वो ऽ रे |
३ × २ ०

– सा सा सा | ग – ग, ग | प – प, सां | नि – प, पध |
ऽ सु र न | भे ऽ द, प्र | मा ऽ ण, सु | ना ऽ वो, रेऽ |
३ × २ ०

निध, पप ग गप |
ऽऽ, आऽ वो रिऽ |
३

अंतरा

प प
– निध पप ग | नि, – नि, नि | सां नि प ग | सां – सां – |
ऽ भेऽ दऽ अ | भे, ऽ द, प्र | थ म क र | जा ऽ नो ऽ |
३ × २ ०

री सा ग प
– निध पप गप | रीग – सा, सा | ग ग –, प | सां नि –, पध |
ऽ सुंऽ दऽ रऽ | रूऽ ऽ प, ब | न त ऽ, ब | ना वो ऽ, रेऽ |
३ × २ ०

निध, पप ग गप |
ऽऽ, आऽ वो रिऽ |
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शुद्धकल्याण, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ये मोरा रे मोरा मानलै
जानलै तू मो मन हर लीनो ॥
जब मैं सुनी तोरा गान पिया
न जाने तू कब मनहर लीनो ॥

स्थाई

ग	ध प –, ग	–प री – सा	सा – – ध़	री सा ग री
ये	ऽ मो ऽ, रा	ऽऽ रे ऽ मो	रा ऽ ऽ मा	ऽ न लै जा
	०	३	×	२
	प ग ध प	सां – ध –	पध पप ग गप	री – सा ग
	ऽ न लै ऽ	तू ऽ मो ऽ	मऽ नऽ ह रऽ	ली ऽ नो ये
	०	३	×	२

अंतरा

री	ग ग ध प	सां ध रीं सां	सां – ध –	ध रीं – रीं
ब	ब मैं ऽ सु	नी तो ऽ रा	गा ऽ न ऽ	पि या ऽ न
	०	३	×	२
		प		री
	सां – ध –	ध – प प	ग गप री री	सा सा सा ग
	जा ऽ ने ऽ	तू ऽ क ब	म नऽ ह र	ली ऽ नो ये
	०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

बैठी हूँ अकेली पियाबिन रतियाँ
बिरह तन जरत कैसे कटे रतियाँ ॥
शोक यह भार, कैसे सह जाय
नैन झरझरत, पिया नहीं आये ॥

स्थाई

प नि
पर्म– | धप– मंम म | प – प प | ध ध ध पर्म | धप मंम म म |
बैऽऽ | ठीऽऽ हूंऽ अ | के ऽ ली पि | या ऽ बि नऽ | रऽ तिऽ याँ बि |
३ × २ ०

म म पर्म धप | म री सा सा | म –ग प सांनि | निध निध प पर्म– |
र ह तऽ नऽ | ज र त कै | से ऽऽ क टेऽ | र ऽ तिऽ याँ बैऽ |
३ × २ ०

अंतरा

मं
प | म म पर्म– धप– | सां – सां नि | ध नि सांनि– रेंसांसां | निध ध पम म |
शो | ऽ क यऽऽ हऽऽ | भा ऽ र कै | ऽ से सऽऽ हऽऽ | जाऽ ऽ यऽ नै |
३ × २ ०

–म प–ध पप | सां–नि नि–ध ध–प पमं | म – प–ध प प |
ऽ न झऽऽ रऽ | झऽऽ रऽऽ तऽऽ पिऽ | या ऽ नऽऽ हींऽ |
३ × २

मं
म री सा प |
आ ऽ ये बै |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

छैला तू अइं कइं भटकरियो
भवर मन लेत फिरत रस चाखो ॥
फेरोनि फेरो पाछे नैनवा
जोबन झर जाय, सरम लज राखो ॥

स्थाई

																				नि			
पप		धप	म	–	पप	सां	–	–	सां	रीं	सां	नि	ध	ध	–	प	म
छैऽ		लाऽ	तू	ऽ	अइं	कइं	ऽ	ऽ	म	ट	क	ऽ	रि	यो	ऽ	ऽ	म
		३				×				२				०			
म	ग	पध		पप	म	री	सा	सा	म	म	प	रीं	सां	नि	ध	प
ब	र	मऽ		नऽ	ले	ऽ	त	फि	र	त	र	स	चा	ऽ	खो	छै
३					×				२				०			

अंतरा

				ध																			
रीं		सां	–	प	प	सां	–	–	सां	सां	सां	–	रीं	सां	–	–	मं
फे		रो	ऽ	नि	फे	रो	ऽ	ऽ	पा	छे	नै	ऽ	न	बा	ऽ	ऽ	जो
		३				×				२				०			
									ध								
		रीं	सां	ध	प	निसां	रीं	सां	प	म	म	प	रीं	सां	नि	ध	प
		ब	न	झ	र	जाऽ	ऽ	यो	स	र	म	ल	ज	रा	ऽ	खो	छै
		३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार, ताल त्रिताल, लय द्रुत

मुख दिखादे मोहेरी
आज मै तरफत दिन रैनारी ॥
हर गयी हो सबरी
बात बने, ना बने, ना बनेरी ॥

स्थाई

–	सा	री	सा	म	–	–	–	ग,	प	–	प	धप	मम	रीसा	सारी
ऽ	मु	ख	दि	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	दे	ऽ	मो	हेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽरी
३				×				२				०			
–	सा	–	ध़	प़	–	सा	सा	म	म	प	प	धप	मम	रीसा	सारी
ऽ	आ	ऽ	ज	मैं	ऽ	त	र	फ	त	दि	न	रैऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽरी
३				×				२				०			

अंतरा

								नि							
–	प	धध	प	सां	–	–	–	ध	–	प	प	ध	प	म	–
ऽ	ह	ऽर	ग	यी	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	स	ब	री	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
–	सा	–सा	सा	म,	म,	म,	म	प,	प,	–	प	धप	मम	रीसा	सारी
ऽ	बा	ऽत	ब	ने,	ना,	ऽ,	ब	ने,	ना,	ऽ	ब	नेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽरी
३				×				२				०			
–	सा	री	सा												
ऽ	मु	ख	दि												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौडमल्हार, ताल त्रिताल, लय मध्य

न बताती तू पैछान
भूल न मेरी जान तू ॥
याद करत मै वो प्यार
भूल न जा पैछान तू ॥

स्थाई

ध												म	म		
प	म	प	ध	–	निसां	निनि	प	म	–	–	–	री	री	प	–प
न	व	ता	ती	ऽ	तूऽ	ऽऽ	पै	छा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन
०				३				×				२			
–	म	–म	प	नि	ध	नि	ध	धनि	सां	नि	सां	नि	ध	सांनिनिऽ	प
ऽ	भू	ऽल	न	मे	ऽ	री	ऽ	जाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	तूऽऽऽ	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

रीग	म	–म	री	प	प	नि	ध	नि	–	सांरीं	सांसां	ध	नि	प	–
याऽऽऽद			क	र	त	मैं	ऽ	वो	ऽ	प्याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रऽ	
०				३				×				२			
–	म	–म	प	नि	ध	नि	ध	नि	सां	धनि	पप	पमम–	–	रीं	–
ऽ	भू	ऽल	न	जा	ऽ	ऽ	ऽ	पै	छा	ऽऽ	ऽन	तूऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौडमल्हार, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

घन गरजे बरखा आई
गरज गरज मोहे डरावे
नाद दिलावे मोहे याद पियाकी ॥
पिया पिया सुन कोयल की
मन में शोक पिया कब आवे
नाद गरज मोहे याद सतावे ॥

स्थाई

म	री	प	प	नि॒	ध	सां	नि	सां	–	–	–	ध	नि॒	प	–
घ	न	ग	र	जे	ऽ	ब	र	खा	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ
०				३				×				२			
ग	म	–म	म	मप	मम	री	–री	नि़	सा	–	सा	री	–	सा	–
ग	र	ऽज	ग	रऽ	ऽऽ	ऽ	ऽज	मो	हे	ऽ	ड	रा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
–	रीम	रीम	री	प	प	म	प	धनि	सांरीं	निसां	धनि॒	म	प	म	ग
ऽ	नाऽ	ऽद	दि	ला	वे	मो	हे	याऽ	ऽऽ	ऽद	पिऽ	या	ऽ	की	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

म	नि॒	ध	नि	सां	सांनि	सां	सां	–	नि	सां	सां	रीं	–	सां	–
पि	या	ऽ	पि	या	ऽऽ	सु	न	ऽ	को	य	ल	की	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
नि॒	नि॒	नि॒	ध	नि	सां	सां	सां	निसां	रीं	नि	सां	ध	नि॒	प	–
म	न	में	ऽ	शो	ऽ	क	पि	याऽ	ऽ	क	ब	आ	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
–	रीम	रीम	री	प	प	म	प	धनि	सांरीं	निसां	धनि॒	म	प	म	ग
ऽ	नाऽ	ऽद	ग	र	ज	मो	हे	याऽ	ऽऽ	ऽद	सऽ	ता	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियामल्हार, ताल एकताल, लय विलंबित

कारे मेघा बरसत नाहीं रे
हरी हरी दूब सूख रह्यो, हाहाकार मचो चहुँ ओर ॥
सूख गयो रे ताल तलैया, तरफत जीव सब व्याकुल
तरसत मोर, शोर करे पपीहा चहुँ ओर ॥

स्थाई

म म
सारी–, नि़सा – रीप– | ग – | मपमम, री –, सारी | रीसासानि़,ध़ नि़सा |
काऽऽ, रे ऽ ऽ मेऽऽ | घा ऽ | बऽरऽ, ऽ ऽ, सत | नाऽ ऽऽ, ऽ हीं ऽ |
४ × ० २

नि़
सा– सा– | म़प़ नि़ ध़, नि़ |
रे ऽ ऽ ऽ | हरी ह ऽ, री |
० ३

नि़ सा म
सा सा | री री – – री | प – प | निध – –नि सांसां सां |
दू व | सू ख ऽ ऽ र | ह्यो ऽ हा | हा ऽ ऽ ऽ का ऽ र म |
४ × ० २

सांरींसांसां,ध निम, प | धनिसां, – – – ग–मरी |
चोऽऽऽ, ऽ ऽऽ, च | हुँऽऽ, ऽऽऽ ओऽऽर |
० ३

अंतरा

म–री– – पपप | पनि,–,ध,– नि–ध– | नि सां सां––सां | नि रीं सां |
सू ऽ ऽऽ ऽ खऽग | योऽ,ऽ,ऽ,ऽ रेऽ ऽऽ | ता ऽ ल ऽऽ त | लै या |
४ × ० २

सांरींसांसां,निध –निसां– | सां रीं सां–सां रीं |
त ऽ र ऽ, ऽऽ ऽ फत ऽ | जी व ऽ स ब |
० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म म
ध – निप –पप– | मपमम, री –पप– | पनिध– –नि–नि | –सां–सां रीं–रीं पं |
व्या ऽ ऽऽ ऽकुलऽ | त ऽ रऽ, ऽ ऽसतऽ | मोऽऽऽ ऽरऽ शो | ऽ र ऽक रेऽप पी |
४ × ० २

म
गुं– मंनि सांध,निमप | धनिसां,––– गु –म री |
हाऽ ऽऽ ऽऽ, ऽऽच | हुँऽ ऽ ऽ,ऽ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ र |
० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियामल्हार, ताल त्रिताल, लय द्रुत

जाज्योरे बदरवा
जाय तूतो सैयाँजी खेता बरसोरे ॥
जाय सुनावो, मैं तोहे पठावा
गरजो रे, पिया मुख हरसोरे ॥

स्थाई

म								म				म			
ग॒	म	रीं	सारी	सा,	सा	रीं	प	प	–	ग॒,	–	–,	–	ग॒	–
जा	ऽ	ज्यो	रेऽ	ऽ,	ब	द	र	वा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ,	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

			नि़					म							
ग॒	म	रीं	सारी	सा	सा	री	प	प	–	ग॒,	–	–,	–	ग॒	म
जा	ऽ	ज्यो	रेऽ	ऽऽ	ब	द	र	वा	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ,	ऽ	जा	ऽ
०				३				×				२			

								म		म		म			
री	सा	रीं	म़	प़	नि़ध़	नि़	सा	री	प	प	–	ग॒,	–	ग॒	–
य	तू	तो	सै	याँ	जीऽ	खे	ता	ब	र	सो	ऽ	ऽ,	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

मप	मम	–म	रीं	प	प	नि॒	ध	नि	सां	–	नि	सां	–	सां	–
जाऽ	ऽऽ	ऽय	सु	ना	वो	मैं	ऽ	तो	हे	ऽ	प	ठा	ऽ	वा	ऽ
०				३				×				२			

												म		म	
सां	रीं	नि	सां	ध	नि॒	प	म	प	म	मप	निप	ग॒	–	ग॒	–
ग	र	जो	ऽ	रे	ऽ	पि	या	मु	ख	हऽ	रऽ	सो	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस, ताल एकताल, लय ठाय

काहे री धन जागी हो
ऐसन रात अंधियारी, जियरा नाहिं डरे हो तोरा ॥
आज मोरा रे पिया आँखन में आयो रे
निंदिया हराय, शोक उभराय गयो रे मोरा ॥

स्थाई

सा ग मग मध | धम –म | म– ग–मध | मग सा सा |
काहे डरी धन | जाऽ ऽगी | होऽ ऐऽऽऽ | सऽ ऽन |
४ × ० २

सा––नि ग सा | सा– –सा |
राऽऽऽ ऽऽ | तऽ ऽअं |
० ३

नि ध | ध–ध नि | नि– ध– | नि सा ध नि | सा– | गम | म––ग |
धिऽ याऽऽऽ | रीऽ ऽऽ | ज़िय राऽ | नाऽ हिंऽऽड |
४ × ० २

म ध म –––म ध | ग मग सासा |
रेऽ ऽऽहोऽ | तोऽ ऽरा |
० ३

अंतरा

सा––ग मधनिसां | सांऽ –– | सांनिधनि, ––सां– गंमं गं सां |
आऽऽऽज मोरारेपि | याऽ ऽऽ | आँखनमें, ऽऽआऽ योऽऽरे |
४ × ०

–, निनि, सां, सां निध, –, म, – | गमधनि सां, –, गंमं, गं– | सां,–, ध, मध म–गसा |
ऽ, निंदि, या, ह राऽ, ऽ, य, ऽ | शोकउभ रा, ऽ, ऽय, गऽ | योऽ, रे, मोऽ राऽऽऽ |
२ ० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस, ताल त्रिताल, लय मध्य

माई री मैं कैसे पाऊं दरस तोरे
जानत तूही मेरो ध्यान ॥
मान री माँ, माँ का नहीं देत दरस
शोक मन करत तेरो ध्यान ॥

स्थाई

म ग̲ –ध̲ म | ध̲ म – म | – म ग̲ – | म ग̲ सा सा |
मा ई ऽरी मैं | कै ऽ ऽ से | ऽ पा ऊं ऽ | द र ऽ स |
३ × २ ०

ग̲
नि̲ सा ध̲ नि̲ | सा सा म ग̲ | म निध̲ नि̲ निसांनिनि | ध̲ म ग̲सा |
तो ऽ रे ऽ | जा न त ऽ | तू ऽऽ ही मेऽरोऽ | ध्या ऽ ऽ न |
३ × २ ०

अंतरा

नि̲
म ध̲ –म ध̲ | सां – – – | नि̲ – गं̲ नि̲ | सां ध̲ नि̲ नि̲ |
मा ऽ ऽन री | माँ ऽ ऽ ऽ | माँ ऽ का न | हीं दे ऽ त |
३ × २ ०

गं̲
सां नि̲ नि̲ ग̲ | म धनि̲ सां सां | नि̲ ध̲ म निसांनिनि̲ | ध̲ म ग̲ सा |
द र स शो | क मऽ ऽ न | क रत तेऽरोऽ | ध्या ऽ ऽ न |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस, ताल एकताल, लय द्रुत

आनंद मना, आज आनंद मना
मोरा जो पिया घर आया ॥
चहुँ दिस सब चमकत
रतियां खिल गयो बगिया ॥

स्थाई

ध		ध				म					
म	—	म	ग	म	ग	ध	—	म	—	—	—
आ	ऽ	ऽ	नं	द	म	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	
		ध				म					
म	—	म	ग	म	ग	ध	—	म	—	ग	म
आ	ऽ	ऽ	नं	द	म	ना	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज
०		३		४		×		०		२	
						म					
म	सा	ग	ग	म	ग	ध	—	म	—	म	—
आ	ऽ	ऽ	नं	द	म	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	
						म					
ग	म	ध	म	ध	—	ग	म	सां	—	ध	नि
मो	रा	जो	पि	या	ऽ	घ	र	आ	ऽ	या	ऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

ग	म	ध	म	नि	ध	सां	नि	सां	सां	नि	गं
च	हुं	दि	स	स	ब	च	म	क	त	र	ति
०		३		४		×		०		२	
नि								म			
सां	—	ध	म	ध	नि	ध	ग	सां	—	ध	नि
यां	ऽ	खि	ल	ग	यो	ब	गि	या	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस, ताल एकताल, लय मध्य और द्रुत

छब तेरी छब तेरी, आँखन में आँखन में
तरसायो मन निसदिन निसदिन ॥
इतै उतै तू री तू री, भर जो गयी दसों दिस
तरसायो मन निसदिन निसदिन ॥

स्थाई

म											
ग॒	—	म	ग॒	सा	—	नि़	—	सा	सा	सा	—
छ	ऽ	ब	ते	री	ऽ	छ	ऽ	ब	ते	री	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि़	सागं	सा	ध़	नि़	ध़	नि़	सा	—	सा	—	सा
आँ	खऽ	ऽ	न	ऽ	में	आँ	ख	ऽ	न	ऽ	में
×		०		२		०		३		४	

नि़	सा	—	गम	धनि	सांगं	सां,	—	ध	नि	ध	म
त	र	ऽ	साऽ	ऽऽ	ऽऽ	यो,	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
×		०		२		०		३		४	

ग॒	म	—	ग॒,	—	सा	नि़	सा	—	सा,	—	सा
नि	स	ऽ	दि,	ऽ	न	नि	स	ऽ	दि,	ऽ	न
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

				नि							
ग॒	ग॒	—	म	ध	—	नि	सां	—	नि	सां	—
इ	तै	ऽ	उ	तै	ऽ	तू	री	ऽ	तू	री	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि	नि	सां	गं	सां	—	ध	ध	नि	ध	म	—
भ	र	जो	ग	यी	ऽ	द	सों	ऽ	दि	स	ऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि़	सा	—	गम	धनि	सांगं	सां,	—	ध	नि	ध	म	
व	र	ऽ	साऽ	ऽऽ	ऽऽ	यो,	ऽ	ऽ	ऽ	म	न	
×		०		२		०		३		४		
ग	म	—	ग,	—	सा	नि़	सा	—	सा,	—	सा	
नि	स	ऽ	दि,	ऽ	न	नि	स	ऽ	दि,	ऽ	न	
×		०		२		०		३		४		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालकौंस, ताल त्रिताल, लय द्रुत

फूल बेदाग ये बन
बन घन भरे खिरै सुंदर ॥
तरू पर लागे सोहे
बेलरिया खिरै फरै सुंदर ॥

स्थाई

				सा											
म	–	ग॒	–	नि़	सा	–	–	–	सा	–	नि़	–	ग॒	–	सा	म
फू	ऽ	ल	ऽ	वे	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ये	ऽ	ब	ऽ	न	फू
	३				×				२				०			
				सा												सा
	–	ग॒	–	नि़	सा	–	–	–	सा	–	नि़	–	ग॒	–	सा	नि़
	ऽ	ल	ऽ	वे	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ये	ऽ	ब	ऽ	न	ब
	३				×				२				०			
सा																
नि़	साम	गम	ग॒		मनि॒	ध॒	–	नि॒सां	ध॒	–	नि॒	सां	सांनि॒	ध॒ध॒	मग॒	म
न	घऽ	ऽऽ	न		मऽ	रे	ऽ	खिऽ	रै	ऽ	सुं	द	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	फू
३					×				२				०			

अंतरा

म	म															सा
ग॒	ग॒	मनि॒	ध॒नि॒	ध॒	नि॒	–	सां	–	–	–	सांनि॒	सांगं॒	सां,	–	–	नि़
त	रू	पऽ	ऽऽ	र	ला	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	सोऽ	ऽऽ	हे,	ऽ	ऽ	बे
	३				×				२				०			
	–	साम	गम	ग॒	मनि॒	ध॒	–	नि॒सां	ध॒	–	नि॒	सां	सांनि॒	ध॒ध॒	मग॒	म
	ऽ	लऽ	रिऽ	या	खिऽ	रै	ऽ	फऽ	रै	ऽ	सुं	द	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	फू
	३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कौशी, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

सीसेरी सेरा बंधले
बनाजी थारो सवालाखा पेचारो ॥
म्हारो जो है थारो, सगळा रे लाडा
अस का करो रे, चोका पे पधारो ॥

स्थाई

ग	–	म	नि	ध	प	म	–	–	–	गम	री	ग	म	ग	–	–	ध़
सी	ऽ	से	ऽ	री	से	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	बं	ध	ले	ऽ	ऽ	ब
३						×				२				०			

नि़	सा	ग	म	प	म	–	धनि	सांनि	निध	–	ग	मप	पम	ग	ग
ना	जी	था	रो	स	वा	ऽ	लाऽ	ऽऽ	खाऽ	ऽ	पे	चाऽ	रोऽ	ऽ	सी
३				×				२				०			

अंतरा

												गं			रीं
ग	म	धनि	सांनि	निध	नि	सां	–	ध	नि	सां	गं	मं	गं	–	सां	सां
म्हा	रो	जोऽ	ऽऽ	हैऽ	था	रो	ऽ	स	ग	ळा	रे	ऽ	ला	ऽ	डा	अ
३					×				२				०			

						म									
सां	नि	–	ध	प	म	–	ग	म	धनि	सांनि	निध	मप,	प	मग	ग
स	का	ऽ	क	रो	रे	ऽ	चो	का	पेऽ	ऽऽ	पऽ	धाऽ,	रो	ऽऽ	सी
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग चंद्रकौंस, ताल त्रिताल, लय मध्य

वेणुनाद दसोदिस गयी तब
सुनत देव नार भूल गय सुध ॥
वेणुसे सत सुर निकले जब
नाद सुने जीव मृग विहंग सब
मौन धरे मन में गाये जब ॥

स्थाई

												सां			
–	म	ध॒	नि	सां	–	सां	ध॒	नि	–	सां	रीं	रीं	सां	–	नि
ऽ	वे	ऽ	णु	ना	ऽ	द	द	सो	ऽ	दि	स	ग	ई	ऽ	त
३				×				२				०			
ध॒	म	म	म	ध॒	–	म	नि	–	ध॒	सां	–	नि	रीं	सां	नि
ब	सु	न	त	दे	ऽ	व	ना	ऽ	र	भू	ऽ	ल	ग	य	सु
३				×				२				०			
ध॒	म	ध॒	नि												
ध	वे	ऽ	णु												
३															

अंतरा

–	ग॒	म	ध॒	नि	–	ग॒	म	सां	–	सां	ध॒	नि	सां	–	रीं
ऽ	वे	ऽ	णु	से	ऽ	स	त	सु	ऽ	र	नि	क	ले	ऽ	ज
३				×				२				०			
सां	सां	नि	ध॒	म	म	–	ध॒	–	म	नि	ध॒	म	ध॒	नि	सां
ब	ना	ऽ	द	सु	ने	ऽ	जी	ऽ	व	मृ	ग	वि	हं	ग	स
३				×				२				०			
							सां								
सां	सां	–	नि	ध॒	नि	–	गं	गं	सां	–	रीं	–	सां	–	नि
ब	मौ	ऽ	न	ध	रे	ऽ	म	न	में	ऽ	गा	ऽ	ये	ऽ	ज
३				×				२				०			
ध॒	म	ध॒	नि												
ब	वे	ऽ	णु												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बसंत, ताल त्रिताल, लय मध्य

सपने में मिलती तोहे पियारे
जल नैन के मारे कहाँ मैं सोती ॥
दुख की सेज पे परी तोरी प्यारी
मन में शोक पिया घर आवो
दीप की ज्योत मलिन भये अब ॥

स्थाई

री ग –म नि | ध प –मं ग | मं – ग नि | धप मंमं गरी सासा |
स प ऽने में | मि ल ऽ ती ऽ | तो ऽ हे पि | याऽ ऽऽ ऽऽ रेऽ |
० ३ × २

री ग म नी | ध प –मं ग | मं – ग मं | धनिसांरीं निसां निध प |
स प ने में | मि ल ऽती ऽ | तो ऽ हे पि | या ऽऽऽ ऽऽ रेऽ ऽ |
० ३ × २

सा ग –म नि | ध प –मं ग | मं – ग मं | धनिसांरीं निसां – मंध |
स प ऽने में | मि ल ऽती ऽ | तो ऽ हे पि | या ऽऽऽ ऽऽ ऽ जल |
० ३ × २

नि ग ग
रीं सां नि धप | प – मं ग | ग गनि ध प | मं ग री सा |
नै ऽ न केऽ | मा ऽ रे ऽ | क हाँऽ मैं ऽ | सो ऽ ऽ ती |
० ३ × २

अंतरा

मं ग मं ध | सां – रीं सां | सां सां –नि ध | रीं नि ध प |
दु ख की ऽ | से ऽ ज पे | प री ऽतो री | प्या ऽ ऽ री |
० ३ × २

नि
– निनि –रीं गं | गं रीं सां ध | सां – नि ध | रीं नि ध प |
ऽ मन ऽमें ऽ | शो ऽ क पि | या ऽ घ र | आ ऽ वो ऽ |
० ३ × २

– री –ग ग | मं – ध नि | निरीं नि ध प | – मंग – |
ऽ दी ऽप की | ज्यो ऽ त म | लिऽ न भ ये | ऽ अ ब ऽ |
० ३ × २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बसंत, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

रंग केसरिया सिर पागा बंधले
बनबेलरिया रंग लै खिल आयोरे ॥
पेरी हूं तो रे सैयाँ
रंग कुसुंभि चीरो, घघरो चुनरीरे ॥

स्थाई

मं,मं	ध॒नि	सांनि	निध॒	ध॒प	पध॒	प,प	–मं	ग,	मं –	ग –	मंमं	ध॒नि	सां,	मंमंध॒	
रं,ग	केऽ	ऽऽ	सऽ	रिऽ	याऽ	ऽ,ऽ	ऽसि	र,	पा ऽ	गा ऽ	बंध	लेऽ	ऽ,	बनऽ	
	०				३				×		२				

		नि													
रींरींसां	सां	–नि	ध॒	पध॒	प,प	–मं	ग,	सा ग	म मंग	निध॒सांनि	रींसां	मंमं			
वेऽऽ	ऽऽ	ऽल	रि	याऽ	ऽ,ऽ	ऽरं	ग,	लै खि	ल आऽ	योऽ रेऽ	ऽऽ	रंग			
०				३				×		२					

अंतरा

												नि			
मंग	रीसा	ग	म –	धमं	मंध॒	निध॒	निसां	मंमंध॒	रींरींसां	सां,	मंमं				
पेरी	हूंतो	रे	सै ऽ	याँरं	गकु	सुंभि	चीरो	घघऽ	रोऽऽ	ऽऽ,	चुन				
	०			३				×							

ध॒नि	ध॒सां	निरींसां	मंमं	
रीरे	ऽऽ	ऽऽऽ	रंग	
२				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग परज, ताल त्रिताल, लय द्रुत

ना करोजी मोसंग रार
सह नहीं जाय, दुख जिय कह तोहे ॥
ना संग बोलत ना कछु सूझत
शोक पिया तुम बिन मन ना सहे ॥

स्थाई

												ध			
–	रीं	–निसां	–नि	ध	नि	–	–	–	–	मं	–ध	नि	सां	–	–	सां
ऽ	नाऽऽऽ		ऽक	रो	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽसं	ग	रा	ऽ	ऽ	र
३					×					२			०			

–	निनि	रीं	गं	रींगं	रीं	सां	सां	–	निनि	सां	रीं	नि	सां	ध	नि
ऽ	सह	न	हीं	जाऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	दुख	जि	य	क	ह	तो	हे
३				×				२				०			

–	सां	–नि	ध	
ऽ	ना	ऽक	रो	
३				

अंतरा

					ध										
–	मं	–ध	नि	नि	–	नि	नि	–	सां	–नि	ध	प	–	गम	ग
ऽ	ना	ऽसं	ग	बो	ऽ	ल	त	ऽ	ना	ऽक	छु	सू	ऽ	झऽ	त
३				×				२				०			

													नि		
–	प	–ध	सां	गं	–	रीं	सां	–	निनि	सां	रीं	सांसां	–	ध	नि
ऽ	शो	ऽक	पि	या	ऽ	तु	म	ऽ	बिन	मं	न	नाऽ	ऽ	स	हे
३				×				२				०			

–	सांरींनिसां		–नि	ध	
ऽ	नाऽऽऽ		ऽक	रो	
३					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

रंग ना डारो श्यामजी गोरी पे रे
पेरी लई ये नयी सारी
सखी सहेल्या हँस करे देंगी गारी ॥
कैसे हो खिलारी, मानत नाहीं
बरजोरी ना करो जावो मैं तो हारी ॥

स्थाई

सां ध
सां | सां रीं सां नि | मं –मं ध – | – – निनि धमं | धनि सांरीं रींसांसां– सां |
रं | ग ना डा रो | श्या ऽम जी ऽ | ऽ ऽ गो ऽ री ऽ | पे ऽ ऽऽ रेऽऽऽ रं |
३ × २ ०

सां ध
सां रीं सां नि | मं –मं ध – | – – निनि धमं | धनि सां सां सां |
ग ना डा रो | श्या ऽम जी ऽ | ऽ ऽ गो ऽ री ऽ | पे ऽ ऽ रे पे |
३ × २ ०

नि सा नि
सां ध – मं | ग – – – | ग – मंध ध | सां – सां ध |
ऽ री ऽ ल | ई ऽ ऽ ऽ | ये ऽ नऽ ई | सा ऽ री स |
३ × २ ०

नि रीं गं रीं | मं गं – रीं | सां – सांसां धमं | धनि सांरीं रींसांसां– सां |
खी स हे ल्या | हँ स ऽ क | रे ऽ दें ऽ गी ऽ | गाऽ ऽऽ री ऽऽऽ रं |
३ × २ ०

अंतरा

मं नि नि
ग | ग मंध– ध ध | सां – सां – | सां –नि सां रीं | सां – निध ध |
कै | से होऽऽ ऽ खि | ला ऽ री ऽ | मा ऽऽ न त | ना ऽ हींऽ ब |
३ × २ ०

नि रीं गं रीं | मं गं – रीं | सां – सांनि धमं | धनि सांरीं रींसांसां– सां |
र जो री ना | क रो ऽ जा | वो ऽ मैं ऽ तोऽ | हाऽ ऽऽ रीऽऽऽ रं |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्रीकल्याण, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

देखो रे उत फुलन लगी
रंग रंग छाये रे, मेरो मन भाये ॥
अरे ये दूजो रे, रंग मिल आये
संजा केरी लाली रे, मेरो मन भाये ॥

स्थाई

												ध			
री	ग	रीसा	–,	सा	प	–	–	प	प	धनिध	–	प	री	–	–,	ग
दे	खो	रेऽ	ऽ,	उ	त	ऽ	ऽ	फु	ल	नऽऽ	ऽ	ल	गी	ऽ	ऽ,	रं
	३				×				२				०			
	री	नि़	री	नि़	ध़	–	प़	–	गम॑	पध	पम॑	गरी	ग	री	सा	री
	ग	रं	ऽ	ग	छा	ऽ	ये	ऽ	रेऽ	ऽऽ	मेरो	मन	भा	ऽ	ये	दे
	३				×				२				०			
	ग	रीसासा–		–	सा											
	खो	रेऽऽऽ		ऽ	उ											
	३															

अंतरा

		ध														
रीं	नि	नि	–	ध	पप	–	प	–	म॑	म॑	ध	म॑	धनि	सांरीं	रीं,	री
अ	रे	ये	ऽ	दू	जोऽ	ऽ	रे	ऽ	रं	ग	मि	ल	आऽ	ऽऽ	ये,	सं
	३				×				२				०			
	री	ग	–	री	गम॑	पध	ध	–	म॑ध	निध	पम॑	गरी	ग	री	सा	री
	जा	के	ऽ	री	लाऽऽऽ		ली	ऽ	रेऽ	ऽऽ	मेरो	मन	भा	ऽ	ये	दे
	३				×				२				०			
	ग	रीसासा–		–	सा											
	खो	रेऽऽऽ		ऽ	उ											
	३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गौरीबसंत, ताल त्रिताल, लय मध्य

आज पेरीले गोरी रंग बसंतीचीरा
आय रितुराज, कोयलरीया कूके ॥
रंगादे रंगादे अरे रंगरेजरा
आय रितुराज, कोयलरीया कूके ॥

स्थाई

री री ध
– ग मंग री | ग सा री सा | –रीग –म नि | नि धप– ध प |
ऽ आ जपे री | ले ऽ गो री | ऽ रंग ऽब सं | ती ऽऽऽ ची रा |
३ × २ ०

मं ध प
– सांसां – नि धप | पधप ग मं ग | – रीग – म नि | नि धप– ध प |
ऽ आय ऽरि तुऽ | राऽऽ ऽ ज ऽ | ऽ कोय ऽल री | या ऽऽऽ कू के |
३ × २ ०

मं
ग ग मंग री |
ऽ आ जपे री |
३

अंतरा

ध मं मं
– रींगं –रींसां सांनी | नि – धपप – | ग– गमं –ग री | गमंधनि सांनि रीं सां |
ऽ रंगा ऽदेऽ ऽ रं | गा ऽ देऽऽ ऽ | ऽऽ अरे ऽरं ग | रेऽऽऽ ऽऽ ज रा |
३ × २ ०

मं ध प
– सांसां – नि धप | पधपप ग मं ग | – रीग – म नि | नि धप ध प |
ऽ आय ऽरि तुऽ | राऽऽऽ ऽ ज ऽ | ऽ कोय ऽल री | या ऽऽ कू के |
३ × २ ०

मं
ग ग मंग री |
ऽ आ जपे री |
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग धनबसंती, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

दीपकी ज्योत जरे रे सुभघरी
दीपपाँति बनि नीको सुभघरी ॥
चंदन घोलकर आंगन लीपे है
मोतीयन चौक पुरावो सुभघरी ॥

स्थाई

मं धनि सांनि ध	प मंग –मं री	ग – ग ग	ध मं धनि सां
ऽ दीऽ ऽप की	ज्यो ऽऽ ऽत ज	रे ऽ रे सु	भ घ रीऽ ऽ
०	३	×	२
मं धनि सांनि ध	प मंग –मं री	ग – ग ग	ध मं धनि सां
ऽ दीऽ ऽप की	ज्यो ऽऽ ऽत ज	रे ऽ रे सु	भ घ रीऽ ऽ
०	३	×	२
धपपमं – मं धनि	सां सां –नि ध	धनि रींनि धपमं– ग	ध मं धनि सां
दीऽऽऽ ऽ प पांऽ	ऽ ति ऽब नि	नीऽ ऽऽ कोऽऽऽ सु	भ घ रीऽ ऽ
०	३	×	२
मं धनि सांनि ध			
ऽ दीऽ ऽप की			
०			

अंतरा

– मंमं मं धनि	सां सां –सां सां	सां – सां सां	नि रींगं गंरीं सांसां
ऽ चंद न घोऽ	ऽ ल ऽक र	आं ऽ ग न	ली पेऽ हैऽ ऽऽ
०	३	×	२
– निरीं गं रीं	नि रीं नि ध	धपप– मंग– – ग	ध मं धनि सां
ऽ मोति य न	चौ ऽ क पु	राऽऽऽ वोऽऽ ऽ सु	भ घ रीऽ ऽ
०	३	×	२
मं धनि सांनि ध			
ऽ दीऽ ऽप की			
०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कामोदवंती, ताल त्रिताल, लय मध्य

ये तो मानलेरी माँ जरा
ताल सत सुर मिल गान बनत ॥
लय सम बांध ताल कर गुन्निजन
पंच मिल सुर राग तब बनत ॥

स्थाई

				म						म॑	
रीग	मप	मग	री	ग॒	री	सा	री	प	– –	प	ध –	प –
येऽ	ऽऽ	तोऽ	मा	ऽ	न	ले	री	माँ	ऽ ऽ	ज	रा ऽ	ऽ ऽ
०				३				×			२	

		ग							ग		
ग	मप	म	री	नि़	सा	ध़	नि़	प़	री री	प	म ग	री सा
ता	ऽऽ	ऽ	ल	स	त	सु	र	मि	ल गा	ऽ	न ब	न त
०				३				×			२	

अंतरा

									ध		
सारी	सासा	मरी	प	ध –	प	सां	–	प	ग	म	री ग॒	री सा
लऽ	यऽ	सऽ	म	बां	ऽ	ध	ता	ऽ	ल	क	र गु	नि ज न
०				३				×			२	

			ग						ध		
प़	–	री	री	ग	म	–	प	सां	–	प	ग	म री	ग॒ रीसा
पं	ऽ	च	मि	ल	सु	ऽ	र	रा	ऽ	ग	त	ब ब	न तऽ
०				३				×			२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दुर्गाकेदार, ताल त्रिताल, लय मध्य

लादले लदाले लदाले
काहे करो ऐसन बतिया ॥
जो मांगो सो देहो तोहें
उठाले गठरिया ये पिटिया ॥

स्थाई

			– – – म
			ऽ ऽ ऽ ला
			०
–म (ग)रीं – सा	म – (म)री –	– रीम मप म	पध ध – म
ऽद ले ऽ ल	दा ऽ ऽ ऽ	ऽ लेऽ ऽऽ ल	दाऽ ले ऽ का
३	×	२	०
– (री)सा सारी ध़	सा – म –ग	प (प)मं ध प	सांसां धप मम म
ऽ हे ऽऽ क	रो ऽ ऐ ऽऽ	स न ब ति	याऽ ऽऽ ऽऽ ला
३	×	२	०

अंतरा

			– – – म
			ऽ ऽ ऽ जो
			०
– पध पप –	सां – – (सां)ध	– सां – रीं	सांध प म म
ऽ मांऽ गोऽ ऽ	सो ऽ ऽ दे	ऽ हो ऽ तो	हेऽ ऽ ऽ उ
३	×	२	०
मं रीं – (सां)ध	सांरीं – सां ध	म,– – प ध	सांसां धप मम म
ठा ले ऽ ग	ठऽ ऽ रि या	ये,ऽ ऽ पि टि	याऽ ऽऽ ऽऽ ला
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदारनंदा, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

ला दे बीरा म्हाने चुनरी
हूं जाय पेरांगा सासरियामें
घुंघट खोल दिखावूं, सान म्हारी पियासो ॥
ऐसी वैसी नी लावो, बीरा म्हाने चुनरी
लावो तो लावो बांधे म्हारा पचरंग पाग ॥

स्थाई

ग ध ध
मंप | –मं री – सा | म – – गप | गप प प प | नि – प धमं |
लाऽ | ऽऽ दे ऽ बी | रा ऽ ऽ म्हाऽ | नेऽ ऽ चु न | री ऽ ऽ लाऽ |
३ × २ ०

ग ध ध
पमं री – सा | म – – गम | गप प प प | नि – प प |
ऽऽ दे ऽ बी | रा ऽ ऽ म्हाऽ | नेऽ ऽ चु न | री ऽ ऽ हूं |
३ × २ ०

ग
धनिध पमं मं पमं | री – सा नि़ | ध़ प़ प़ – | प़ नि़ सा री |
जाऽऽ ऽय पे रांऽ | गा ऽ सा स | रि या में ऽ | घुं घ ट खो |
३ × २ ०

–री सा नि़ सा | म – –म मग | पध पप म ग | मप मम – प |
ऽल दि खा वूं | साऽ ऽन म्हाऽ | रीऽ ऽऽ पि या | सोऽ ऽऽ ऽला |
३ × २ ०

अंतरा

मं
प | म – प प | सां – सां सां | ध नि –सां रीं | नि सां ध प |
ऐ | सी ऽ वै सी | नी ऽ ला वो | बी रा ऽम्हा ने | चु न री ला |
३ × २ ०

मं मं
नि सां रीं नि | प ध –मं प | –ध नि प ध | प म म प |
बो तें ला वो | बां धे ऽम्हा रा | ऽप च रं ग | पा ऽ ग ला |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कौशीकानडा, ताल एकताल, लय द्रुत

मुख आ दरदारे, दरदा सुरदारे
लय मिल कर भरदारे ॥
करो मन सुर तानारे
दूना तीना चोवा भरदारे ॥

स्थाई

सां	सां	ध	नि	ध	म	प	—	ग	—	मध	निसां
मु	ख	आ	ऽ	द	र	दा	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	
सां	सां	ध	नि	ध	म	प	—	ग	—	म	—
मु	ख	आ	ऽ	द	र	दा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
०		३		४		×		०		२	
ग	ग	मध	ध,	ग	ग	मप	प,	प	म	—	—
द	र	दाऽ	ऽ,	सु	र	दाऽ	ऽ,	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	
मम	ग	धध	म	निनि	ध	निसां	सांनि	धप	मग	मध	निसां
लऽ	थ	मिऽ	ल	कऽ	र	भर	दाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

म	ग	ध	म	नि	ध	नि	—	सां	—	सां	—
क	रो	म	न	सु	र	ता	ऽ	ना	ऽ	रे	ऽ
०		३		४		×		०		२	
गग	सा	मम	ग	धध	म	सांसां	सांनि	धप	मग	मध	निसां
दूऽ	ना	तीऽ	ना	चोऽ	वा	भर	दाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग कोमल बागेश्री, ताल त्रिताल, लय द्रुत

आज दिया बरे घर मोरे
पियारे आव मिलोरे, मंगल दिन ॥
जरत मन बरत दियना चहुँ
पियारे आव घर, मंगल दिन ॥

स्थाई

														म	
नि	सांरीं	सां	ध	नि	धप	पम	म	पम	–,	–	ग	ग	ग	ध	ध
आ	ऽऽ	ऽ	ज	ऽ	दिऽ	याऽ	ब	रेऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	घ	र	मो	रे
०				३				×				२			

			म							नि					
धनि	धध	–	ग	म	री	–ग	री	सारीसा	ध	–	नि	सागं	ग	मध	ध
पिऽ	याऽ	ऽ	रे	ऽ	आ	ऽव	मि	लोऽऽ	रे	ऽ	मं	गऽ	ल	दिऽ	न
०				३				×				२			

धनि	सांरीं	सां	ध
आऽ	ऽऽ	ऽ	ज
०			

अंतरा

		रीं	नि												
नि	सां	सां	ध	ध	नि	सां	सां	नि	नि	निरीं	सां	रीं	–	सां	सां
ज	र	त	म	न	ब	र	त	दि	य	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	च	हुँ
०				३				×				२			

मं	रीं	गं	रीं	सां	ध	–नि	धप	पम	–,	–	ग	मध	ध	निसां	सां
पि	या	ऽ	रे	ऽ	आ	ऽव	घऽ	रऽ	ऽ,	ऽ	मं	गऽ	ल	दिऽ	न
०				३				×				२			

धनि	सांरींसां–	–	ध			
आऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	ज			
०						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सोहनीभटियार, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

मारूजी भूलो ना म्हाने
अब घर तुमबिन रातां डर लागे म्हाने
कछु नहीं सूझे, दुख जिय लागे म्हाने ॥
रो रो जागत सारी रतियाँ
यह बिछुड़न अब सह नहीं जाये म्हाने ॥

स्थाई

												–	–	मं	ध
												ऽ	ऽ	मा	रू
												२			
			रीं				म							म	
मंध		निसां	सां	ध	नि	ध	प	म	म	–	–	–	प	ग	–	–
जीऽ		ऽऽ	ऽ	भू	लो	ना	ऽ	म्हा	ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०					३				×				२			
														ध		
–	मप	–ग	री		सा	सा	–ग	ग	ग	म	–ध	ध	नि	सां	नि	ध
ऽ	अब	ऽघ	र		तु	म	ऽवि	न	रा	तां	ऽड	र	ला	गे	म्हा	ने
०					३				×				२			
						रीं										
–ध	नि	सां	रीं		नि	–	सां	–	–	निसां	–नि	ध	मं	ध	निसां	सांनिध
ऽक	छु	न	हीं		सू	ऽ	झे	ऽ	ऽ	दुख	ऽजि	य	ला	गे	म्हाऽ	नेऽऽ
०					३				×				२			
मंध	रींनि	सां	ध													
मारू	जीऽ	ऽ	भू													
०																

अंतरा

–	मध	–मप		म	–	म	म	–	मप	मप	ग	म	ग	ध	–
ऽ	रोऽ	ऽरोऽ		जा	ऽ	ग	त	ऽ	साऽ	ऽरी	ऽ	र	ति	याँ	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

–	गम	–ध	नि	सां	नि	सां	सां	–	निसां	–नि	ध	मं	ध	निसां	सांनिध
ऽ	यह	ऽवि	छु	ड़	न	भ	व	ऽ	सह	ऽन	हीं	जा	ये	म्हाऽ	नेऽऽ
०				३				×				२			

मंध	रींनि	सां	ध	
मारू	जीऽ	ऽ	भू	
०				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटमंजरी, ताल त्रिताल, लय मध्य

सूझत नाहिं गान बिन मम कछु
जानत तूहि सब जन नाहिं मौ ॥
देखत बाट शोक मन नयनन
धीरज धार तू दौ धीर मौ ॥

स्थाई

	म			म			म			प					
–	ग	–म	नि	प	–	म	प	–	ग	म	म	म	ग	री	सा
ऽ	सू	ऽझ	त	ना	ऽ	हिं	गा	ऽ	न	बि	न	म	म	क	छु
३				×				२				०			

	म			म			म			प					
नि	ग	–म	नि	प	–	म	प	–	ग	म	म	म	ग	री	सा
ऽ	सू	ऽझ	त	ना	ऽ	हिं	गा	ऽ	न	बि	न	म	म	क	छु
३				×				२				०			

	म													म	
–	ग	–म	ध	धनि	सां	सां	सां	निध	–	प	धनि	ध	–	म	प
ऽ	जा	ऽन	त	तूऽ	ऽ	हि	स	बऽ	ऽ	ज	नऽ	ना	ऽ	हिं	मौ
३				×				२				०			

	म		
गम	ग	–म	नि
ऽऽ	सू	ऽझ	त
३			

अंतरा

							गं								
–	म	–प	नि	सां	–	सां	रीं	गं	रीं	सां	रीं	नि	सां	नि	ध
ऽ	दे	ऽख	त	ना	ऽ	ट	शो	ऽ	क	म	न	न	य	न	न
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

–	नि॒सांनि॒नि॒			–प	म	मप	ग॒	म	री	री	प	धनि	सां	नि॒ध	नि॒प	मप	ग॒म
ऽ	धीऽऽऽ			ऽर	ज	धाऽ	ऽ	ऽ	र	तू	ऽ	दौऽ	ऽ	धीऽ	ऽऽ	रऽ	मौऽ
३						×				२				०			

	म		
–	ग॒	–म	नि॒
ऽ	सू	ऽझ	त
३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटमंजरी, ताल त्रिताल, लय मध्य

सजल नैना काहे
गोरी कारन बतादे री ॥
ना हम देख सकत तोरा शोक
ना शोमे द्रगजल तोहे
गोरी कारन बतादे री ॥

स्थाई

												प			
–	सा	ध़	नि़	सा	ग	–	म	–	–	प	ग	म	म	ग	री
ऽ	स	ज	ल	नै	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	हे	ऽ
३				×				२				०			
									प		मं				
सा	सा	ग	म	प	–	ध	नि	प	ध	मं	प	ग	मं	ग	री
ऽ	गो	री	ऽ	का	ऽ	र	न	ब	ता	ऽ	दे	ऽ	री	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
सा	सा	ध़	नि़												
ऽ	स	ज	ल												
३															

अंतरा

–	सा	–री	सा	म	–	म	ग	प	नि	ध	सां	नि	ध	प	म
ऽ	ना	ऽह	म	दे	ऽ	ख	स	क	त	तो	रा	शो	ऽ	ऽ	क
३				×				२				०			
–	ग	प	नि	सां	–	ध	नि	सां	गं	मं	–	मं	गं	रीं	सां
ऽ	ना	ऽ	शो	भे	ऽ	द्र	ग	ज	ल	ऽ	ऽ	तो	ऽ	ऽ	हे
३				×				२				०			
						ध									
–	ग	प	नि	सां	–	नि	प	प	ध	नि	प	ग	मं	ग	री
ऽ	गो	री	ऽ	का	ऽ	र	न	ब	ता	ऽ	दे	ऽ	री	ऽ	ऽ
३				×				२				०			
सा	सा	ध़	नि़												
ऽ	स	ज	ल												
३															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटमंजरी (भटियार अंग), ताल छक्क ताल, लय विलंबित

सब रस एक भयो है मोहे री
एक ही एक रस महिं, कस समझाऊं तमसो री ॥
लय सुर ताल राग बंधन कर
ग्यान ध्यान करुं गान तमसो री ॥

स्थाई

सा,--- ---- सां,--- ---- ध,निसांरीं नि-ध-
स, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ब, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ र ऽ स ऽ
३

सां,--- ---- सां,--- सां--- सां,--- --सां-
ए, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ क, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ म ऽ
×

रीं,--- नि--- ध,--- प--- म,-प- ग---
यो, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ है, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ मो,ऽ हे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
२

प
म, -प- ग--- रीं,--- सा--- ध,--- पपग-
मो, ऽ हे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ री, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
०

ध
रीं, -सा- सा--- मं,--- ध,-, निसां,- सां,--- --सां-
ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ए, ऽ ऽ ऽ क, ऽ, हीऽ, ऽ ए, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ क ऽ
३

सां
ध,--- नि--- रीं,--- सां--- -,--- ---नि
र, ऽ ऽ ऽ स ऽ ऽ ऽ म, ऽ ऽ ऽ हिं ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
×

रीं
ध, -नि- सां-सां- नि, ध-- प-प- म, -प- पग--
क, ऽ स ऽ स ऽ म ऽ झा, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽं ऽ त, ऽ म ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म,–प– प ग –– री,––– सा––– ध,––– पप,––,पग,––
त,ऽमऽ सोऽऽऽ ऽ,ऽऽऽ ऽऽऽऽ री,ऽऽऽ ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ
०

री,–सा– सा––– सां,––– –––– ध,निसांरीं नि–ध–
ऽ,ऽऽऽ सऽऽऽ ब,ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ,ऽऽऽ रऽसऽ
३

अंतरा

–,––– धमं,–, धमं,– –,–,धमं,– धमं,–,–,–
ऽ,ऽऽऽ लऽ,ऽ,यऽ,ऽ ऽ,ऽ,सुऽ,ऽ रऽ,ऽ,ऽ,ऽ
३

धनि, सां–, –, – –, –, सां–, –
ताऽ, ऽऽ, ऽ, ऽ ऽ, ऽ, लऽ, ऽ

सां,––– ––सां– सां,–सां– सां–सांसां नि ध,––– ––नि–
रा,ऽऽऽ ऽऽगऽ बं,ऽधऽ नऽ कर ग्या,ऽऽऽ ऽऽनऽ
×

सां
रीं,––– नि–धप प,––– म–म– म,–प– पग,––,––,––
ध्या,ऽऽऽ नऽ करुं गा,ऽऽऽ ऽऽनऽ त,ऽमऽ ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ
२

म,–प– पग,––,––,–– री,––– सा––– ध,––– पप,––,पग,––
त,ऽमऽ सोऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ ऽ,ऽऽऽ ऽऽऽऽ री,ऽऽऽ ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ,ऽऽ
०

री,–सा– सा–––– सां,––– –––– ध,निसांरीं नि–ध–
ऽ,ऽऽऽ सऽऽऽऽ ब,ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ,ऽऽऽ रऽसऽ
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटमंजरी (भटियार अंग), ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

याद आयी री जागी मैं
तरस रही बरसत नैनूरी ॥
शोक मन मेरो, पिया ना आये
देखे बिन बरसत पलखारी ॥

स्थाई

प	–	–	म	मप	ग	री	सा	साध	–	–	–	धप	मप	म	–
या	ऽ	ऽ	द	ऽऽ	आ	यी	री	जाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गीऽ	ऽऽ	मैं	ऽ
०				३				×				२			
प	–	–	म	मप	म	री	सा	सा	–	–	–	सा	–	सा	–
या	ऽ	ऽ	द	ऽऽ	आ	यी	री	जा	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	मैं	ऽ
०				३				×				२			
प	–	–	म	मप	ग	री	सा	साध	–	–	–	धप	मप	म	–
या	ऽ	ऽ	द	ऽऽ	आ	यी	री	जा	ऽ	ऽ	ऽ	गीऽ	ऽऽ	मैं	ऽ
०				३				×				२			
म	म	प	म	प	–	म	म	पध	ध	–	प	धप	प,	म	–
त	र	स	र	हीं	ऽ	ब	र	सऽ	त	ऽ	नै	नूऽ	ऽ,	री	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

ध															
मं	–	मं	ध	सांसां	सां	–	सां	रीं	नि	–	ध	–	धनि	सांरीं	रीं
शो	ऽ	क	म	नऽ	मे	ऽ	रो	पि	या	ऽ	ना	ऽ	आऽ	ऽऽ	ये
०				३				×				२			
रीं	नि	–	ध	प	प	म	म	पध	ध	–	पप	धप	प,	म	–
दे	खे	ऽ	बि	न	ब	ऽ	र	सऽ	त	ऽ	पल	खाऽ	ऽ,	री	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग देस, ताल एकताल, लय मध्य और द्रुत

आ राजाजी घरे
कितक दिन बीत्यो रे ॥
शोक कर कर जागियो रे
प्यारे मुख तेरे आँखन में लियो रे ॥

स्थाई

										म					
म	मग	रीग	सारी	म	म	प	—	प	—	घ	प
आ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रा	जा	जी	ऽ	ऽ	ऽ	घ	रे
०		३		४		×		०		२	
								म			
ग प	मग	रीग	सारी	म	म	प	—	प	—	घ	प
आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रा	जा	जी	ऽ	ऽ	ऽ	घ	रे
०		३		४		×		०		२	
म	प										
री	म	प	नि	ध प	म	पनि	सांरीं	सांमां	निध	पम	गरे
कि	त	क	दि	न ऽ	ऽ	बीऽ	ऽऽ	त्योऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

म	—म	म	प	नि	नि	नि	—	सां	नि	सां	—
शो	ऽक	क	र	क	र	जा	ऽ	गि	यो	रे	ऽ
०		३		४		×		०		२	
प	नि	सांरीं	—	—	—	प	नि	सांरीं	गंरीं	सांनि	धनि
पि	या	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मु	ख	तेऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	
घ		म		ग							
प	ध	ग	म	री	—	सांरीं	सांसां	निध	पम	गरी	— —
आँ	ऽ	ख	न	में	ऽ	लिऽ	योऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग देस, ताल त्रिताल, लय मध्य

यला यला याल यला
यललों यललों दानी दीं दीं तादीं
दिर दिर तादीं तन तादीं
तान्न देरेना, तनन देरेना देरेना ॥
दानी उदानी दीं दीं तादीं
तन देरेना देरेनात्त दीं
धाक्डान् धिरकिटतक धातूना, धिर धिर धिर
तान्न देरेना, पधप, निसारे मगरे, तनन देरेना देरेना ॥

स्थाई

			सा												
मग	गरी	री	म	प	सां	–सां	नि	सां	–	–	–	नि॒	ध	पध	पध
यऽ	लाऽ	ऽ	य	ला	या	ऽल	य	ला	ऽ	ऽ	ऽ	य	ल	लोंऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

म	गरी	–	म	प	सां	–सां	नि	सां	–	–	–	नि	सां	रीं	रीं
य	लाऽ	ऽ	य	ला	या	ऽल	य	ला	ऽ	ऽ	ऽ	य	ल	लोंऽ	
०				३				×				२			

									री	ग					
सां	नि॒	ध	प	ध	ध	प	म	ग	ग	प	म	ग	री	नि॒	सा
ऽ	ऽ	य	ल	लों	ऽ	ऽ	ऽ	दा	नीं	दीं	ऽ	दीं	ऽ	ता	दीं
०				३				×				२			

											गं				
–	मम	रीरी	म	प	सां	नी	सां	रीं	–	–	रीं	गं	पं	मं	गं
ऽ	दिर	दिर	ता	दीं	त	न	ता	दीं	ऽ	ऽ	ता	ऽ	न्न	दे	रे
०				३				×				२			

रीं	गं	रीं	–	–	मं	गं	रीं	सां	नि	सांरीं	रींसां	नि॒	ध	पध	धप
नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	न	दे	रे	नाऽ	ऽऽ	दे	रे	नाऽ	ऽऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

													ध											
म	म	प	नि	नि	सां	–	सांनि	नि	नि	सां	–	–	–	–	नि	सां	रीं
दा	नी	ड	दा	नी	दीं	ऽ	दींऽ	ऽ	ता	दीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	दे
		०				३				×				२			

													धं											
गं	रीं	रीं	गं	मं	पं	पं	मं	गं	रीं	सां	रींगं	–गं	गंपं	मंमं	गंगं
रे	ना	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	त्त	दीं	ऽ	धा	क्डाऽ	ऽन्	धिर	किट	तक
०				३				×				२			

रीं	गं	रीं	मंमं	गंगं	रींरीं	नि–	सां	नि	सां	रीं	सां	नि	ध	पनि
धा	तू	ना	धिर	धिर	धिर	ता	ऽ	न्	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	पनी
०				३				×				२			

प	निसां	रींमंगं	रीं	मं	गं	रीं	सां	निसारीं	रींसां	नि	ध	पध	धप
प	नीसा	रे मग	रे	त	न	न	दे	रे	नाऽ	ऽऽ	दे	रे	नाऽ	ऽऽ
०			३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग झिंझोटी, ताल एकताल, लय विलंबित और ठाय

थाकी रे मैं पिया
अब रंग ना डारो, घोलो ना रंग, रसिया रे ॥
छांड दे मोरी बांही, झकझोरो ना रे,
खेलैया फाग रचैया रे ॥

स्थाई

–, –, –, रीप	म ग ग, –, रीं, सा रीं	गरी, –, –, –
ऽ, ऽ, ऽ, थाकी	रे, ऽ, ऽ, मैं पि	या ऽ, ऽ, ऽ, ऽ
४		×

सासा, –, –, री–	सा नि़, सानि़ध़ –, सा, –	–, –, –, री–ग–
ऽऽ, ऽ, ऽ, अऽ	व, ऽऽऽ ऽ, ऽ, ऽ	ऽ, ऽ, ऽ, ऽरं ग ऽ
	०	

सानि़, –, ध़नि़, प	ध, –, प़, –	ध़, सा, री, –
ना ऽ, ऽ, ऽऽ, डा	रो ऽ, ऽ, ऽ	घो, लो, ना, ऽ
२		०

ग ग री री, –, ग, सा	गरी, ––, गरी, पम	ग, –, रीगरी–, सा
ऽ, ऽ, रं, ग	ऽऽ, ऽऽ, रऽ, सिऽ	या, ऽ, ऽऽऽऽ, ऽ
	३	

गरी, –, सा, रीप	म ग, –, रीगरी–, सारी	
रेऽ, ऽ, ऽ, थाकी	रे, ऽ, ऽऽऽऽ, मैं पि	
४		

अंतरा

–, –, –, मग	रीम, प, ध, सां	सां, –, –, –
ऽ, ऽ, ऽ, छांऽ	ऽ ड, दे, मो, री	बां, ऽ, ऽ, ऽ
४		×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांरीं, –, सांनि, ध | सां, –, –, – | ध, सां, –, रींगं |
ऽ ऽ, ऽ, ही ऽ, ऽ | ऽ, ऽ, ऽ, ऽ | झ, क, ऽ, जोरो |
० |

रीं
सां, –, गंरीं, मं | गंरीं, –, सां, – | रीं, –, सांसां, – |
ना, ऽ, ऽ ऽ, ऽ | रे ऽ, ऽ, ऽ, ऽ | खे, ऽ, लै ऽ, ऽ |
२ | ० |

म म
नि, ध, प, – | म, पध, प, म | ग, –, रीरी, सा |
या, ऽ, ऽ, ऽ | फा, ऽऽ, ग, र | चै, ऽ, ऽऽ, या |
३

म री
गरी, –, सा, रीप | ग, रीग, सा, री |
रे ऽ, ऽ, ऽ, थाकी | रे, ऽऽ, मैं, पि |
४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा राग झिंझोटी, ताल त्रिताल, लय मध्य

दानी तदानी दानी देरेना देरेना दे
तारे तारे दानी तना, देरेना देरे तारे
तदारे दानी तों, तन देरेना दे ॥
तान तनारे तनता, ननन देरेना
तननन तनत, दारे तदानी तना
तार्दानि तनदे तनदे, तनतदे तनतदे तनतदे ॥

स्थाई

–	सा	री	सा	ऩि	सा	री	ग	म	ग	म	–	ग	री	ग	री
ऽ	दा	नी	त	दा	नी	दा	नी	दे	रे	ना	ऽ	दे	रे	ना	दे
०				३				×				२			

सा

–	सा	री	सा	ऩि	सा	रीग	री	म	ग	म	–	ग	री	ग	री
ऽ	दा	नी	त	दा	नी	दाऽ	नी	दे	रे	ना	ऽ	दे	रे	ना	दे
०				३				×				२			

–	सा	–	री	सा	ऩि	ध़	ऩि	ध़	प़	–	ध़	ऩि	सा	री	ग
ऽ	ता	ऽ	रे	ता	रे	दा	नी	त	ना	ऽ	दे	रे	ना	दे	रे
०				३				×				२			

म	–	ग	सा	री	ग	म	प	म	–	ग	री	ग	म	ग	री
ता	ऽ	रे	त	दा	रे	दा	नी	तों	ऽ	त	न	दे	रे	ना	दे
०				३				×				२			

अंतरा

															नि
–	प	ध	प	म	प	ध	नि	सां	–	नि	ध	नि	सां	नि	ध
ऽ	ता	न	त	ना	रे	त	न	ता	ऽ	न	न	न	दे	रे	ना
०				३				×				२			

–	प	ध	नि	सां	रीं	नि	सां	रीं	गं	रीं	सां	नि	ध	नि	प
ऽ	त	न	न	न	त	न	त	दा	रे	ऽ	त	दा	नी	त	दा
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

							री								
—	सां	—	प	—	म	ग	ग	म	—	प	म	प	—	—	म
ऽ	ता	ऽ	र्दा	ऽ	नि	त	न	दे	ऽ	त	न	दे	ऽ	ऽ	त
०				३				×				२			
	ध						प						म		
प	प	म	—	—	ग	म	म	ग	—	—	री	ग	ग	री	—
न	त	दे	ऽ	ऽ	त	न	त	दे	ऽ	ऽ	त	न	त	दे	ऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा राग मिश्रगारा, ताल एकताल, लय द्रुत

देरेना दारे, तदारे दारे
देरेना देरेना देरे नादेरे तना
तारे दानी तदानी दानी ॥
दानी तदानी दीं देरेना
तारे दानी दीं दीं दीं तन दे
तन देरेना तदारे दानी ॥

स्थाई

नि़											
ध़	—	नि़	सा	री	ग	म	ग	री	सा	रीग	रीसा
दे	ऽ	रे	ना	दा	रे	त	दा	रे	दा	रेऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़											
ध़	—	नि़	सा	री	ग	—	री	—	सा	नि़	सा
दे	ऽ	रे	ना	दा	रे	ऽ	दा	ऽ	रे	दा	रे
×		०		२		०		३		४	
ध़	—	नि़	सा	री	ग	म	ग	री	सा	रीग	रीसा
दे	ऽ	रे	ना	दा	रे	त	दा	रे	दा	रेऽ	ऽऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	री	नि़	सा	नि़	ध़	नि़	सा	री	ग	म
दे	रे	ना	दे	रे	ना	दे	रे	ना	दे	रे	त
×		०		२		०		३		४	
म											
ग	—	प	—	म	ग	री	सा	नि़	सा	रीग	रीसा
ना	ऽ	ता	ऽ	रे	दा	नी	त	दा	नी	दाऽ	नीऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

म	—	प	ध	म	प	नि	—नि	सां	रीं	सां	—
दा	ऽ	नी	त	दा	नी	दी	ऽम	दे	रे	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	नि	ध	प	ध	–ध	म	–म	ग	मग	री	सा
ता	रे	दा	नी	दी	ऽम्	दी	ऽम्	दी	ऽम्	त	न
×		०		२		०		३		४	

री	–	ग	म	प	सां–नि	धप	म	ग	री	सागु	रीसा
दे	ऽ	त	न	दे	रेऽऽ	नाऽ	त	दा	रे	दाऽ	नीऽ
×		०		२		०		३		४	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग मिश्रकाफी, ताल त्रिताल, लय मध्य

तना दीम् तना देरेना
तदरे दानी तारदानी तना, तनतनत तन दीम्
तनादीम् तनादीम् तनादीम्, तना देरेना ॥
तनत नत तन नतन दीम्
नतनना तदीम् देरेना, पध निप धनी, धनिसानि
सारे, नात्तदीम् नात्तदीम् नात्तदीम्, तना देरेना ॥

स्थाई

												–	–	ध	प–
												ऽ	ऽ	त	नाऽ
				प								२			
म	रीरी	म	म	ध	–	नि	सांनि	ध	–	पप	–	मम	प	ध	पध
दीं	ऽम्	ऽ	त	ना	ऽ	दे	रेऽ	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	त	नाऽ
०				३				×				२			
पमम	रीरी	म	म	मपधनि	पध	–नि	सांनि	ध	–	पप	–	मम	प	ध	पध
दींऽऽ	ऽम्	ऽ	त	नाऽऽऽ	ऽऽ	ऽदे	रेऽ	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	त	नाऽ
०				३				×				२			
				प											
म	रीरी	म	म	ध	–	नि	सांनि	ध	प	–	प	ध	म	प	ध
दीं	ऽम्	ऽ	त	ना	ऽ	दे	रेऽ	ना	ऽ.	ऽ	त	दा	रे	दा	नी
०				३				×				२			
नि	सां	–सां	नि	सां	नि	ध	प	नि	ध	–	–	म	ध़प	पम	री म
ता	ऽ	ऽर	दा	ऽ	ऽ	नी	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ	त	नऽ	तऽ	न त
०				३				×				२			
प	ध	नि	सां	–	सांसां	सांनिं	निधप	–ध	निनि	निध	धपम	–प	धध	ध	प
त	न	दीं	ऽ	ऽ	ऽम्	तऽ	नाऽऽ	ऽ	दीं	ऽम्	तऽनाऽऽ	ऽदीं	ऽम्	त	ना
०				३				×				२			
				प											
मम	रीरी	म	म	ध	–	नि	सांनि	ध	–	पप	–	मम	प	ध	पध
दीऽ	ऽम्	ऽ	त	ना	ऽ	दें	रेऽ	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	त	नाऽ
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

																				—	—	सां	नि॒
																				ऽ	ऽ	त	न
																				२			
																							नि॒
						प																	
ध	प	ध	ध	म	प	ध	नि॒	सां	—	—सां	सांनि॒	नि॒ध	ध	रीं	—
त	न	त	त	न	न	त	न	दी	ऽ	ऽम्	नऽ	तऽ	न	ना	ऽ
०				३				×				२			
—	गं	मं	गंगं	रीं	सां	नि॒	ध	पध	नि॒प	ध	नि॒	धनि॒	सांनि॒	सां	रीं
ऽ	त	दी	ऽम्	दे	रे	ना	ऽ	पध	निप	ध	नि	धनि	सानि	सा	रे
०				३				×				२			
—	रींमं	गं	रीं	सां	नि॒	धध	नि॒रीं	सां	नि॒	ध	प	मम	पसां	नि॒	ध
ऽ	नाऽ	ऽ	त	दी	ऽ	ऽम्	नाऽ	ऽ	त	दी	ऽ	ऽम्	नाऽ	ऽ	त
०				३				×				२			
						प									
प	री	मम	म	ध	—	नि॒	सांनि॒	ध	—	पप	—	मम	प	ध	प
दी	ऽ	ऽम्	त	ना	ऽ	दे	रेऽ	ना	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	त	ना
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग मिश्रबिहाग, ताल त्रिताल, लय मध्य

यला याल यला, यलले यलले
यललमुले यलं, तानं तानं तानं ॥
देम् तानाता देम् तदारे दानी दारे
तोम् तनत तन तोम् तानं तानं तानं ॥

स्थाई

सा	रीग प –प म	ग – री सा	री – सा सा	मग री – गम
य	लाऽ या ऽल य	ला ऽ य ल	ले ऽ य ल	लेऽ ऽ ऽ यल
	३	×	२	०

	ध		
पम ग म प	सां –नि प प	– ग गम पम	पम मग गरी सा
लमु ले य लं	ता ऽऽ नं ता	ऽ नं ताऽ ऽऽ	नंऽ ऽऽ ऽऽ य
३	×	२	०

अंतरा

प				
ग	–ग म पध प	सां – –सां प	नि सां रीं गं	रींसां,सां – धपप, ग
दें	ऽम् ता नाऽ ता	दें ऽ ऽम् त	दा रे दा नी	दाऽऽऽ रेऽऽ, तों
	३	×	२	०

	ध		
–ग मप म,प मगम	सां –नि प प	– ग गम पम	पम मग गरी सा
ऽम् तन त,त नतोम्	ता ऽऽ नं ता	ऽ नं ताऽ ऽऽ	नंऽ ऽऽ ऽऽ य
३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तराणा, राग झिंझोटीमिश्रवंती, ताल त्रितांल, लय मध्य

तना तना दीम् तना, दानि दानि
तदानी देरेना तनदीम् तनदीम्
तारे दानी तदानी दानी तारे दीम् दीम् दीम् ॥
चेत् लेना तदानी दीम् दनत नत
देरेना तारे नतनोम्, तानदीम् तानदीम्
तानदीम् तना, दानि दानि तना तना ॥

स्थाई

म ग – री	सा नि़ –नि़ सा	री – – सा	– नि़ सा नि़
त ना ऽ त	ना दीं ऽम् त	ना ऽ ऽ दा	ऽ नि दा नी
०	३	×	२
प़ ध़ नि़ सा	री ग म प	पम –म ग री	ग –ग म नि़
त दा नी दे	रे ना त न	दींऽ ऽम् त न	दीं ऽम् ता ऽ
०	३	×	२
ध प म ग	री ग म ग	प म ग –ग	री –री सा –सा
रे दा नी त	दा नी दा नी	ता रे दीं ऽम्	दीं ऽम् दीं ऽम्
०	३	×	२

अंतरा

रीरी ग – म	– म प नि	सां – –सां नि़	ध प म ग
चेत् ले ऽ ना	ऽ त दा नी	दीं ऽ ऽम् द	न त न त
०	३	×	२
म प ध सांनि़नि़	ध – म प	नि –नि सां –	धप मम प –
दे रे ना ताऽऽ	रे ऽ न त	नों ऽम् ता ऽ	नऽ दीम् ता ऽ
०	३	×	२
मग रीरी म –	गरी नि़ –नि़ सा	री – – सा	– नि़ सा री
नऽ दीम् ता ऽ	नऽ दीं ऽम् त	ना ऽ ऽ दा	ऽ नि दा नी
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताराणा, राग दुर्गा, ताल एकताल, लय द्रुत

ताना देरेना दानी
देरेना देरेना देरेना, तीरे दानी ॥
दे देरे नारे तारे
तन देरे नारे यारे, पल यारे, तारे दानी ॥

स्थाई

										म	म
प	—	—	म	पध	ध	पमम	—	—	—	री	री
ता	ऽ	ऽ	ना	देऽ	रे	नाऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	नी
०		३		४		×		०		२	

म	री	म				प	म	प			
री	म	प	—	—	—	म	प	ध	—	—	—
दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

ध	प	ध						सां			
प	ध	सां	—	—	—	सांरीं	सांसां	ध	प	मम	री
दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ताऽ	ऽऽ	रे	ऽ	दाऽ	नी
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

							रीं				
ध	—	ध	ध	प	ध	सां	सां	सां	ध	—	—
दे	ऽ	दे	रे	ना	रे	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०		३		४		×		०		२	

								मं		ध	
री	म	प	ध	सां	रीं	मं	—	रीं	—	सां	सां
त	न	दे	रे	ना	रे	या	ऽ	रे	ऽ	य	ल
०		३		४		×		०		२	

				म				सां			
ध	—	पमम	—	री	—	सांरीं	सांसां	ध	प	मम	री
या	ऽ	रेऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ताऽ	ऽऽ	रे	ऽ	दाऽ	नी
०		३		४		×		०		२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनूपरागविलास

धुनउगम राग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सहेलीतोडी

इस (धुनउगम) राग में रिखब, गंधार, धैवत, निखाद यह चार स्वर कोमल लगते हैं। मध्यम-स्वर वर्ज है।

जाति : औड़वषाड़व।

वादी : मंद्र धैवत।

संवादी : मध्य गंधार।

न्यास : षड्ज और पंचम।

गान का समय : सवेरे दस से बारह बजे तक।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सारी गर धसां | सां ध नि ध प ग री ग री सा ||

२) सा री ग री ग प ध नी ध सां | सां ध नि ध प, ग री ग री सा ||

३) ध़ सा री ग री, ग प ध नि ध सां | रीं गं रीं सां, धनिधग, गरीगरीसाध़ ||

रागात्मा :

ध़ सा री ग – –, प – – ग – –, री ग री सा री सा – – – ध़ – – – ||

विशेष : यह रागरूप विलासखानीतोडी से मिलताजुलता होकर भी बिलकुल भिन्न है। स्वरांतर तोड़ी जैसे ही लगते हैं। अवरोह करते समय निखाद वक्र होकर लगता है। ध़ सा ध़ – –, सा – – ध़ – –, यह स्वरसंगति इस राग में वैचित्र निर्माण करता है। मंद्र और मध्य सप्तक में इस राग का विस्तार स्वाभाविक है। तार सप्तक में भी रंजकता कम नहीं।

स्वरविस्तार :

ध़ सा री ग री सा रीसा – –, ध़ – – | सा – –, री ग री सारीसा – – – ध़ – –, ध़ – – सा | सा – – री ग – – –, री सा – –, ध़ – – –, नि़ ध़ – – – सा – – – | सा – – ध़ – – –, ध़ नि़ ध़ प़ – –, ध़ प़ ध़ सा – – –, री सा री ग – – सा री सा – – ध़ – – | प़ ध़ प़ ध़ सा – – –, री ग री सा री सा – – ध़ – नि़ ध़ प़ – –, ध़ सा ध़ सा री ग – –, री ग प – – ग – –, री ग री सा री सा – – – – ध़ सा। प़ ध़ सा, ध़ सा, री ग री, सा री सा ध़ – –, नि़ ध़ प़ – –, ध़ सा री ग प – – ग – –, री ग री सा – – | ग री सा री ग, प – ग – – –, प ध – प – – – ग – – –, पं ग – – –, री ग री सा री सा – – –, ध़ – – –|

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा री सा ---, री ग --, प ध प --, ग ---, प ध नि ध ---, प ध प
ग ---, प ग ---, री ग री सा री सा --- ध़ ---, प़ ध़ प़, ध़ सा
ग
री ग री सा री सा --, | सा री ग प ध नि ध ---, सां -------,
रीं गं रीं, सां रीं सां -- ध ---, ध नि ध प ध प ---, ग ---, री ग प
नि
--, ग ----, ध - प - ग ---, नि ध प ध प -- ग --, री ग री सा
----, ध़ ----, प़ ध़ सा ध़ ग री सा री सा -- ध़ सा | सा री ग प ध
सां ------ ध -------, नि ध प ध प ध सां ---- | ध सां रीं गं
गं
रीं सां रीं सां -- ध नि प ध प ----, ग --- री ग री सा री सा ---
ध़ ----- ग --- री सा | ध़ सा री, ग प ध नि ध ----, सां --- |
प ध प ध सां रीं गं रीं सां ध ---, नि ध प ---- ग ----, री ग प
--- ग ---, ध़ सा री ग ----, ग री सा री सा --- ध़, सा | प़ ध़ सा,
री ग, प ध नि ध सां ---- ध ---, प ध प ग प ---- ग ---
री ग री सा री सा, ध़ सा --- | ग री सा री सा, ध़ सा री ग प ध, नि ध प ध प,
ग प ध सां, रीं गं रीं सा रीं सां, ध नि ध प, ग प ग, री ग री सा री सा ----
ध़ ---- सा |

तानें :

[१] ध़सा रीग गरी सारीसा ध़सा। रीगरी गरी सारीसा ध़सा॥

[२] गग रीगरी सारीसा, ध़सा रीग पपग रीगरी, सारीसा ध़सा॥

[३] ध़नि़ध़ सासा रीसा, रीगरी गरी सारीसा।
ध़नि़ध़ सासा रीसा, रीगरी गरी सारीसा॥

[४] सारीसा रीग पग रीगरी सारीसा, ध़नि़ध़ सासा रीसा रीगरी गरी सारीसा॥

[५] ध़सा रीग पपग, रीगरी पपग, रीगरी गरी सारीसा, ध़सा रीगरी गरी सारीसा॥

[६] गग रीगरी सारीसा, पपग रीगरी सारीसा, धध प गपग पग रीगरी गरी सारीसा। गप धनिध निध पधप, गपग पग रीगरी गरी सारीसा। गप धसां धनिध निध पधप, गपग पग रीगरी गरी सारीसा---, ध़सा रीगरी गरी सारीसा---॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[७] गग रीग रीसा, पप गरी गग रीग रीसा, गप धसां धनि धध, पध पप गप गरी गग रीग रीसा ॥

[८] धसारीगरी गग धनिध, सांसां रींगंरीं गंरीं सांरींसां | धनिध पधप गगग रीगरी गरी सारीसा ॥

[९] धसा रीग पध सांरीं गंरीं सांरींसां, धनिधसां धनिध निध पधप, गगग पग रीगरी गरी सारीसा ॥

[१०] गगधसां रींगंरीं गंरीं सांरींसां, धधसांसां रींगंरीं गंरीं सांरींसां, धधसां धनिध निध पधप, गगग पग रीगरी गरी सारीसा ॥

[११] सारी गप धसां रींगंरीं सांसां, धनिध पप, रीगरी सासा। गग रीगरी सासा, निनि धनिध पप, रीगरी सासा ॥

[१२] गग रीगरी सासा, निनि धनिध पप, गग रीगरी सासा। गंगं रींगरीं सांसां, निनि धनिध पप, गग रीगरी सासा। सारी गप धसां, रींगंरीं सांसां, धनिध पप, रीगरी सासा ॥

राग सहेलीतोडी, ताल एकताल, लय विलंबित

काहे रे जगावां दे सोने दे, सोने दे रे
आज घर तोरे कल पर घर उड़ि जैहैं रे ॥
बतै देहोरी माँ, काहे उड़ि जैहैं ?
कैसे समझाउं, जैहैं रे जैहैं रे ॥

स्थाई

ध – सा –	– ग – री	सा – – –	नि ध, –, –, –	ध नि ध – – – – –
का ऽ हे ऽ	ऽ रे ऽ ज	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
४		×		०

ध सा – – –	– – री सा	री री ग – सा –	– – री सा	री ग – सा – री गसा – ध – – –
दे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ सो ने	दे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ सो ने	दे ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
२		०		३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

				सा											
ध़	–	ध़	–	–	सा	सा़	–	री	–	–	–	सा	–	–	–
आ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	घ	र	ऽ	तो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
४								×							

								ग						री	
प	–	प	–	ग	–	ग	ध	प	–	–	–	ग	–	ग	–
घ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	उ	ड़ि	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२								०							

ग	–	सा	–	रीगसा	–	ध़	–	–	–	–	–	–	–	–	–
हैं	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३															

अंतरा

				ध											
ग	–	प	–	–	नि	–	ध	सां	–	–	–	–	–	सां	–
ब	ऽ	तै	ऽ	ऽ	दे	ऽ	हो	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	माँ	ऽ
४								×							

ध	–	सां	–	–	रीं	सां	–								
का	ऽ	हे	ऽ	ऽ	उ	ड़ि	ऽ								
०															

रीं								ध							
गं	–	सां	–	रींगंरीं	–	सां	–	–	धगंरीं	सां	–	निधपग			
जै	ऽ	ऽ	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै	से	स	मऽ	झा	ऽ	उंजै
२								०							

ध	–	पग		रीगसा	–										
हैं	ऽ	रे	जै	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ				
३															

राग सहेलीतोडी, ताल एकताल, लय द्रुत

चंदासा मुख बनडारा
हँसहँस कर बतियाँ ये ॥
ये मेरो सब हर लीनो
धीया मन बस कर लीनो ये ॥

स्थाई

री		सा													
ग		री		सा	–	ध़	ध़	सा	ध़	सा	–	सारी		री	
चं		दा		सा	ऽ	मु	ख	ब	न	डा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	
४				×		०		२		०		३			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

										ग	
प़	ध़	सा	ध़	सा	री	ग	प	ग	—	री	ग
हूँ	स	हूँ	स	क	र	ब	ति	याँ	ऽ	ये	ऽ
४		×		०		२		०		३	

अंतरा

								रीं	सां		
ग	प	ध	—	सां	ध	सां	रीं	गं	रीं	सां	—
ये	मे	रो	ऽ	स	ब	ह	र	ली	ऽ	नो	ऽ
४		×		०		२		०		३	
ध	सां	रीं	गं	रीं	सां	ध	प	धनि	धध	री	स
धी	या	म	न	ब	स	क	र	लीऽ	नोऽ	ये	ऽ
४		×		०		२		०		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भवमतभैरव

इस (धुनउगम) राग में दोनों मध्यम है। रिखब, निखाद कोमल, गंधार, धैवत शुद्ध और पंचम वक्र हैं।

जाति : औड़वषाड़व।

वादी : गंधार।

संवादी : धैवत।

न्यास : मध्यम।

गान का समय : प्रातःकाल।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सागमप, मधनिसां | सांधमंमपगरीसा ||

२) सागमधनिसां | सांधमंमगमपगरीसा ||

रागात्मा :

सागमप, मधमंम, पगरीसा ||

विशेष : इस राग का आरोहावरोह वक्र है। आरोह में रिखब पंचम वर्ज तथा अवरोह में निखाद वर्ज है। दोनो मध्यम से ललित रागिनी का भास होना स्वाभाविक है।

स्वरविस्तार :

साग, ग, म, मपम, पगरीसा | गरीसा, गमप, गमपग, रीसा | गरीसानिसा, गरीसा, रीसा, गमम, मंम, प–गमप–गरीसा | गमधमंम, प–गमपगरीसा | पमपगमधधमंम, गमपम, पग, गरीसा | सागमधमंम, पगमधम, मंम, पग, गरीसा | मधनिसां, धनिसांध, धमंम, पगरीसा | मधनिसांनि, सांधमंम, गमपगरीसा | सागगमप, गमधधनिसां–––, धनिसां, धमंम, गगम, पगरीसा | गगरीसा, गगमधनि सां––, गं––रींसां, धधनिसां, निसां, धमंम, मप, ग––रीसा | सागमधनिसांधमंम, पगगरीसा | सागमप, मधनिसां, निसांगं––रींसां, रींसांधधनिसांधमंम, गगमपगरीसा | साग–रीसा, साध–मंम, गमपगरीसा | पगरीसा, सासांधमंम, मधधमंम, पगग, गरीसा | धनिसां निसांध, मध, मप–म, पगरीसा | धनिसाग–रीसा, गमपमधधमंम, गमपग, मपग–रीसा | गमप, मधनि, धनिसां, निसांध, मधमंम, पग, साग–रीसा |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानें :

[१] सागमपम मपप गग सारीरीसासा ॥

[२] पपगग सारीरी सासा, सागमधध मंमम, ममपपगग सारीरी सासा ॥

[३] मधनिसांनि निसांसां धध मंमम, मम मपप गग सारीरी सासा ॥

[४] सांनिसांधध, मधध मंमम, मम मपप गग सारीरी सासा ॥

[५] सागमपमम धमंमम, धनिसांनि निसांसांधध मपपमम, मपपगग सारीरी सासा ॥

[६] पपगग रीसासा, धधमंमम पपगग रीसासा, सांसांनिनि सांसांधध मंमम, पपमम पपगग रीसासा ॥

[७] सागमध निसांनि निसांसां--, ध-मं-म--, ग---, मपम मपप--, ग-री-सा--- ॥

[८] गंरींसांसां निसांसां धधमंमम, मपपगग सारीरी सासा ॥

[९] सागमप मपम मधध धनिनि निसांनि निसांसां-, मधध धनिनि निसांनि निसांसां, मधध धनिनि निसांसां धध मंमम, पप मप पप गग रीसासा ||

[१०] धमंमम पप मप पप गग रीसासा, गगग रीसासा, धधध मंमम, धधधनिनिनि सांसांसां धधध मंमम, पप मप पप गग रीसासा ||

[११] सागमप गम धध, मधनिसां धनिसांसां, सांधध मंमम, पपप पगग रीसासा ||

[१२] मप मपप गग रीसासा, गगग रीसासा| धधध मंमम, पपप ममम पपप गगग रीसासा, मधनिसां धनिसां धमंमम गमप गरीसासा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भवमतभैरव, ताल त्रिताल, लय मध्य

कंथारे, जानो जानो रे जानो
दरसबिन तोरे सूझत कछु नाहीं ॥
बिदेसा गयो जो तू, पतिया नहीं भेजो
जोहत बट मैंतो, सूझत कछु नाहीं ॥

स्थाई

सा	ग मंध –मं म	मंग म म –	– ग मप– म	प ग रीसा ग
कं	था रेऽ ऽजा नो	जाऽ ऽ नो ऽ	ऽ रे ऽऽऽ जा	नो ऽ ऽऽऽ द
	३	×	२	०

		म		म
	री सा –ग म	मंग म ध नि	सां धमं गम प	प ग रीसा सा
	र स ऽबि न	तोऽ ऽ रे सू	झ तऽ ऽक छु	ना ऽ हांऽ कं
	३	×	२	०

अंतरा

ध	मं म –ध नि	सां – सां ध	नि सांगं –रीं सां	रीं – सां रीं
बि	दे सा ऽग यो	जो ऽ तू प	ति याऽ ऽन हीं	भे ऽ जो जो
	३	×	२	०

	सां ध –नि सां	ध मं म सा	ग म –प म	प ग रीसा सा
	ह त ऽब ट	मैं ऽ तो सू	झ त ऽक छु	ना ऽ हांऽ कं
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बीहड़भैरव

इस (धुनउगम) राग में दोनों गंधार, दोनों निखाद, रिखब मध्यम और धैवत कोमल लगते हैं।

जाति : ओड़व-संपूर्ण।

वादी : षड्ज।

संवादी : पंचम।

न्यास : मध्यम, निखाद।

गान का समय : प्रातःकाल।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सा री म –, प म –, ध – प ध सां | नि रीं – सां | नि ध प म – –, ध – प ध नि नि – ध प म – ग री सा नि़ –, सा – री ग, ग री सा नि़, री री सा ||

२) सा री म प ध सां | सां नि ध प ध नि ध प म ग री सा री ग, ग री सा ||

रागात्मा :

सा, री म –, ग री सा री री सा – नि़ –, | सा, री ग ग री सा –, नि़ – री री सा – सा ||

विशेष : इस राग का षड्जस्थान बड़ा महत्व का है। षड्जके आसपासही इसका विस्तार होता है। आरोहावरोह का वक्रस्वरूप ही रागवाचक है। भैरवप्रकार होने से सीधा आरोहावरोह कर सकते हैं। जैसे : सारीमपधसां | निधपमगरीसा | कोमल गंधार और कोमल निखाद अवरोह करते समय ही लगाये जाते हैं। प्रचलित 'शिवमतभैरव' से यह अलग है। इसका स्वभाव, स्वरलगाव, रचना बिलकुल अलग है।

स्वरविस्तार :

सा – नि़ – सा – रीग – सा – सा –, सा – रीम – ग री सा री री सा – सा – | नि़ – सा री ग ग री सा – नि़ – री री सा – सा – | सा री ग ग री सा – नि़ – री री सा – सा – |

सा री ग – ग री सा –, सा री ग री – सा – नि़ –, सा री ग – सा – सा – | म – ग री सा नि़ री री सा – सा –, ग – सा – नि़ ध़ प ध़ सा – नि़ – री री सा – सा – | सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

री ग री
–म–पमग रीसा नि़–रीरी सा–सा–| नि़सा म– गरी सा नि़–, सा
री री
रीग– गरी सा–, ग–सा–सा–| सा रीमपम धधप – म –, गरी
नि
नि़, सा रीग गरी सा– | म–गरीसा, पमधधप–म गरीसा, नि़–सारीग
म नि
गरी सा–सा–| धधप–म–, गरीसा नि़सा रीग गरी सा–| नि़सारीग
री नि ध
–सा–, रीम पम धधप–, धनि–प–, धसां––निधपम, पधनि निधप
नि
म गरीसा नि़सा रीग गरीसा नि़रीरी सा–सा–| मपधसांनिधपम, धध
पम, निध पम, पधनि निध पम गरीसा नि़रीरीसा –सा–| पधसां नि
रीं सां रीं ग सां–सां–, निनि रीरीं सां–सां–, रींसांगंरींसां–, रींसांनिधप
नि
म धधप–, निधपम गरीसा नि़रीरी सा–सा–| म–पधनि धप, पधनि
नि नि
धपम–, धधप–, नि–प–, धधप–, मध पमगरीसानि़–, सारीगगरीसा–,
सारीगरी सा–नि़–, रीरीसा–सा –|

तानें :

[१] सानि़धप़ धसा सारीसासा, सारीमम मपधप मगरीसा, पपमगरीसा ममगरीसानि़ गग रीगरी रीसासा ||

[२] मप पधप मगरीसा, मप पधप निनिधप मप पधप मगरीसा | रीसासा धपप निनिधप मप पधप मगरीसा, रीसा सानि़ सारीगग सारीसासा ||

[३] सारीसानि़सानि़सारीसा, रीमगरीसानि़, मपमगरीसा, रीमगरीसानि़, सारीसानि़ सानि़सारीसा, रीगरी रीसासा ||

[४] मपममम गरीसानि़, रीसा मग पमधप मपमम, मपधप मगरीसानि़रीसा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[५] गगरीगरीरी सानिरीसा, पप मपमम गरीसानिरीसा, पप मपमम धध पधपप मपमम गरीसानि रीसा, सारीगग रीगरी रीसासा ||

[६] सारीमम मपधप, पमगरीसानि रीरीसा, सारीमम मपधप निनिधप मपधप, धसां रींसांनिधपम, मपमप धप, पमगरीसानि रीरीसा ||

[७] पधप निनिधप धसांनिधपम, पधप निनिधप मपम निनिधप, मपध निधपमगरीसा, निसारीगरीसा गगरीसा ||

[८] गंगंरींसां रींसांनिधपम, मपधसां निधपम, मपधनिधप मगरीसा, निसारीगरीसा, गगरीसा ||

[९] सासा रीम पधप मगरीसा, पधप मगरीसा, सारीसा पधप मगरीसा, सांरींसां निध पम पधप निनिधप, मपम पधप मगरीसा, सां–नि, धप मप पधप मगरीसा ||

[१०] सारीसासा पधपपमगरीसा, सांरीसांनिधप मप मधपप मगरीसा, सांरींगंरींसांनि धप, मप मप धनिधप मगरीसानिसा ||

[११] धपमगरीसा निधपम धपमगरीसा | रींसानिधपम धप निधपम धपमगरीसा | गंरींसांसां रींसांनिधपम, मपधनिधपमग रीसानिसा ||

[१२] पमगरी गरी गरी सानि रीसा | निधपम धपमगरीसा, गरीगरी सानि रीसा | गंरींसांसां रींसांनिधपम, निध निध पम धपमगरीसा, गरीगरी सानिरीसा ||

राग बीहड़भैरव, ताल त्रिताल, लय विलंबित

येहोरे श्याम
भूलग्यो काहे ब्रिजधाम ॥
याद करे तोरे बाल सखा रे
तरस दरस बिन
बिकल भये सब ब्रिजधाम ॥

स्थाई

				सा						नि ग			
सा	रीम,---		ग	री–सा–		सा	नि,----			री–री–		सा	
ये	ऽऽ,ऽऽऽ		हो	ऽऽ रेऽ		श्या	ऽ,ऽऽऽऽ			ऽऽऽऽ		म	
३						×							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा नि़ प़ध़ ---- प़ | ध़मा, --- नि़ नि़ सा–री़ ग़ –री़ री़ सा |
भू ल ग्योऽऽऽऽ का | हेऽ, ऽऽऽ ब्रिज धाऽऽऽ ऽऽमऽ |
२ ०

अंतरा

ध़ गं प
प मम म ध़प | सां सां–नि़– रीं–रीं– सां | सांनि ध़– – ध़ प–, पध़पध़ मम |
या दक रे तोरे | बा लऽसऽ खाऽऽऽ रे | तर सऽऽद रऽ, सऽऽऽ बिन |
३ × २

मप–ध़ निध़, ध़प, पम, म गरी़, नि़– री़–सा– |
बिकऽल मऽ, येऽ, सऽ, ब ब्रिजधाऽ ऽऽमऽ |
०

राग बीहड़भैरव, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

बना बनि आयो मेलो आजे
बाजी बजैया घर मेरो ॥
सज धज भीर आवन लागे
मेहकाय जाय हो घर मेरो ॥

स्थाई

री़ सा
म | ग सा री़ग सा | सा – – – | नि़ – नि़ री़ | री़ग री़ सा म |
ब | नाऽ बऽ नि | आऽऽऽ | योऽ मे लो | आऽऽ जे बा |
३ × २ ०

नि़
– म – मप | प – – म | ध़ ध़ प म | ग री़ सा म |
ऽ जीऽ बऽ | जैऽऽऽ | याऽ घ र | मोऽ रे ब |
३ × २ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

												सां			सां								
म		म	प	–	ध		सां	–	–	सां		नि	–	नि	रीं		रींगं	रीं	सां	सां		
स		ज	ध	ऽ	ज		भी	ऽ	ऽ	र		आ	ऽ	व	न		लाऽ	ऽ	गे	म		
		३					×					२					०						

								प															
		सां	नि	ध	प		म	–	–	म		प	धनिध	प	म		ग	री	सा	म		
		ह	का	ऽ	य		जा	ऽ	ऽ	य		हो	ऽऽऽ	घ	र		मो	ऽ	रे	ब		
		३					×					२					०						

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मधसुरजा

इस (धुनउगम) राग में दोनों रिखब, दोनों मध्यम लगते हैं। निखाद कोमल लगता है। पंचम अवरोह में वक्र है। गंधार धैवत वर्ज है।

जाति : औड़व-औड़व।

वादी : मध्यम।

संवादी : निखाद।

न्यास : षड्ज।

गान का समय : दिन के बारह से दो बजे तक।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सा री म प नी सां | सांनि मंम, पम री सा ||

२) सा, रीमपनि, पनिसांरींसांनि, मंम, पम रीसानि, सारी–, सा |

रागात्मा :

सा म सा
री---सा, रीमपनिमं---म, रीमपमरी---सा ||

विशेष : आरोह में रिखब शुद्ध, मध्यम निखाद कोमल लगते हैं। कोमल रिखब और तीव्र मध्यम अवरोह में लगते हैं। अवरोह थोड़ा सा वक्र है। तीव्र मध्यम, कोमल मध्यम के आधार से लगता हुआ कुछ चढासा प्रतीत होना चाहिये, लगना चाहिये। उसी तरह कोमल रिखब भी चढ़ासा लगना जरूरी है। इस राग का स्वरूप घोर भयानक प्रतीत होता है।

स्वरविस्तार :

सा म
सारी–सा, री–म–, म–, पम–, री--सा | री–सा रीम–, मं–म--, री--सा | सारीम –म–पम--, रीमम–, मंपम–, मं–म–, प--म

म सा
री--सा | रीमपम--, मपम, प–नि–नि–, पनि–मं–म–, प–मरी–सा | रीम–री–सा, नि–नि–सा, री–सा | सारीम--, रीमप–म--, पमपम--, मं–म–, रीमपम--, री–सा | रीमप–, पनि --, पनिमंम, मपम--,

म
री –सा | मपनि--नि, सां--, रीं–सांनि--, नि–नि–निसांनि--, मं–म

सा
--, रीमपम, रीम--, री–सा | सारी मप नि–, निसां–, सारीं–सां–, रींसां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि--, निसां-निमं-म--, मपनि--मंमं-, मपम--, रीमप-म-, री-सा | सारीमपनिमं-म, प-मरी-सा | सारीमपनि-मं-म--, मपनि--सां--, सांरीं-सां, रींसांनि--, पनिसां-नि--, मं-म--,

सा

रीमप-म, री-सा | री-सा, रीम-म--, मं--म-, मपनि, पनि--सां---, रीं-सां--, रीं-मं--रीं-सां, रींसांनि--, पनि--मं-म,

सा सा

रीमपम-- री-सा | रीसानि--, पनिसा-री-सा, रीम--मं-म,

सा म

प-म--री--सा | मप-निसांनि--, मं-म--, रीमपनि, पनि-मं-म-, मप-म--, रीम-, री-सा | म-री-सा, नि-मं-म-, सां-रीं-सांनि--, पनि--मं-म, रीम-मप-म, री-सा | मप-म-री-सा | निसां-नि-मं-म, प--म-री-सा | पनि-सारी-सा, रीम-पनि--मं-म, पनि-सां-रींसांनि--, पनिमं-म, प-म-री-सा | पनि-सा-, रीम-प-नि-सां-, रींसांनि-मं-म, प-म, री-सा | री-सा, रीमपनि-मं-म, रीम-पम-म-री-सा |

तानें :

[१] सारीम रीरीसा, रीमपम मंमंम रीम रीरीसा, रीमपनि मंमंम रीम रीरीसा, रीमपनिसां रींसांनिनि, पनि मंमंमम, रीमपमम रीरीसासा ||

[२] रीम मपमम सारीरी सासा; रीम मप पनिनि मंमंमं मम, सारीरीसासा ||

[३] सारीम रीमपपमम सारीरी सासा, रीमरीम पपमम सांरीरी सासा ||

[४] निसा रीरीसासा, रीमपपमम, मप निनि मंमंमं मम सारीरीसासा ||

[५] पप मप मम, पनिनि निसां निसांरींरींसांसांनिनि, पनिनि मंमंम मम, रीमम सारीरी सासा ||

[६] सारीम रीमप मपनिप मम, मंमं मंमंमम रीमम सारीरी सासा ||

[७] पप मप मम सारीरी सासा, पप मप मम रीमम मपप पनिनि निसांसां सांरींरीं सांसां निनि, पनिनि मंमंमं मम, रीमम सारीरी सासा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[८] निसांसां सांरींसां निनि, पनिनि मपप मम, रीमम सारीरी सासा | मपप मम रीमम सारीरी सासा | पनिनि मपप मम रीमम, सारीरी सासा | निसांसां निनि पनिनि मपपमम रीमम सारीरी सासा ||

[९] निनिनि सांसांसां निनि, पपप निनिनि, मममपपप मम, रीरीरी मममम सासासा रीरीरी सासा ||

[१०] रींसांनिनि सांनिनि पनिनिसां सांरींसांनिनि, सांनिनि मंमम रीम मपमम पमम रीसासा ||

[११] मपप पनिपमम रीमम सारीरी सासा, रीमम मपप पनिपमम, पनिनि निसांसां सांरींसां निनि, पनिनि मंमंमं मम रीमम सारीरी सासा ||

[१२] रीमपनि सांरींसांनिनि, पनि निसां सांरींसां निनि, सांसां निनि पनि मंमंमम, पपमम रीम सारी सासा ||

[१३] रींसां निनि पनि मंमंमम रीम सारीसासा, पपमम रीम सारीसासा, निनि मंमंमम रीम सारीसासा, रीमप मपनि पनिसां निसांरीं सांरींसां, निसांरींमं सांरींसांसां, निसांरींसां निनि पनि मंमंमम, मपनिप मम रीम सारी सासा ||

राग मधसुरजा, ताल त्रिताल, लय ठाय और मध्य

बचाले मोरी मां मातारी
घर में ललुवा अकेलो बिन मोहे ॥
अरज यही तोरे पास मेरो योहै
घर में ललुवा अकेलो बिन मोहे ॥

स्थाई

														म		
री	म	पनि	—	—	—	मं	म	म	—	—	—	री	—	प	—	म
ब	चा	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो री	मां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ता
	३							×				२				

सा												री			
री	—	सा	री	सा	नि़	—सा	सा	म	—	री	म
री	ऽ	ऽ	घ	र	में	ऽल	लु	वा	ऽ	अ	के
०				३				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म॑

प नि॒ - - - - नि॒ म | मम॑ म॑ मम॑म - री |
लो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ वि न | मो ऽ ऽ हे ऽ ऽ ऽ ब |
२ ०

अंतरा

नि॒

म॑ | मम॑म - मरी मप नि॒ | सां - सां नि॒ | सांरीं - - रीं - सां नि॒ |
अ | र ऽ ऽ ऽ ऽ ज ऽ ऽ य ही | तो ऽ रे पा | ऽ ऽ ऽ ऽ स ऽ मे रो |
३ × २

प री

नि॒ - नि॒ - - म, री॒ | सा नि॒ - सा सा | म - री म |
यो ऽ है ऽ ऽ ऽ, घ | र में ऽ ल लु | वा ऽ अ के |
० ३ ×

म॑

प नि॒ - - - नि॒ सांरीं - , सांनि॒ | मम॑ म॑ मम॑म - री |
लो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, वि न | मो ऽ ऽ हे ऽ ऽ ऽ ब |
२ ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग निंदियारी

इस (धुनउगम) राग में दोनों मध्यम और सभी स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति : संपूर्ण-संपूर्ण।

वादी : रिखब।

संवादी : धैवतं।

न्यास : षड्ज।

गान का समय : सायंकाल।

आरोह-अवरोह-स्वरूप

१) नि़सानि़ध़ नि़सारीग मंपध निसांनिधप मंपमगरीसा, नि़सानि़ध़ नि़सारी–सा ||

२) नि़सारीग मंप धनिसां। सांनिधपमगरीसा ||

रागात्मा :

ध़नि़सारी---सानि़सा-- |

नि़सानि़ध़नि़सारी-- |

मगरी--, सानि़सा-- |

विशेष : इस रागिनी का आरोहावरोह सीधा है। आरोह में तीव्र मध्यम और अवरोह में कोमल मध्यम हैं। प्रचलित कल्याण रागिनी से यह रागिनी अलग है। इसका स्वभाव भी भिन्न है। कल्याण का निकास और इसका निकास में अंतर है। नि़सानि़ध़---, नि़सारीरीग, नि़सानि़सा– इसी तरह और भी नि़सानि़ध़---, ध़नि़सारी---, सानि़सा | ध़नि़सारी--, गम--- ग---री---, सानि़सा---, नि़ध़---, नि़सारी--- नि़सानि़सा, यह स्वरविन्यास कल्याण को दूर कर देता है। यह शांतप्रकृति रागिनी है। छोटी सी रागिनी है।

स्वरविस्तार :

सा–नि़ध़–, नि़सारी---, नि़सानि़सा–सा–| ध़नि़सारी---, नि़सा---नि़ध़--, ध़नि़ध़नि़सा--|| ध़नि़सारीगम---, गरी---, नि़सा--, नि़ध़-- ध़नि़सारी----, नि़सा--|| सा--- रीगम---, गरी--, सानि़सा---, नि़ध़---, ध़नि़सारीग-- री--सा--|| नि़सानि़ध़, प़ध़नि़सारी---, नि़सानि़सा–सा--|| ध़नि़सारीगम--ग--री--, म--गरी--, सानि़ध़नि़सारीगमंपम---, ग--री----,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गमंप--म---, ग-री---, सानिसारीग--री-सानिध---, धनि सारी---सानिसा--- || धनिसारी--, गमंपध---प--, म---, ग-री---, सानिसारीगम---, ग-री---, सानिसा-नि-ध--, धनिसारी---निसा निसा || धनिसारीगमंपध--- प--मंप---म ---ग-री---, रीगमंपध--प--म--- ग-री---, सानिसा-रीगम---, ग-री---, सानिसा--- || निसानि, धनिसारीगमंपध ---, पमंप--म--ग-री---, सानिसारीग--री--सा---, निसा निसा--- || निसारीगम---, गमंपमंपध--, पमंप--, मंग ---, म--,- ग-री---, सानिसा-- || प--मं, गमंपध---, धपमंगमंपध--पमंप---, मंग----, गमंप--म---ग---री ---, सानिसारीग---री---, सा--- || निसानिध, निसारीगम, गरीसानि, सारी, निसानिसा || मंपमंग, मंपधनिसां, निधपमं, पध, मंप गमंप-, मगरीसानिसारी, निसानिसा- || धनिसानिध, निसारीग, गमंपमंग, मंपधनिसां, निधपमंप मगरी सानिसा || निसानिध, निसारी गमंप, मगरीसा निसा | मंपमंग, मंपधनिसांरीं, सांनिधपमंप, मगरीसा निसा || निसारीग मंपधनि धपमंप मगरीसा निसा, मंप मंगमंप ध- मंपमंप -मगरी सानिसानि ध- निसारी— || रीगम, गमंपध-, पमंगमंपधनिसां-- || धपमं, गमंपधनिसां, निधनिसांरीं--, सांनिसां निध, पधनिसां, निधपमंप, मगरीसानिसा || धनिसारीगमंपधनिसां-निधपमं, धपमगरीसानिसा || धपमं, पधपमगरीसानिसा, रींसांनि, सांरींसां, निधपमंप, धपमं, पधपमगरीसा निसा || निसारीसानि, सारीग, मंपधपमं, पधनि, धनिसां निधनिसांरीं, सांरींगं, रींसांरीं, सांनिसां, सानिधनि, धपध, पमंप, मगम, गरीग, रीसारी, सानिसा || पमगरी, गमग, सानिधनिसारी, निसानिसा || धनिसारी-गम---ग-री-- सानिसा--- ||

तानें :

[१] निसारीगमंप, धपप, पमगरीसासा, रीसानिधनि ||

[२] धनिसारी गगरीसा रीरीसानिसा, धनिसारी गमगरी गगरीसारी, निसारीगमंप धधपमं पपमग ममगरी गगरीसा रीरीसानि सासानिधनि ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

[३] नि़सारीगम गमगरी गरीगरी सानि़सानि़ध़, नि़सारीगमंप धपप मगरीसानि़ध़ ||

[४] ध़नि़सारीग–रीसा री–सानि़ सा–नि़ध़नि़–, ध़नि़सारीगम–गरी ग–रीसा री–सानि़सा–नि़ध़नि़–, ध़नि़सारीगमंप–मगम–गरीग–रीसारी–सानि़सा–नि़ध़नि़– ||

[५] नि़सारीगम गगरी सासा रीसानि़ ध़नि़सारी, नि़सारीगमंप धपप पमग गरीसासा रीसानि़ ध़नि़सारी, नि़सारीगमंप धनिधपप धपप पमग गरीसासा रीसानि़ध़नि़सारी, नि़सारीगमंप धपप मगरीसानि़ध़ ||

[६] मंपधनिसां–निधपप मगरीसानि़ध़, मंप धनि़ध पप मगरीसानि़ध़ नि़सा रीगमंप धपप मगरीसानि़ध़ ||

[७] गरी गरी सासा रीसा रीसा नि़ध़, मग मग रीसा गरी गरी सासा रीसा रीसानि़ध़, नि़सारीगमंप धप पधपप, पम पम गरी मग मग रीसा, गरीगरीसासा रीसारीसानि़ध़ ||

[८] पधपप मगरीसानि़सा, निधपप मगरीसानि़सा, सांरींसांनिधप पधपप मगरीसानि़सा ||

[९] नि़सारीगमग गरीसासा, पधपप पम मग गरीसासा, मंपधनिसांनि निधपप, पधपप पम मग गरीसासा रीसानि़ध़ ||

[१०] धनिसांरीं गंरींसांसां, रींसांनि निधपप, धपप पमग गरीसासा, रीसानि़ध़ ||

[११] मंपधनिसां निधनि, धनिसांरींगं रींसांरीं सांनिसां, निध निध पप धपप पमग गरीसासा ||

[१२] निसांरीं रींसांनिध निध निसांरींगं गंरींसां, रींसांनिनिधप धपप पमग गरीसासा रीसानि़ध़नि़ ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग निंदियारी, ताल त्रिताल, लय ठाय और मध्य

आजारे आजा, पिया घर मोरे
नाम तेरो निसदिन, ललन उचारे ॥
बाबुल बाबुल करत हो रे, पूछत तोहे
नाम तेरो निसदिन, ललन उचारे ॥

स्थाई

– नि़ –सा री	री – सा –	– सासा –री म	म गरी रीग–री सारी
ऽ आ ऽजा रे	आ ऽ जा ऽ	ऽ पिया ऽघ र	मोऽऽ रेऽऽऽ ऽऽऽ
३	×	२	०

सा–नि़ध़ नि़ सारी ग	मं प मं प	री पधपप –म गरी
ऽऽऽऽ ना मते रो	नि स दि न	ऽ लऽलऽ ऽन ऽउ
३	×	२

रीग–– रीसा–– सारे–सा नि़सा–नि़	नि़ध़––, नि़ –सा री
चाऽऽऽ ऽऽऽऽ रेऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ, आ ऽजा रे
०	३

अंतरा

–सासाप –म गमरी	री ग –मं प	मंपधनि सां – नि	ध प म गमरी
ऽ बाबुल ऽबा बुऽल	क र ऽत हो	रेऽऽऽऽ ऽ पू	छ त तो हेऽऽ
३	×	२	०

गरीसानी़ नि़ सारी ग	मं प मं प	री पधपप –म गरी
ऽऽऽऽ ना मते रो	नि स दि न	ऽ लऽलऽ ऽन ऽउ
३	×	२

रीऽग–– रीसा–– सारी–सा नि़सा–नि़	नि़ध़––, नि़ –सा री
चाऽऽऽऽ ऽऽऽऽ रेऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ, आ ऽजा रे
०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग संजारी

इस (धुनउगम) राग में दोनो गंधार, दोनो मध्यम और दोनो निखाद लगते हैं। तीव्र मध्यम वक्र होकर लगता हैं। री, ध शुद्ध लगते है।

जाति : औड़व–संपूर्ण।

वादी : रिखब।

संवादी : धैवत।

न्यास : षड्ज।

गान का समय : सायंकाल।

आरोह अवरोह-स्वरूप :

१) सारीमपधसां | सांनिधनिधमंप, मगरीगरीनिसा ||

२) रीनिसा, रीमपधमंप, धसां | रींनिसांनिधनिधमंप, धपमगरीग रीनिसा ||

रागात्मा :

रीम, पधमंप, मगरीगरी, सारीनिसा ||

विशेष : संजारी के आरोहमें गंधार निखाद वर्ज हैं। अवरोह वक्र होकर सभी स्वर लगते हैं। प्रचलित कल्याण, शामकल्याण इन दोनो रागोंसे संजारी भिन्न है। इसका तीव्र मध्यम बहुत ही याचनायुक्त है। प्रकृति नाजुक है।

स्वरविस्तार :

सारीनिसारीमगरी––, रीगरी––नि–सा | रीम, पधमंपमगरीरी, निसा | गरी––, सारीनिसा––, निधधप, निधधपधसारीरीसा | सारीमगरीगरीनिसा | पमगरी––, सारीनिसारीमपधपम, ग, री, सारीगरीसा | गरीगरी, मपधधप, नि––धनिध––प, धमंपधपमग रीरी, सारीगरीनि–सा | मपधपमगरीगरी––, ध–मंपमगरीगरी–, सारीमगरीगरीनिसा | मपधसां–, रींनिसां––, निधपधमंप, मगरी, सारीनिसा | रीमपधमंपमगरीनिसा | सारीमपधमंपधसां, निधनिध मंपमगरीगरीनिसा | म––म–गरीगरी––, रीमगरी, गरी–––, री––निसा | पम–––, गमगरीगरी––––, सा | धमं–––,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पमगरी, सारीनि़सा | धपमं--पधपमगरी---गु़री---, सा |
मग---रीगु़री--सारीनि़सारीम---, पधमं---, पधपमगरी---,
गु़री---सारीनि़सा | सां---निध--, नि़धप धपमं, पधपमगरी---,
मं
गु़री---सा | सारीम--, पधप---मगरी---, मगरीगु़री---,
सारीमगरीगु़री--, सारीनि़सा । धमंप, निधप, धमंप---मगरी---,
नि़
निधप, सांनिधधप, धमं---पमगरी---, गु़--री---सा |
रीनि़सा, धमंप, धसां | रींनिसां, निधप, धमंपमगरी--, गु़--रीसा,
रीनि़सा || निधप धमंप धसां---, रीं-सां--, रींनिसां---निधप,
निध-प, धमंपमगरी---गु़री---सारीनि़सा | नि़सारीम---,
पधमं--, पधसां | धसांनि धनि़ध--, पनिधपधमं--, पध---
मं धप
पमगरी, गु़री---सारीनि़सा | मं---पनिध---प, धमंपमगरीगु़री
--, सां---, नि--, ध---, प----, मं---प---ध--प
मगरी---गु़री---सा | मं--गं---रींगु़रीं---सां---, रींनि
सांनि---धनि़धपधमंपपध-पमगरी, गु़री---सा--, रीनि़सा |
सां-निधनि़धप-, मंगंरींगु़रींसां-, पनिधसांनि--ध नि़धपध---प
मगरी, सारीनि़सा || रींनिसां, धमंप, रींनिसां, निधनि़धमंपमग
रीगु़रीनि़सा ||

तानें :

[१] रीगु़री रीसानि़सा, रीमपधप पमं, पधप मग रीगु़री रीसानि़सा ||

[२] पमग रीगु़री रीसानि़सा, धप पमं पधप मग रीगु़री रीसानि़सा ||

[३] रीसानि़सा, रीमपधपमगरीसा, निधपमं पधप मगरीसा ||

[४] रीगु़री रीसानि़सा, पधप पमं पधप मग रीगु़री रीसानि़सा, धनि़ध धप पमं पधप मग रीगु़री रीसानि़सा ||

[५] नि़सारीमगरी मपधप निधपमं, पधप निधपमं, पधपमग रीगु़री रीसा नि़सा

[६] धपमं पधसांनिधप, नि़धपमं, धपमग रीगु़री रीसानि़सा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[७] रीमम मपप पधप मग रीसासा, नि़सारीम मग रीगरीसारी, मंपधप पमं, पधप मगरीसासा॥

[८] पधप धपमं पधसां, पधप धपमं पधप मग रीग॒री रीसानि़सा, रीग॒री रीसानि़सा, नि़सारीम मग रीगरी, मंपधप पमं पधसां, रींसांनिध नि॒धपमं, पधपमग रीग॒री सानि़सा॥

[९] पधमंपधसां, पधमंपधप मगरीसासा, सारी नि़सा रीम मग, रीगसारी, मपधप, सांनिधप, नि॒धपमं धपमग, ग॒रीसानि़सा॥

[१०] रीसासा धपप मग गरीसानि़सा, रीसासा धपप, रींसांसां धपप, धपप मग रीसानि़सा॥

[११] नि़सा रीममग रीगरीसारी, मंपधप पमं पधप मग रीग॒रीसानि़सा मंपधप पमं पधनि॒धपमं पधप मग रीग॒रीसानि़सा, निसांरींसां निध, निसांनिधप, धनि॒धपमं, पधपमग रीग॒री सानि़सा॥

[१२] रीममग रीसारी, रीमम मपप पधधपपमं, पधधपमगरीसारी, निनिनिधप धधधपमं पधधपमगरीसारी, रीरीरी धधधपमं पधधपमग रीग॒री रीसा नि़सा॥

राग संजारी, ताल एकताल, लय विलंबित

संजा सुन लेहोरी, सुन लेहो
रात अंधियारी, जिया डरपेगा हो डरपेगा ॥
ओढाउँ रँग साडी, थारे माँग सराऊँ, मोतीयन माल
जिन जावो जिया डरपेगा ॥

स्थाई

								–	–	ध	
								ऽ	ऽ	सं	
								३			
										म	
मंप, –	–मग–		री	सा	– सारी –	नि़सा		म		प	
जाऽ, ऽ	ऽ सुन ऽ		ले	हो	ऽ री ऽ ऽ	सुन		ले		हो	
४			×		०			२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग
पमम, म-- गरी | -गरी- सा-सारी |
राऽऽ,ऽऽऽ तऽ | ऽअधिऽ ऽऽयाऽ |
० ३

निसा सा | मग री | -मप- निध | निध मं पप-- |
ऽऽ री | जिया ऽ | ऽडरऽ पेऽ | ऽगा ऽऽऽऽ |
४ × ० २

धमंप- -मग- | री सा ध |
होऽऽऽ ऽडरऽ | पे गा सं |
० ३

अंतरा

- -सा |
ऽ ऽओ |
३

धमं प- प-धसां | सां सां | सांरीं मंगं | रीं गं रीं-सांसां |
ढाऽऽऽ ऊँऽरंग | सा डी | थारे माँऽ | ऽऽ गऽऽऽ |
४ × ० २

रींसांसांनि,सां सां | पध -सां |
राऽऽऽ,ऽ ऊँ | मोती ऽय |
० ३

निसां -सां | नि-धध प,मंप | रींसां निध | निध धपपमं,पध |
ऽऽ ऽन | माऽऽऽ ल,ऽऽ | जिन जाऽ | ऽवो ऽऽऽऽ, ऽजि |
४ × ० २

पधपप,- -मग- | री सा ध |
याऽऽऽ,ऽ ऽडरऽ | पे गा सं |
० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग संजारी, ताल त्रिताल, लय द्रुत

रतियाँ डरावन लागोरीमाँ
संजाके साथे तू, मैं का ना भेजोरी ॥
संजा को आजे काहे, भेजो मैया री
रतियाँ तो कारी कारी, डर घणेरी ॥

स्थाई

		म॑	
– रीम	–प ध	प – मग	गरी
ऽ रति	ऽयाँ ड	रा ऽ बऽ	नऽ
३		×	

री – सा	–	गगरी	रीसा, नि़ सा सा
ला ऽ गो	ऽ	रीऽऽ	ऽऽ, ऽ ऽ माँ
२		०	

– सा नि़	सा	री सा री	–
ऽ सं जा	के	सा थे तू	ऽ
३		×	

– री धप	पम	मग गरी	गगरी रीसा नि़
ऽ मैं काऽ	नाऽ	भेऽ जोऽ	रीऽऽ ऽ ऽ ऽ
२		०	

सा रीम	–प ध	
ऽ रति	ऽयाँ ड	

अंतरा

– ध म॑	प	ध सां नि सां	– रींसां सांनि सांनि
ऽ सं जा	को	आ जे का हे	ऽ भेऽ जोऽ मैऽ
३		×	२

ध नि	ध	प	
या ऽ	री	ऽ	
०			

– म॑म॑	–म॑ म॑	प ध म॑	प
ऽ रति	ऽयाँ तो	का री का	री
३		×	

निध धप	पम मग	गगरी रीसा नि़	सा सा
ऽऽ डऽ	रऽ घऽ	णेऽऽ ऽऽऽ	ऽ री
२		०	

– रीम	–प ध	
ऽ रति	ऽयाँ ड	
३		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालवती

इस (धुनउगम) राग में सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गंधार निखाद वर्ज।

जाति : औड़व–संपूर्ण।

वादी : रिखब।

संवादी : धैवत।

न्यास : मध्यम।

गान का समय : रात के आठ से बारह तक।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सारीम, पधसां | सांनिधपमगरी, सा ||

२) ध़सारीम, पधप | ग---, पधप | धसांनिध, निप | ग,
री
पधपमगरी | सारीमगरी गसा ||

रागात्मा :
री
ध़सारीरी, सारीमगरी ग--, सा ||

विशेष : आरोह करते समय 'पधपग, पधप' इस तरह गंधार वक्र होकर लगाया जाता है | इस स्वरविन्यास से मालवती में एक वैचित्र निर्माण होता है |

स्वरविस्तार :

ध़–सारीरी, सारी मपमम– गरी, सा--| सारीम– गरी--
सा–ध़–सारीरीसा | सा नि़ध़ध़, प़ध़सारीरी, सा | सारीम--, पधधप,
धपमगरी, सारी मपमम– गरी, ध़, सारी, गरी, सा | प़ध़ सारीम, गरी,
सा, गरी, सा--| रीमपधधप, मपधपमगरी, सा–गरी ---,
ध़सारीरी, सा | रीमपधधप, गपधपमगरी, ध़सारीरी, सारी मपमम–गरीरी
ध़सारीसा नि़ध़प़ध़, सारीरी, सा | रीमपधसां--, रींसां निधधप, धसां
निधधप, निधप, गपध धपमगरी–, सा, गरीसा | रीमपधसांरींरीं,
सां निधधप, धसांरींरीं, गंरींसां--, रींसांनिधध–प, धसां-- निधधप,
गपधधप, मग, रीरी, ध़सारीरी, सारी मपमम–गरी, सा | रीमपधसांरीं
मंगंरींरींसां, सांरींसां निधध, पधसांरींरींसां, निधध, प, धपमगरीरी,
सारीमपमम– गरीरी–सा। गरी, सां, धपमगरी, सा, निधपमगरी, सा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां--निधप, धपमगरी, सा, रीं -सां निध-प, निधपमगरी, सा, गरी, सा| सारीम पधसांरींमंगंरींसां, गंरींसांनिधध, पधसांनिध, पनिधप, गपधधपमगरी, धसारीरीसारी मपमम गरीरी-सा| सारी मपमम-गरीमपध सांरींसांसां-निधप, धपमग रीगरीरी-सा| री मपध धपम गरीरीसा ध-सा| गपधसांरींरीं सांनिधप, नि-धपमगरीरी, सा||

तानें :

[१] धसा रीमगरी, रीगरी सासाध, सारीसासा मगरीगसारी||

[२] धसा धसा रीम पध, धपमग गरीसासा, पमग गरीसासा||

[३] धसा रीम पध, धप मगरीसासा, धसारीम, रीमपध, धपमगरी सासा||

[४] धसा रीम, रीमपधधपप, गपग पधध पप मगरीसासा||

[५] रीसानिध सारीसासा रीमगरी गरीसारी मपधप पग पधधप मग रीसासा||

[६] गप धप मग रीसासा, रीमम मपप पधप मगरीसासा, निनिधपप गप पधप मगरीसासा||

[७] धधपप, गप पधधध पप मगरीसासा, रीमम मपप पधधध पप मगरीसासा, निनिधपपग, पधधध पप मगरीसासा||

[८] गपप पधप मगरीसासा|गपप पधप निनिधपप, गपप पधप मग रीसासा| गपप पधप निनिधपप, रींसांनिधपप, गपप पधप निनिधपप, गपप पधप मगरीसासा||

[९] सारीमपधसांनिधपप| गपधप निनिधपप गपधप धधपमग रीसासा|धसारीगपमगरीगसारी||

[१०] धसा रीम पध, धप मगरीसासा|रीम पध धप मगरीसासा|रीम पध धप निनिधप पग, पध धप मगरीसासा| सांरींगंरींसांनिध पप मगरीसासा||

[११] धसा रीमगरीसासा, रीरीसासा| धधपप गपधसां निधपप, गपधध पप, मगरी सासा||

[१२] रीरीसासा धधपप मगरीसासा|निनिधपपग, धधपपमगरीसासा। रीमम मपप पधध पप मगरीसासा||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मालवती, ताल एकताल, लय ठाय

चलारे चला जारे बदरा तू
जाय ससुरिया घर, छाय गरज रिह्योरे ॥
गरज सुण आवां, सांवरी हो धन म्हारी
की दो ऊके मन म्हारा, खेतापे नी लाग्यो रे ॥

स्थाई

										सा	
–,	–,	–,	सा	ध़ सा	– री	मपम,	–,	ग,	री –	ग – सा	– ध़ – सारी
ऽ,	ऽ,	ऽ,	च	ला रे	ऽ च	लाऽऽ,	ऽ,	जा,	ऽ ऽ	रेऽऽऽ	ऽ ऽ बद
४						×				०	

री –	सा –	सारीसासा,	–. नि़, –	ध़, –	नि़नि़, –	प़, –	–,	–,	–, ध़
रा ऽ	तू ऽ	जाऽऽऽ,	ऽ, ऽ, ऽ	ऽ, ऽ,	ऽऽ, ऽ	य, ऽ,	ऽ,	ऽ,	ऽ, स
२		०				३			

सा				सा							
प़ –,	ध़ –	सा, –	री, –	सा, –	सारीसा,	–,	–,	सा	ध़ –,	सारी
सुऽ,	रिऽ	या, ऽ	घ, ऽ	र, ऽ	छाऽऽ,	ऽ,	ऽ,	य	ऽऽ,	गर
४			×		०					

मपम,	–,	ग, –	री,	–, – री	ग, –	सा,	ध़	म,	ग	री, –	गग, –
जऽऽ,	ऽ,	ऽ, ऽ	ऽ,	ऽ, ऽ रि	ह्यो, ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ,	ऽ	ऽ, ऽ	ऽऽ, ऽ
२					०			३			

रीरी,	–,	सा,	सा	ध़ सा	– री		
रेऽ,	ऽ,	ऽ,	च	ला रे	ऽ च		
४							

अंतरा

–,	–,	–,	री	मप,	–,	ध,	सां	सां, –	सां, –	ध – सां –	–, रींमं –
ऽ,	ऽ,	ऽ,	ग	रज,	ऽ,	सु,	ण	आ, ऽ	वां, ऽ	सांऽवऽ	ऽ, रीहो ऽ
४								×		०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गं–रीं–	गं –सां –	–, गप, – ध,सां	नि, ध, निनि, प
धऽनऽ	म्हा ऽ री ऽ	ऽ,कीदो,ऽऊ, के	म,न, म्हा ऽ,रा
२		०	

		सा	
ग, गप, –ध,प	धध, –, म,ग	री, ग, री, सा	धसा – री
ऽ,खेता, ऽपे,नी	ऽऽ, ऽ,ला,ग्यो	रे, ऽ, ऽ, च	ला रे ऽच
३		४	

राग मालवती, ताल त्रिताल, लय मध्य

मंगल दिन आज, बना घर आयो
आनंद मन भराय, बावरी भई मैंतो ॥
बनरा मुख देखन, सहेल्या मिल आयो
गावन लगी गीत, बावरी भई मैंतो ॥

स्थाई

								प			री	री		ग	
ध़	सारी	–सा	री	मप	मम	म	प	ध	प	–म	ग	सा	ग	री	री
मं	गल	ऽदि	न	आऽ	ऽऽ	ज	ब	ना	ऽ	ऽघ	र	आ	ऽ	यो	आ
	३			×				२				०			

म	प	–ध	सां	नि	धनिध	पप	ग	प	धप	–ध	पध	पमम	ग	री	ध़
नं	द	ऽम	न	म	राऽऽ	ऽय	बा	व	रीऽ	ऽभ	ईऽ	मैंऽऽऽ	ऽ	तो	मं
३				×				२				०			

अंतरा

					सां					रीं					
री	म	प	–ध	प	ध	सां	सां	ध	सां	गंरीं	सांनि	ध	म	ध	प	री
ब	न	रा	ऽमु	ख	दे	ख	न	स	हे	ल्याऽ	ऽमि	ल	आ	ऽ	यो	गा
	३				×				२				०			

म	प	–ध	सां	नि	धनिध	प	ग	प	धप	–ध	पध	पमम	ग	री	ध़
व	न	ऽल	गी	गी	ऽऽऽ	त	बा	व	रीऽ	ऽभ	ईऽ	मैंऽऽऽ	ऽ	तो	मं
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मघवा

इस (धुन उगम) राग में मध्यम निखाद यह दोनो स्वर कोमल लगते हैं और अन्य सभी स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति : औड़व-संपूर्ण।

वादी : मध्यम।

संवादी : निखाद।

न्यास : रिखब, पंचम।

गान का समय रात के नौ से ग्यारह तक।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) सामगमनिधनिसां | सांनिधपमगरीसा ||

२) सामगमप, मनिधनिसां | सांनिधपमगरीसा ||

रागात्मा :

सामगमपम, मनिध, पमपम, गरी, सा ||

विशेष : इस राग का आरोह वक्र है। अवरोह सरल है। आरोह मे रिखब, पंचम वर्ज है। मध्यम वादी होनेसे और 'मनिधनिसां' यह स्वरविन्यास आनेसे प्रचलित 'बहार' राग का भास होना स्वाभाविक है। किन्तु बहार राग में दोनो निखाद और गंधार कोमल होने के कारण बहार राग मघवा से बहुत दूरी पर रह जाता है। इसे भी एक बहार प्रकृति का राग कह सकते है पर स्वतंत्र रूप है।

स्वरविस्तार :

साम–मपम–, मपम गरीरीसा | साम–म गरीसा, नि़सानि़धनि़–नि़ साम–म, मपम–म, निधप–, मपम––, गरीसा | साम––, गरी सा, रीसा नि़धनि़साम–म, मनि––, धपमगमपम–म, गरीसा | मनिध निसां–सां, सां–निधनि–नि, धपम––, गमनिधपम–म, धपम––, गमपम––, गरीसा | सामगम निधनिसां –––, मं––गंरींरीं––, सां–– निनि सांनिनि धप, मपमगम धप, म––म गरीसा | साम––, गरीसा, नि––निधपमपम––म, गमपम गरीरीसा | मनि धनि धपमगमनि धनिसां––, नि––धपम, निनिध निसांगं––रींसां नि–––, सां––नि धपम––, गरीसा | धनिसांनिसां गं––रींसां––, मं–मंगंरींसां––, निधनिसां–, निधपमनिध निधपमपम–म, गमपम गरीरी–सा | ध निधपम––, गमगरीसा –––, सामगम निधनिसांनिधप––, मपमगम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गरीसा | मनिधनिसांमं--मंगंरींसां निसांनिधपम–, गम--म, गरीसा |
सा सा म म
मं--गंरींसां, नि--धपम–, सां--निधपम, प---म गरीसा | म निधनिसांमं--मं गंरींसां निधनि--निधपमगम--म गरीसा | धपम--गरीसा,--, रींसांनि--- धपम---गरीसा–, पम---गरीसा–, सांनि---धपमपम--- गरीसा | सामगमपपम निधनिसांमंगंरींसां निधपम गरीसा |

तानें :

[१] मग मनिधनि सांनिधपमम गरीसासा, धपमम पमगरीसासा, साम गम पप मगरीसा |

[२] धनिसाम गम पपमगरीसा, मरीसासा ममगम पमगरीसासा, मग मपमम निपमम पमगरीसासा ||

[३] निपमम पमगरीसासा, ममगम पमगरीसासा, सांनिधपमम धपमम निपमम पमगरीसासा ||

[४] साम गम पम, मनिधनि सांनिधपमम, निपमम पमगरीसासा, गरीसासा निधनिसा, ममगमपम गमधनि सांनिनिसां ||

[५] सांनिधनिसांमं गंरींसांसां, रींसांसां सांनिनि निधध धपप पमम मगग, गरीरी सासा ||

[६] सांनिधपमम, पमग गमग रीसासा, पमग गमग रीसासा, मरीसासा निपमम, निनिध सांसांसां रींसांसां, सांनिनिपमम रीसासा ||

[७] सांमगम पमगरीसासा, ममगम पमगरीसासा, धपमम पमगरी सासा, सांनिधपमम पमगरीसासा, धनिसांमं गंरींसांसां निधपम गरीसासा ||

[८] धनिसांगंगं गंरींरींसांसां, सांनिनि निधधपप, पंमम मगग गरीरी सासा ||

[९] मरीसासा, मम गम पम निपमम, धनिसांनिधपमम, निपमम पमगरीसासा, सामगम पम गम धनिसां ||

[१०] मपप पधप मम पमग गमग रीसा, पमग गमग रीसा | सांनिध धनिध पम धपमम, पमग गमग रीसा ||

[११] साम गम पध धपमम, मनि धनि सांगं गंरीसांसां निधपम गरीसासा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[१२] मममगरीसासा, नि॒नि॒धपमम, सांसांनि॒धपम, नि॒नि॒धपमम, पपमग रीसा | सांनि॒धनि॒सांगं गंरीसांसां नि॒धपम गरीसासा ||

राग मघवा, ताल त्रिताल, लय मध्य

मोर लाई रे लाई, अंबुवा की ये
भोला के माथ चढावन ॥
जो था सो लाई पास मेरो योहै
लेहो रे बमनवा, भोला के रूप सजावन ॥

स्थाई

म	—म म प —	प ध — म —	— — गम गम	ग री — सा ग
मो	ऽ र ला ई ऽ	रे ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ला ऽ ई अं
	३	×	२	०
	री सा नि॒ ध॒	सा — — म	ग म — ध	— प — म
	बु वा की ऽ	ये ऽ ऽ भो	ला के ऽ मा	ऽ ऽ ऽ थ
	३	×	२	०
	— गग — मप	प — म —	ग — म —	ग री — सा म
	ऽ ऽऽ ऽ चऽ	ढा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	व ऽ न मो
	३	×	२	०

अंतरा

नि॒	प म नि॒ ध	धनि॒ सां सां ध	— नि॒ सां गं	रीं — सां सांरीं
जो	ऽ था सो ऽ	ला ऽ ऽ ई पा	ऽ स मे रो	यो ऽ है लेऽ
	३	×	२	०
	सांसां नि॒ ध प	म म — सा	ग म — ध	— पप — म
	होऽ रे ब म	न वा ऽ भो	ला के ऽ रू	ऽ ऽऽ ऽ प
	३	×	२	०
	— गग — मप	प — म —	ग — म —	ग री — सा म
	ऽ ऽऽ ऽ सऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	व ऽ न मो
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मघवा, ताल त्रिताल, लय मध्य और द्रुत

सावन झर आयो, चलोरी सखी खेलें
आंगन बिच आज, बीराजी बाँध्यो झूला ॥
झूला दे अरी वोरी, गावोरी सखी राग
डरी हो नहीं ऐसो, बीराजी बाँध्यो झूला ॥

स्थाई

			प												म
सां	नि	धप	धम	ग	म	–	म	म	नि	ध	–नि	सां	सां	–	सां	नि
सा	व	नऽ	ऽझ	र	आ	ऽ	यो	च	लो	री	ऽस	खी	खे	ऽ	लें	आं
	३				×				२				०			

प	म	गरी	सा	म	–	म	म	नि	ध	–नि	सां	सांनि	धप	मम	सां
ग	न	ऽवि	च	आ	ऽ	ज	बी	रा	जी	ऽबाँ	ध्यो	झू ऽ	ऽऽ	लाऽ	सा
३				×				२				०			

अंतरा

														गं			
निध	धप	म	–नि	ध	नि	सां	सां	ध	नि	सांमं	–गं	रीं	रीं	–सां	सां	रीं
झूऽ	लाऽ	दे	ऽअ	री	वो	ऽ	री	गा	वो	रीऽ	ऽस	खी	रा	ऽग	ड	ऽ
	३				×				२				०			

सांसां	निध	–प	म	प,प	म,म	म,	म	नि	ध	–नि	सां	सांनि	धप	मम	सां
रीऽ	होऽ	ऽन	हीं	ऐ,ऽ	ऽ,ऽ	सो,	बी	रा	जी	ऽबाँ	ध्यो	झू ऽ	ऽऽ	लाऽ	सा
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग लगनगंधार

इस (धुनउगम) राग में शुद्ध गंधार और कोमल गंधार के दोनो अंतर और निखाद कोमल के दोनो अंतर लगते हैं। मध्यम स्वर वर्ज है।

जाति : चतु-षाडव।

वादी : कोमल गंधार।

संवादी : निखाद।

न्यास : षड्ज, पंचम।

गान का समय : रात के आठ से ग्यारह तक।

आरोह-अवरोह-स्वरूप :

१) ध़सागपधसां | सांनि़ नि़ं नि़धनि़धप, ग़ग़ंग़, रीग़रीसा ||

२) ध़सागपधसां | सांनि़, नि़ं नि़धप, ग़, ग़ंग़रीसा ||

३) ध़साग़, रीग़री सागपनि़धनि़धपधसां | ग़ं, रींग़ं रींसांनि़ नि़धपग़, रीग़रीसा ||

रागात्मा :

ध़साग़, ग़ं-ग़-रीसा ||

साग, पधपग़, ग़ं-ग़-रीसा ||

विशेष : आरोह में रिखब निखाद वर्ज होकर गंधार शुद्ध लगता है। अवरोह में निखाद गंधार कोमल और धैवत रिखब शुद्ध लगते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है। लगन गंधार में कोमल गंधार के स्वरांतर और शुद्ध गंधार यह स्वरविन्यास महत्त्वपूर्ण हैं।

स्वरविस्तार :

ध़साग़--रीसा | ध़साध़नि़-नि़ं-नि़ध़प़ध़सा़ग़-ग़ं-ग़-रीसा | साग पगपग़-ग़-रीसा | ध़साग-पधपग़-ग़-रीसा | रीसाध़सा़नि़-नि़-ध़प़, ध़साग़-ग़ं-ग़-, रीग़रीसा | ध़सागपधपगपग़-, ग़ं-ग़-, रीसा | प़ ध़सागपनि़-नि़ं-नि़-धप, गपधनि़धप, धपग़-, ग़ं-ग़-रीग़रीसा-ध़सा | साग़-रीसा, ध़नि़-ध़प़, ध़सागपग़-, ग़ं-ग़-रीसा | गपनि़-धपग़-, रीसा, ध़नि़-ध़प़, ध़साग़-, ग़ं-ग़-रीग़रीसा | सागपधनि़-नि़ं-नि़-धपधसां---, सांनि़-नि़ं-नि़-धप, गपधपग़-ग़ं-ग़-रीसा | सागपधसां---, धसांरींसांग़ं--रींसांनि़-, धप, नि़धपग, पधपग़-, ग़ं-ग़-रीसा | ग़-रीसाग, पनि़-धपधसां--, सांनि़-नि़-धप, गपग़-,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग॒ं–ग॒–रीसा | ध़सा ग॒––रीग॒रीसा, गपनि॒––धनि॒धप, धसांग॒ं–रींग॒ंरीं सां, नि॒–धनि॒धपग–, पनि॒–धपग॒–ग॒ं–ग॒–रीसा | नि॒–धपधसां––, ग॒ं–ग॒ं–रींसां | पनि॒–धपग॒–ग॒–रीसा | ध़सागपधसांरींसांग॒ं–ग॒ं–रींसां, धनि॒धप, गपधपग॒–ग॒ं–ग॒–रीसा | ग॒–रीसा, नि॒–धप, ग॒ं–रींसां, धनि॒–धप, ग॒–रीग॒रीसा | ग॒रीसाध़सा, नि॒धपगप, धसांग॒ंरींसांधसां, नि॒धप गप, ग॒–रीसा, ग॒–ग॒ं–ग॒–रीग॒रीसा | ग॒रीसाध़सा, गपनि॒धपग॒प, धसांग॒ंरींसां, नि॒–नि॒धप, ग॒–ग॒रीसा || धसाग–––, ध़सा ग॒–ग॒ं–ग॒–रीसा ||

तानें :

[१] साग गप पधधध पग॒ग॒री रीग॒ं ग॒री रीसासा ||

[२] धध पप गप पधधध पग॒ग॒री ग॒ंग॒री रीसासा ||

[३] साग पध पग पधपग पग॒री ग॒रीसासा ||

[४] पधपप गपनि॒ध नि॒ं नि॒ध धपपग पग॒री ग॒रीसासा ||

[५] साग पधपग पधनि॒ध सांनि॒ध धप पग, पधपग पनि॒ धपग, पधपग पग॒री ग॒रीसासा ||

[६] ग॒रीसासा धपपग पग॒री ग॒रीसासा, नि॒धपप धपपग पग॒री ग॒री सासा, साग गप साग गप पधधध पग॒ग॒री ग॒ंग॒री रीसासा ||

[७] धधपप गपधसां ग॒ंरीसांसां, सांनि॒धप नि॒धपप धपपग पग॒ग॒री ग॒रीसासा ||

[८] पधनि॒धपप ग॒ंग॒रीसा, साग पधपग पधनि॒ध पप ग॒ंग॒रीसा, सागपं धपग पधसांनि॒सांनि॒ धप नि॒धपप गपधधपप ग॒ंग॒रीसा ||

[९] गंरींसांसां धसांसींरींसांसां नि॒धसांनि॒धप, धधपप गप धधपप ग॒ग॒री ग॒ंग॒रीसा ||

[१०] ग॒री सारीसासा गपधधपप नि॒धपधपप धसांरींरींसांसां | गंरींसांरीं सांसां धसां रींरींसांसां नि॒धसांनि॒धप, गपधधपप ग॒ंग॒री ग॒ंग॒रीसासा ||

[११] सागपधपग पधसांनि॒ धनि॒धपप नि॒धपधपग पग॒री ग॒रीसा ग॒रीसारीसासाध़ ||

[१२] सागपधपपग पधसांधसां, ग॒ंरीं सांरींसांसां धसांधसां, रींसांसां नि॒ध सांनि॒धपप, रींसांसां नि॒ध सांनि॒धप गप गधधध पग॒ंग॒री ग॒ंग॒रीसा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग लगनगंधार, ताल एकताल, लय विलंबित

सुध ना रही मोहे, अरी वो जब देखा तोहे
सूझे ना कछु तबते मुख आँखन में ॥
मेहर मोपे राखो अरज यही तोहे
याद जब जब उठत मन में ॥

स्थाई

– ---ध़ | गंग री–, ग री सा– | ग– ग–, ध़ सा | ग री गं – ग – रीग |
ऽ ऽऽऽसु | धना ऽऽ, ऽ र हीऽ | मोऽ हेऽ, अरी | वोऽऽऽऽ ऽऽऽ |
३ ४ × ०

रीसा ध़ – साध़ | साग –
ज ब ऽ – ऽ दे | खाऽ ऽ |
२ ०

पग प, –, पग, गरी | गंग री ग री सा | सा रीध़ – सा | ग– –, ग प |
वोऽऽ, ऽ, हेऽ, ऽऽ | ऽऽ ऽऽ सू झे | नाऽ ऽक | छुऽ ऽतब |
३ ४ × ०

प ग सा
नि –, ध नि नि–ध प | ग री –गंग– | रीग री – ध़ सा |
तेऽऽ, ऽऽ ऽऽमुख | आंऽ ऽखनऽ | ऽऽ मेंऽऽ सु |
२ ० ३

अंतरा

– ---सा | गप –धसांध | सां सां–, प ध | सां सांध –सांरीं– |
ऽ ऽऽऽमे | ह र ऽमोपेऽ | रा खोऽ, अर | जऽ ऽयहीऽ |
३ ४ × ०

प सा
रीं–सांध –धगंगं | रीं सां निध पग ध– | पग री, गंग री–ध, सा |
तोऽऽहे ऽयाऽद | जब जब ऽउठऽ | तऽऽ, मनमें ऽऽ, सु |
२ ० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग लगनगंधार, ताल त्रिताल, लय द्रुत

बाजे ले मोरा झांझरवा
आऊं मैं कैसे पास पियारे ॥
बैरन भई ये पायल मोरा
कछु ना सुचत मन में, पियारे ॥

स्थाई

ध़	ग॑	–	ग॒	–	रीग॒री	सा	–	ग	–	–	–	–	प	धनि॒ध	प
बा	जे	ऽ	ले	ऽ	मोऽऽ	रा	ऽ	झां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झ	रऽऽ	वा
०				३				×				२			

								प							
सा	ग	–	प	–	प,प	ग	प	ध	–	–	प,प	ग	प	ग॒	री
आ	ऊं	ऽ	मैं	ऽ	कै,ऽ	ऽ	से	पा	ऽ	ऽ	म,ऽ	ऽ	पि	या	रे
०				३				×				२			

अंतरा

								सां							
सा	ग	–	प,प	ग	प	ध	प	सां	–	ध	–ध	सां	ध	सां	–
बै	र	ऽ	न,ऽ	ऽ	भ	ई	ये	पा	ऽ	य	ऽल	ऽ	मो	रा	ऽ
०				३				×				२			

ध	ग॑	–	ग॑	रीं	सां	–	नि॒	ध	प	ग	ग	–	प	ग॒	री
क	छु	ऽ	ना	सु	च	ऽ	त	म	न	ऽ	में	ऽ	पि	या	रे
०				३				×				२			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग राही

इस (धुनउगम) राग में दोनो निखाद, अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति : औड़व–संपूर्ण।

वादी : षड्ज।

संवादी : पंचम।

न्यास : रिखब, मध्यम, धैवत।

गान का समय : रात्रि।

आरोह-अवरोह स्वरूप :

१) सानि़ सारीम, पम, पधसां | सांनिध, पम, पधप, मगरी, सानि़ सारीसा ||

२) सानि़ सारीं मगरी मपम, पधसां | सांनिधपम, पधनिधप, मगरी, सानि़---, सारीगरीसा ||

३) सानि़सारीसा, रीमगरी, मप, धपम, पधप, धसांनिध, पमपधप, मगरी, सानि़, सारीसा---||

रागात्मा :

सानि़---, सारीम---, गरी---, सानि़---, सारीसा ||

विशेष : राहीमें षड्ज के आधार से कोमल निखाद वक्र होकर लगना चाहिये। यह स्वरप्रधान, विस्तारप्रिय राग है।

स्वरविस्तार :

सानि़--सारी–सा | सारीसानि़–सारीगरी–सारीसानि़, सारीसा-- | सारीमगरी, ग–रीसानि़--, सारीसा-- | रीम--, पधपम---, पधपमगरी---, सानि़--सारीग--री--सा-- | सा–नि़धप़---, धसा--री–सा, री–सानि़--सारी--, ग–री–सा-- | मगरीसानि़ ---सा-- | मपम--, गरी--सानि़–सा-- | पम---गरी-- सानि़सारीसा | रीमपधपम---, पधपमगरी–सानि़--सारीसा---| पमपधनी–धपम--, पधपमगरी--, सानि़--सारीग–री–सा– | प–मपधसां–निधपम---, पधनि--ध–पम--, पधपमगरी-- सानि़---सारीम---, गरीसानि़--सारीसा-- | पधसां–रींसांनि़ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पम---, पधपमगरी---सा़नि़सा-- | पधसां-रींसांनि़--सांरींगं रींसां, रींसांनिधपम---, पधपम--, गरी--सा़नि़-- सारी-सा-- | सांरीं-सांनि़-, सांनिध, पधपम--प--मगरी, सारी-सा़नि़ -सा | पम--पधपमगरीसा-सांनि़-सारींसांनिध पम--, पध-पम गरीसा़नि़--सारी-सा- |

तानें :

[१] रीमपधपमग रीगरी रीगरी सा़नि़ ||

[२] गगरीसा रीरीसा़नि़, ममगरी गगरीसा रीरीसा़नि़, निनिधप धध पम, पधधप धधपम, पधधपमग रीगरीरी सा़नि़ ||

[३] गरीरी रीसासा सा़नि़ मगग गरीरी रीसासा सा़नि़ पमम मगग गरीरी रीसासा सा़नि़, पमगरीसा़नि़नि़ ||

[४] रीमम मपप पधप पधप मग रीगरी रीगरी सा़नि़ ||

[५] गगरीसा पमगरी, धधपम निनिधप, धधपम पधधपमग रीगरीरी सा़नि़ ||

[६] सांनिधप धधपम, निनिधप धधपम, पधधप मग रीगगरी सा़नि़सा ||

[७] धधपम पम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़सा, रीमम मपप पधपमग रीगरीरी सा़नि़सा, निनिधप धधपम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़ ||

[८] पमगरीसा़नि़ सारीरीसा, धपमगरीसा सा़नि़ सारीरीसा, निधपम धपमगरीसा सा़नि़ सारीरीसा, सांनिधप निधपम धपमगरीसा, पमग रीसा़नि़ सारीरीसा ||

[९] सारीरी सा़नि़ सारीगगरीरी सारीरीसा़नि़ सारीरीरीसा, रीमपधप पम मग गरी रीसा सा़नि़नि़- ||

[१०] गग गरीसा़नि़सा, रीमपध धपमग गरीसा़नि़सा, निनिधप धध पम पधधप मग गरीसा़नि़सा, रीमपधप पम मग गरी रीसा सा़नि़नि़- ||

[११] रीगरीरी सा़नि़सा, धधपम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़सा, निनि धप धधपम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़सा, सां-नि निधध पम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़सा ||

[१२] धधपम पमपधसां-, सांनिधप धधपम पम पधधप मग रीगरीरी सा़नि़सा- ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग राही, ताल त्रिताल, लय मध्य

आजारे कंथा, छांड परदेसा
दिखा दे सुरत तोरा, बरिहा बरस भयो ॥
आज घर सूना, डरावन लागै
अब ना सहूं मैं तो, बरिहा बरस भयो ॥

स्थाई

				ग										ग	
–	नि़	–सा	री	री	–	सा	–	–	सा	सारी	म	पम	गम	री	सा
ऽ	आ	ऽजा	रे	कं	ऽ	था	ऽ	ऽ	छां	डप	र	देऽ	ऽऽ	सा	ऽ
३				×				२				०			

				ग										ग	
री	नि़	–सा	री	री	–	सा	–	–	सा	सारी	म	पम	गम	री	सा
ऽ	आ	ऽजा	रे	कं	ऽ	था	ऽ	ऽ	छां	डप	र	देऽ	ऽऽ	सा	ऽ
३				×				२				०			

				म	प		प	प							
–	सारी	–म	–म	प	ध	मपम	ध	म	मध	–प	–ध	म	ग	री	सा
ऽ	दिखा	ऽदे	ऽसु	र	त	तोऽऽ	रा	–	बरि	ऽहा	ऽब	र	स	म	यो
३				×				२				०			

री	री	नि़	–सा	री
ऽ	ऽ	आ	ऽजा	रे
३				

अंतरा

												गं			
–	धम	–प	ध	सां	–	सां	–	–	निनि	–सां	रीं	रीं	–	सां	–
ऽ	आज	ऽघ	र	सू	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ड	रा	ऽव	न	ला	ऽ	गै	ऽ
३				×				२					०			

				प	प	म									
–	रींसां	–नि	धप	ध	म	प	म	–	मध	–प	–ध	म	ग	री	सा
ऽ	अब	ऽना	ऽस	हूं	ऽ	मैं	तो	ऽ	बरि	ऽहा	ऽब	र	स	म	यो
३				×				२				०			

रीरी		नि़	–सा	री
ऽ	ऽ	आ	ऽजा	रे
३				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अहिमोहिनी

इस (धुनउगम) राग में दोनो गंधार, दोनो धैवत लगते हैं।

जाति : संपूर्ण–संपूर्ण।

वादी : मध्यम।

संवादी : निखाद।

न्यास : षड्ज।

गान का समय : रात के दस से बारह बजे तक।

आरोह-अवरोह स्वरूप :

१) सारीगमपधनिसां | सांनिधपमगरीसा |

२) सारीगमपध, पमपधनिसांरींसांनि, धनिधपध–म, पध–प–म,
प
गमग रीग––, सा ||
री

रागात्मा :

सा, रीगम, पध, पम, गरीग, सा |
री

विशेष : कोमल गंधार और कोमल धैवत एक खास तरीके से कुछ ऊंचे प्रतीत होते हैं। आरोह में निखाद कोमल और अन्य सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। अवरोह में दोनो धैवत और अन्य सभी स्वर कोमल लगते हैं। आरोह सीधा होकर अवरोह वक्र है। अहिमोहिनी में रीगम, पध, पम, गरीग, सा और पधनि, धप, धम, गरीग, सा, यह स्वरविन्यास महत्वपूर्ण है।
री
प री

स्वरविस्तार :

सा, रीगम––, गरीग––, रीसा | सा, रीगम––, पध, प, म––, गरीग–– रीसा––| सारीसा–, रीगम––, पधनि––, धप, धपम––, पध, प, म––, रीगमपम––, गम––, गरीग–, रीसा | धपम––, पधनि––, धप–, ध –पम––, पध–, प, म–, गरीग–– रीसा | सा, रीगमपध––, पम––, पधनि––, धनिध पध––पम––, |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध, पम--, पध-पम, गम, गरीग--रीसा | मपधनि, सांरींसां | नि---,
धनिध, पध--, पम | पध-प, म--, गरीग--रीसा | ग--रीसा,
म---, ध--पम-- | पधनि---, धपध, म, म-, गरीग, सा |
म---गरीग-- सा, नि--धपध-- म---, पध--प, म---,
गरीग ---सा | ग---रीसा, रीग म--, ध-- पम, पधनि--,
सांरीं -सां-- | नि-धप, ध, म--, पध, प, म--, गरीग- सा |
मपधनिधनि सांरीं-- सां-- नि-धप, ध म---, पधपम--,
गरीग--- सा |

तानें :

[१] सारी गम पध पम गम, गरी गरी सा ||

[२] पम गरी, गम पध पम गम, गरी गरीसा ||

[३] सारी गम पधनिधप धपम, पमगरी, गमपध धपमगम, गरीगरी, सा ||

[४] सारी गम पध धपमगम, निधपध पम पम गरी, गमपध, धपम गम, गरी गरीसा ||

[५] मपधनिसांरींरीं सांनि, सांसांनिध निनिधप धधपम, पमगरी गम पधधपम, पपमग ममगरी गगरीसा ||

[६] सारीगम पमगरी गमपध धपमगम, पधनिनिधपधधपम, पप मम पमगरी गमपध धपमगम गरीगरीसा ||

[७] सारीगरी रीगमग गमपम मपधधप पमम--, गरीग--सा ||

[८] गमपम गरी गमपधनि-- धनिध पध-- म--, पमगरी
गरी गमपध--प-म-, गमगरीग--सा ||

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[९] धधपम पमपधनि॒सां नि॒सां, नि॒सां रींरीं सांसां नि॒नि॒ध॒ध॒पपमम, पमगरी गरी गमपध धपमगम ग॒रीग॒रीसा ||

[१०] सासा रीग मप धधपपमम, पमगरीगरी गमपधपपमम, ग॒री ग॒रीसा ||

[११] मपधनि॒ सांरीं सांसांनि॒नि॒ध॒प ध॒पपमम, पमगरीगरी गमपधप पमम ग॒रीग॒रीसा ||

[१२] सारीगमपधनि॒---ध॒नि॒ध॒प(प)ध॒-- म--, मपधनि॒सां--
नि॒--ध॒नि॒ध॒प(प)ध॒-- म--, मपधनि॒ सांरीं--सां --नि॒--
ध॒नि॒ध॒प(प)ध॒--म--, पमगरीगरीगमपध---प--म--,
ग॒मग॒ रीग॒(री)--सा ||

राग अहिमोहिनी, ताल त्रिताल, लय मध्य

अंखिया नी फेरो सैयाँ
मारूगी थारी ऊबी अरज करीहों ॥
निठुर जिन बनो, फेरीलो मुख अब
मारूणी थारी ऊबी अरज करी हों ॥

स्थाई

-	-	-	सा	सा	सारी	गम	ग	म	-	पध	---
ऽ	ऽ	ऽ	अं	खि	याऽ	ऽऽ	नी	फे	ऽ	रोऽऽऽ	ऽ
०				३				×			

प	-	म	ग॒	रीग॒	-	(री)सा	सा	री	ग	-म	प
ऽ	ऽ	ऽ	सै	याँऽ	ऽ	ऽ	मा	रू	णी	ऽथा	री
				०				३			

ध	निध	नि	ध॒	प	ध॒	-म	प	म	-	ग॒रीग॒-	(री)सा
ऊ	बीऽ	ऽ	अ	र	ज	ऽक	री	हों	ऽ	ऽऽऽऽ	अं
×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

–	–	–	म	प	ध	–नि	सां	सां	सां	–	रीं	सां	नि	–ध	प
ऽ	ऽ	ऽ	नि	ठु	र	ऽजि	न	ब	नो	ऽ	फे	री	लो	ऽमु	ख
०				३				×				२			

प												प			
ध	–	म	सा	री	ग	–म	प	ध	निध	नि	ध	प	ध	–म	प
अ	ऽ	ब	मा	रू	णी	ऽथा	री	ऊ	बीऽ	ऽ	अ	र	ज	ऽक	री
०				३				×				२			

			री	
म	–	गरीग–	सा	
हों	ऽ	ऽऽऽऽ	अं	
०				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम
भरतनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi